मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति ५

जुलाभी १९६

प्रकाशकका निवेदन

राष्ट्रपिता गांधीजीने अपने संपर्कमें आनेवाले असंख्य लोगोंको असंख्य पत्र विविध विषयों पर लिखे हैं। व्यक्ति समाज और राष्ट्रके निर्माणमें अुनका बहुत बड़ा महत्त्व है। अिस महत्त्वको ध्यानमें रखकर ही नवजीवन ट्रस्टने गांधीजीके पत्रोंके प्रकाशनका काम हाथमें लिया है। अभी तक हम बापूके पत्र – १ आश्रमकी बहनोंको बापूके पत्र – २ सरदार वल्लभभाईके नाम बापूके पत्र – ३ कुसुमबहन देसाईके नाम तथा बापूके पत्र मीराके नाम — शीर्षकसे गांधीजीके चार पत्र-संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक अुनके पत्र-संग्रहकी पांचवीं पुस्तक है। भविष्यमें हम जल्दी ही बापूके पत्र – ५ कु प्रेमाबहन कंटकके नाम पुस्तक प्रकाशित करेंगे। अिसका गांधीजीके पत्र-संग्रहमें अपना अेक विशिष्ट स्थान है।

श्री मणिबहनके नाम लिखे गये अिन पत्रोंमें हम आदिसे अन्त तक अेक वात्सल्यपूर्ण पिताका हृदय धड़कता हुआ अनुभव कर सकते हैं। श्री मणिबहनने छोटी अुमरमें माताका आश्रय खो दिया था। और कुछ सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक मर्यादाओंके कारण बहुत बड़ी अुमर तक वे पिताके प्रेमका भी अनुभव नहीं कर सकी थी। अिन परिस्थितियोंमें पली हुई श्री मणिबहनको गांधीजीने अपनी गोदमें लेकर पिता और माता दोनोंका स्थान संभाला और अुस कमीको पूरा किया तथा अुनके जीवन-निर्माणका काम अपने हाथमें लेकर खूब सावधानीसे अिस तरह अुन्हें तैयार किया कि अुनकी सारी शक्तियां राष्ट्रसेवाके कार्यमें प्रयुक्त हो सकें। यह निर्माण अुन्होंने किस प्रकार किया अिसकी झांकी अिन पत्रोंमें बहुत अच्छी तरह देखनेको मिलती है। गांधीजीके जीवनका यह पहलू कितना

अधिक पुष्ट रहा होगा। क्योंकि अिस पहलूका यथार्थ दर्शन तो अैसे निजी पत्रोंमें ही होता है। अिस दृष्टिसे यह पत्र-संग्रह अेक कीमती दस्तावेज है।

जिनके पास गांधीजीके पत्र हों अैसे दूसरे भाभी-बहनोंको भी यदि अिससे अपने पासके पत्र हमारे पास भेजनेकी प्रेरणा मिले तो यह माला अधिक समृद्ध होगी। मूल पत्र सुरक्षित रूपमें वापस भेज दिये जायंगे।

आशा है अिस पत्र-संग्रहका भी अिससे पहलेकी पुस्तकोंकी तरह ही स्वागत किया जायगा।

१५–७–१

अिन पत्रोंके सम्बन्धमें

पू० बापूजीका अवसान होने पर नवजीवन ट्रस्टने सोचा कि अुनका साहित्य अुनके लिखे हुअे पत्र आदि प्रकाशित करके लोगोंमें अुनके विचारोंका भरसक प्रचार किया जाय और लोगोंमें अिसके लिअे जो भूख है अुसका समाधान किया जाय। अिस विचारके अनुसार नवजीवन ट्रस्टने पू० बापूजीके पत्रोंकी मालामें तीन संग्रह प्रकाशित किये हैं। यह चौथा संग्रह है। बापूजी पत्रों द्वारा मनुष्योंको किस प्रकार बनाते थे और अुससे जो काम लेना तय किया हो अुस कामके लिअे अुसे कैसे तैयार करते थे यह संग्रह अुसका अेक नमूना है। ये पत्र जैसे मेरे जीवनके निर्माणमें मेरे लिअे अुपयोगी सिद्ध हुअे वैसे ही पाठकोंके लिअे भी होंगे यह समझकर अिन्हें प्रकाशित करनेकी मुझे प्रेरणा हुअी है। अिससे अनेक विषयोंके सम्बन्धमें पाठकोंको पू० बापूजीके विचार जाननेको मिलेंगे और कुछ न कुछ सीखनेको भी मिलेगा अैसा मेरा खयाल है।

सन् १९२ में मैं मैट्रिककी कक्षामें अध्ययन कर रही थी। परीक्षामें छह मास बाकी रहे थे। अितनेमें पू० बापूजीने विद्यार्थियोंसे स्कूल-कॉलेजोंका बहिष्कार करनेकी पुकार की। अिस पुकारके अनुसार सितम्बर १९२ में मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। सन् १९२१ के आरम्भसे अिस पत्र-संग्रहकी शुरुआत होती है। मेरे छात्र-जीवनके अन्तके साथ ही शुरू हुआ यह पत्र-व्यवहार ठेठ बापूजीके जीवनका अेकाअेक अन्त हुआ अुसके थोड़े दिन पहले तक चला। जनवरी १९१ से सितम्बर १९४५ में जब पू० बापू दिल्ली रहने गये तब तक हमारा कोअी स्थायी घर नहीं था। फिर भी ये सब पत्र सुरक्षित रहे यह अीश्वरकी कृपा ही कही जायगी।

मुझे बनानेमें पू बापूजीने कितना परिश्रम किया है! मुझ पर अुन्होंने कितना प्रेम बरसाया है! आज मुझमें जो भी अच्छे गुण या आदतें हैं वे सब मेरे जीवनके दो निर्माताओं — पू बापूजी और पू बा — द्वारा मेरे लिअे किये गये परिश्रमके कारण हैं। अुनके वात्सल्य-भरे परिश्रमके बावजूद मुझमें कोअी कमियां अथवा दोष रहे हों तो वे मेरी अशक्तिके कारण हैं। मेरा यह दुर्भाग्य है कि दो दो महापुरुषोंके प्रयत्नोंके बावजूद मैं अपनी कमजोरीके कारण अपने दोष दूर न कर सकी।

सितम्बर १९४५ में डॉक्टर लोग पू बापूको अिलाजके लिअे आग्रह करके बम्बअी ले गये थे। पू बापू वहां बिड़ला-भवनमें ठहरे थे। नरहरिभाअी वहां अुनकी कुशल पूछने आये थे। अुस समय अिन पत्रोंकी नकलका संग्रह मैंने अुनके हाथमें रखा। अुन्होंने अिन सब पत्रोंको पढ़ लिया और सुझाया कि पत्रोंमें जहां जरूरी हो वहां नीचे टिप्पणियां जोड़ दी जायं। मेरे लिअे यह नया ही काम था और मुझे शंका थी कि मैं अुसे कर सकती या नहीं। परन्तु अुन्होंने कहा कि अेकसाथ नहीं तो समय मिलने पर थोड़ा थोड़ा लिखते रहना। अुसके बाद अन्तमें मैं अेक बार देख लूंगा।

१९४२ तक लिखने और पू॰ बापूके नाम लिखे गये पू॰ बापूजीके पत्रोंका संग्रह तथा मेरे नाम लिखे गये पत्रोंका यह संग्रह देख लेनेके लिअे मैं श्री नरहरिभाअीकी ऋणी हूं। अुनके आग्रह और प्रोत्साहनके कारण ही मैं अिन दो संग्रहोंके लिअे परिश्रम करनेका साहस कर सकी हूं।

भाअी मूलचन्द भट्टने अवकाश निकालकर भक्तिपूर्वक सभी पत्रोंकी सावधानीसे नकलें कर दीं, अिसके लिअे मैं अुनकी भी आभारी हूं।

मेरे भाअी चि॰ डाह्याभाअी तथा अुनके पुत्रके नाम लिखे गये पत्रोंका समावेश भी अिस संग्रहमें ही कर लिया गया है।

अन्तमें पाठकोंको समझनेमें परेशानी न हो अिसके लिअे अेक स्पष्टता कर दूं। हम महात्माजीको बापूजी और अपने पिताको बापू कहते थे। अिसलिअे अिस संग्रहमें जहां बापूजी हो वहां महात्माजी और जहां बापू हो वहां हमारे पिताजीका अुल्लेख है अैसा समझा जाय।*

नअी दिल्ली
२०-११-५७

मणिबहन पटेल

* गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावना।

बापूके पत्र — ४

मणिबहन पटेलके नाम

[१२-२-२१ से ११-१-४८]

१

दिल्ली
१२-२-२१

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे मिला। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुम भाभी-बहन आध घंटा रोज कातो तो उससे स्वास्थ्य नहीं बिगड़ेगा। तुममें उत्साह हो तो तुम जरूर चार घंटे रोज कातो। महावरेसे अच्छा कातना आ जायगा।

अभी भी दास[1] यहां नहीं आ सकते। मुझे पत्र लिखा करो। आजकल क्या पढ़ती हो यह बताना।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च अभी तो मुझे बहुत भटकना पड़ता है। आज दिल्लीमें हूं। अभी पंजाब जाना है बादमें सम्भवतः यहांसे बेजवाड़ा। जिसलिये पता नहीं अहमदाबाद कब आना होगा। बापूसे कहना कि कांग्रेसकी[2] तैयारी करे।

चि॰ मणिबहन
ठि॰ भाई वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
भद्र अहमदाबाद

---

१ स्व॰ देशबन्धु दास।

२ अहमदाबादमें होनेवाले कांग्रेसके ३६ वें अधिवेशनकी।

२

बेजवाड़ा
सोमवार
(४-४-२१)

चि॰ मणि,

अिस समय सुबहके पांच बजे हैं। मछलीपट्टम ले जानेवाली मोटरका अिंतजार कर रहा हूं।

रातको अेक बजे मैं अेलोरसे यहां आया। ये तीनों जगहें नकशेमें देख लेना।

आते ही तुम्हारा पत्र मिला और मैंने पढ़ा।

डॉक्टर कानूगाने अच्छा काम किया है। डाह्याभाओ पिकेटिंग करने जाता है, यह अच्छा है। अुसे मेरी बधाओ पहुंचा देना।

चार घंटे कातनेका नियम रखा यह ठीक है। सूत मजबूत और अेकसा निकालनेका प्रयत्न करना। यह भी देखना कि रोज कितना निकलता है।

मेरा तो विश्वास दिन-दिन बढ़ता जा रहा है कि स्वराज्य सूत पर निर्भर है।

मैं काममें व्यस्त रहा और भटकता रहा अिसलिअे मैंने पेंसिलसे लिखा। परन्तु तुम्हें तो स्याही और देशी कलमसे ही लिखनेका अभ्यास रखना चाहिये।

---

१ स्व॰ बलवन्तराय कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर। पू॰ बापूने १९१ में अपना अहमदाबादवाला मकान छोड़ दिया अुसके बाद जब भी वे अहमदाबाद आते तब डॉ॰ कानूगाके यहां ठहरते थे। खास-बाजारमें शराबखाने पर पिकेटिंग करते हुअे पत्थर लगनेसे डॉ॰ कानूगाकी आंखमें चोट पहुंची थी।

२ मेरे भाओ।

बापूकी सेवा करना और तुम भाभी-मंडलके बारेमें अपनी चिन्ताको कम करना।

गुजराती दिन-प्रतिदिन सुधारना। ध्यानपूर्वक नवजीवन पढ़नेवाले अपनी गुजराती अच्छी कर सकते हैं।

मैं मंगलवार १२ तारीखको अहमदाबाद पहुँचूँगा। बापूको खबर देना और कहना कि मुझे आशा है कि इस बीच उन्होंने खूब रुपया[1] जमाकर लिया होगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन
ठि॰ बैरिस्टर वल्लभभाई
भद्र, अहमदाबाद

३

बम्बई
गुरुवार
(१९-५-'२१)

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने काका (विट्ठलभाई)[2]को तुमसे पहले ही कह दिया है कि हमें मिलना है। वे पूना जा रहे हैं। हम जरूर ही मिलेंगे। मिलनेके बाद जो होगा वह लिखूँगा। बम्बईकी क्या मरजी[3] तुमने मानी है, वह मुझे बताना। तुम निश्चिन्त रहना। मैं काकासे पूरी बातें करनेवाला हूँ।

---

१ तिलक स्वराज्य कोषका।

२ स्व॰ माननीय विट्ठलभाई पटेल। पू॰ बापूके बड़े भाई।

३ उस समय बम्बईमें विदेशी कपड़ेकी बहुत बड़ी होली पू॰ बापूजीके हाथों की गयी थी। उस सम्बन्धमें यह अफवाह सुनी गयी थी कि कपड़ेका ढेर बहुत बड़ा बतानेके लिये नीचे [illegible] खोखे रख दिये गये थे।

तुम दोनों भाअी-बहन सेवाकार्यमें पूरी तरह लग जाना। और तुम्हारे पूरी तरह लग जानेका अर्थ यह है कि कातने और पीजनेका काम यहां तक जान लो कि अुसमें तुम्हें कोअी मात न दे सके। और सब काम धार्मिक है। यह काम हमेशाका है अैसा मानना। हमारा सारा बल अिसीमें से आयेगा।

भाअी महादेव[1] कल बम्बअी आ गये हैं। कहा जायगा कि अुन्होंने चंदा खूब किया।

यहां बरसात अच्छी हो रही है।

कल लगभग ५५ रुपये घाटकोपरसे मिले हैं।

मैं पत्र लिखूं या न लिखूं परन्तु तुम तो लिखती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन
ठि॰ श्री वल्लभभाअी पटेल
मु॰ अहमदाबाद

४

सोमवार
(११-७-२१)

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। कपड़े जलानेका हेतु तो यह है कि विदेशी कपड़ोंकी तरफ वैराग्यवृत्ति अधिक पैदा की जाय। ये कपड़े गरीबोंको दिये जायं अिस विचारमें भी मोह है। लाख-दो लाखके कपड़े गरीबोंको गये तो क्या और न गये तो क्या? अितने दिन तक ये कपड़े मंगवाकर हमने हिन्दुस्तानको बड़ा नुकसान पहुंचाया है। मैं मानता हूं कि अब ये कपड़े गरीबोंको देनेसे भी लाभ नहीं होगा। ये कपड़े विदेश भेज देनेमें कुछ रहस्य है। फिर भी मैं सबकी राय लेता रहता हूं। अुसमें से जो सबको ठीक लगेगी वह मान लेंगे। अब भी शंका रहती हो तो पूछना।

---

१ स्व॰ महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी बापूजीके मंत्री। १५ अगस्त १९४२ को आगाखां महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द होनेसे अेकाअेक अुनका अवसान हुआ।

डाह्याभाईकी बानर-सेना अच्छा काम कर रही दीखती है। अेक बात वह याद रखे। सार्वजनिक विनयपूर्वक अपनी बात कहे। जरा भी मजाक या फजीति (हंसी ?) का भाव न रखे। शराब पीनेवालों पर दया रखी जाय।

काकासाहब बढ़िया चिराग हैं अिसमें तो शक ही नहीं। तुम सबको वे पसन्द आये अिससे मैं खुश हुआ हूं।

काका (विट्ठलभाई)से मुलाकात हुआी है काफी बातचीत हुआी। अुन्होंने अपने जिला बोर्डमें ठीक प्रस्ताव पास करवाया है। मेरे पास आने-जानेवाले लोग कहते हैं कि काकाकी अभी चरखे पर श्रद्धा नहीं है। अितना ही नहीं मजलिसोंमें चरखेके प्रति अरुचि प्रकट करते रहते हैं। फिर भी अुनसे मिलूंगा तब फिर बात करूंगा। मुझ पर पिछली मुलाकातका यह असर पड़ा था कि अुनके मनका बहुत कुछ समाधान हो गया है।

मोहनदासके आशीर्वाद

मणिबहन
ठि० श्री वल्लभभाओ झवेरभाओ पटेल
भद्र अहमदाबाद

५

बम्बअी
बुधवार
(१५-३-२१)

चि० मणि

तुम्हारे पत्रका लम्बा अुत्तर देनेको जी करता है। परन्तु अुतना समय नहीं। अब रातके ११ बजे हैं। परन्तु मतलबका जवाब दे दूं। जो चरखा व्यापारके लिअे रखा गया हो अुसे चलाने या दे देनेका सवाल ही नहीं है।

---

१ श्री दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर आचार्यश्री। आजकल राज्यसभाके मनोनीत सदस्य।

पत्रिकायें[1] तो मैं अभी पढ़ भी नहीं सका। शराबवालोंकी मार हम जैसे जैसे सहन करेंगे वैसे वैसे हमारा काम बढ़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

बहन मणि
ठि. श्री वल्लभभाभी झवेरभाभी पटेल
मु. अहमदाबाद

६

शिलांग
आसाम
(२५-८-२१)

चि. मणि

तुम्हारा पिछला पत्र मैं अपने साथ लिये घूमता रहा हूं। काका (विट्ठलभाभी) को समझाना बड़ा मुश्किल काम मानता हूं। अनकी अुम्रमें और अेक प्रकारकी लड़ाअीयों[2] फतह पानेकी मान्यता बन जानेके बाद अब अुन्हें नये प्रकारको ग्रहण करना कठिन मालूम होता है। हम धीरज रखकर अुनका मतभेद सहन करके अपने रास्ते चलते रहें, अिसके सिवा और कोअी अुपाय मुझे दिखाअी नहीं पड़ता।

वहां बहिष्कारका और अुत्पत्ति[3]का काम जोरसे हो रहा होगा।

आसाम अेक नया ही देश लगता है। यात्राका जानने लायक भाग नवजीवन में दे चुका हूं। अिसलिअे यहां नहीं लिख रहा हूं। भाभी अिन्दुलाल[4] के साथ मैंने बात कर ली है। कुमुदबहन[5] के साथ मैं भी भर

---

१ शराबबन्दी आन्दोलन सम्बन्धी पत्रिकायें।

२ विधान-सभायें। अुस समय श्री विट्ठलभाभी बम्बअी विधान सभाके सदस्य थे।

३ खादी-अुत्पत्ति।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रान्तीय परिषदकी स्थापना हुअी अुस समय अुसके मंत्री थे। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

५ स्व. कुमुदबहन श्री अिन्दुलाल याज्ञिककी पत्नी।

कर बातें करना चाहता हूं और अुन्हें शान्ति देनेका प्रयत्न करना चाहता हूं। अिसका आधार अुनकी अिच्छा और मेरी फुरसत पर रहेगा। मैं अुधर अक्तूबर माससे पहले आ सकूंगा असा नहीं लगता। तुम दोनों भाओी-बहन बापूकी खूब मदद करते होंगे। अुन पर बहुत बोझा आ पड़ा है। परन्तु प्रभुकी अिच्छा होगी तो वे अुसे अुठा लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

मेरे प्रवासका कार्यक्रम ३१ से ३ तक चटगांव और बारीसाल ४ से १२ तक कलकत्ता।

बहन मणिगौरी
ठि॰ श्री वल्लभभाओी झवेरभाओी पटेल
बैरिस्टर साहब
मु॰ अहमदाबाद

७

मौनवार
कलकत्ता
(८-९-२१)

चि॰ मणि

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मेरी मांग तो पहननेके ही कपड़े बनानेकी है। किसीके घर विलायती थानमें कसीदा रखी है, कोओी पर विदेशी कपड़े चढ़े हैं। ये सब अधिकांश लोग नहीं देंगे। अिसलिअ यह मांग नहीं की। असी कोओी नयी चीज वे न लें तो अुतना काफी है। हमें पहननेके कपड़ोंकी ही मांग करनी है। मैं नवजीवन में लिखूंगा।

पर्युषणमें अुपासरे जाना तय किया यह अच्छा है। अिन बहनोंमें से कोओी अपने कपड़े देती है?

१२ तारीख तक तो कलकत्तेमें रहना है। बादमें क्या करना है यह सोचूंगा।

बेजवाड़ाकी साड़ियोंमें अब धोखा जरूर घुसा होगा[1]। अच्छा यही है कि अुन्हें हाथ ही न लगाया जाय।

कुमुदबहनको पत्र भेजा सो अच्छा किया। पत्र लिखते रहनेसे अुन्हें आश्वासन मिलेगा।

कल बहुत करके महादेव आकर तुमसे मिल जायेंगे।

यहां भी तुम्हारी ही तरहकी केवल खादी ही पहननेवाली खूब अुत्साह रखनेवाली दो बहनें हैं। वे अभी देशबंधु दासकी बहनको अुनके नारी-मंदिरमें मदद दे रही हैं।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. भाभी वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
मु. अहमदाबाद

८

रेलमें
२५–९–२१

चि. मणि

तुम्हारे दो पत्र मेरे पास रखे हैं। तुम्हारी प्रकृति ठीक चल रही है। अब तो थोड़े दिनमें यहां मिलेंगे, जिसलिये अुसके बारेमें कुछ नहीं लिखता।

कुमुदबहनका हाल पढ़कर मुझे दुःख होता है। अुनसे मैं जरूर मिलना चाहता हूं। १ तारीखको मैं अहमदाबाद आ ही जाअूंगा। वहां कितने समय रहना होगा यह तो नहीं जानता। परन्तु मैं वहां रहूं अुस बीचमें कुमुदबहन आश्रममें आयें तो मैं अुनके साथ बातचीत कर सकूंगा। मैं अुनकी सेवा करना और अुन्हें शान्ति देना चाहता हूं। तुम अुन्हें यह पत्र ही भेज दो तो काम चल सकता है।

---

१ बेजवाड़ाकी साड़ियोंमें मिलका सूत काममें लेनेकी जो शिकायत थी अुसका अुल्लेख है।

२ तारीखको मैं बम्बअी पहुंचनेकी आशा रखता हूं। ४ तारीख तक तो वहां रहना ही है।

काका (विठ्ठलभाअी) का रास्ता अलग ही है। हमें अुनकी चिन्ता नहीं करनी है। अुन्हें जो ठीक लगे वह भले ही वे करें और कहें।

मोहनदासके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
ठि. वल्लभभाअी बैरिस्टर
भद्र अहमदाबाद
(पू. बापूजीके हाथका पता)

९

नेपानी
(अक्तूबर, १९२१)

चि. मणि

तुम्हारा काम और देशके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तो आश्चर्य हुआ है। दिवालीके दिनोंमें खूब चरखा चलाया करना।

बापूकी सेवा तो तुम करती ही होगी यह मैं मान लेता हूं। तुम्हारे जवाबकी आशा मैं जिस बार तो नहीं रखता।

मोहनदासके आशीर्वाद

(पीछे)

अहमदाबादकी बहनोंका नाम लेकर मैंने पूनाकी बहनोंसे भिक्षा मांगी। अुन्होंने तो मुझ पर सोनेकी चूड़ियों अंगूठियों कड़ों और मोतीकी जंजीरोंकी भारी वर्षा कर दी। अहमदाबादकी बहनोंको मात कर दिया।

मोहनदास

श्री मणिबहन
ठि. वल्लभभाअी बैरिस्टर
भद्र अहमदाबाद

१०

सोमवार

(अप्रैल १९२४)

चि. मणि

भाअी मणिलालभाने आज खबर दी कि तुम्हारा बुखार तो चला गया मगर अशक्ति है और तुम डॉक्टर कानूगाके यहां चली गयी हो। मैं चाहता हूं कि बापू और डॉक्टर अिजाजत दें तो यहां आ जाओ। आराम और शान्ति दोनों मिलेंगे। तुममें तो शक्ति तुरन्त आ ही जायगी। अिसलिअे मैं तुमसे ऐसा भी कहता। मुझ पर तुम्हारे भार पड़नेका भय तुम्हें या बापूको हरगिज नहीं होना चाहिये। बोझा पड़ेगा तो जमीन पर, और जमीन काफी मजबूत है। तुम्हारे जैसी सौ बालिकाओंका बोझा तो वह आसानीसे अुठा सकेगी। दूसरा बोझा रसोअियेपर होगा। रेवाशंकरभाअीने रसोअिया भी यहांकी जमीनके जैसा ही मजबूत दिया है। तुम्हारे आनेसे मेरी चिन्ता दूर होगी क्योंकि जो भी देशसेवक और देशसेविकाओं दूर बैठे बीमार पड़ते हैं वे मेरी चिन्तामें वृद्धि करते हैं। मेरी नजरके सामने वे सब हों तो कुछ हद तक मेरी चिंता दूर हो जाय।

डाह्याभाअी तुम्हारे बदले चरखा अधिक समय चलाते ही होंगे।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व. मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री थे।

२ जुहू। यरवडा जेलसे फरवरी १९२४ में छूटनेके बाद कुछ मास आरामके लिअे पू. बापूजी जुहूमें रहे थे।

३ स्व. रेवाशंकर जगजीवन झवेरी। बम्बअीमें पू. बापूजी अुनके यहां मणिभवनमें अुतरते थे।

[यह पत्र मैं जुहूमें पू. बापूजीके पास थी वहाँ पू. बाने भेजा था। जुहूमें कुछ बीमारोंको इकट्ठा करके पू. बापूजीने अपना छोटासा अस्पताल बना लिया था।]

(सत्याग्रह आश्रम साबरमती)
बुधवार
(अप्रैल १९२४)

चि. मणि,

अब तुम्हारी तबीयत अच्छी होती जा रही है जिससे आनन्द होता है। उसी तरह राधा[1]की भी अच्छी होगी। अ. सौ. लीलीबहन[2]की भी अच्छी होगी। अब नहानेकी इजाजत मिल गयी होगी। खुराक तुम सब क्या लेती हो सो बताना। राधाको इंजेक्शन दिये जा रहे हैं? प्रभु[3] क्या खुराक खाता है?

कृष्णदास[4] मजेमें होगा। बापूजीको नियमपूर्वक तुम खुराक देती होगी। वे क्या खाते हैं? गं. स्व. जमनाबहन[5] वहाँ हमेशा आती होंगी। उन्हें मेरे प्रणाम कहना। उसी तरह जसवंतप्रसादको भी कहना। आज सुबह भाई डाह्याभाई आये थे। वे मजेमें हैं। को मैंने एक पत्र लिखा है। उसका उत्तर नहीं आया। उनकी तबीयत अच्छी होगी। देवदास[6] तो क्यों लिखने लगा?

---

१ बापूजीके भतीजे स्व. मगनलाल गांधीकी पुत्री।

२ आचार्य कृपालानीकी बहन।

३ बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्समें पू. बापूजीके साथ थे।

४ श्री कृष्णदास गांधी। बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र।

५ दादाभाई नवरोजीकी पौत्री श्री गोशीबहन कैप्टन और श्री पेरीनबहन कैप्टनके साथी कार्यकर्ता।

६ पू. बापूजीके सबसे छोटे पुत्र।

मुझे तुम सब बहुत याद आते रहते हो। परन्तु आश्रममें साथ रहना नहीं लिखा होगा। मुझे पत्र लिखना। नहीं तो लिखवाना। पूज्य रेवाशंकर भाई (झवेरी) की तबीयत अच्छी होगी।

यहां सब प्रसन्न हैं। वहांका हाल लिखना। अभी भाई मगनलाल[1] दिल्ली गये हैं। उनके घर पर भाई छगनलाल[2] और चि. काशी[3] रहते हैं। चि. संतोक[4]को मेरा आशीर्वाद। वहां सबको यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

१२

(पूना)
सोमवार
(५-५-२४)

चि. बहन मणि

तुम्हारे पत्रकी बाट कल बुरी तरह देखी जैसे पपीहा बरसातकी देखता है। आज सुबह प्रार्थनाके बाद पहला पत्र तुम्हारा देखा। देव-दासने कहा कि कल शामको मणिबहनका पत्र मिला।

भाई[5] लिखते हैं कि थकावट रहने पर भी वहां तबीयत यहांसे अधिक अच्छी है। किसी तरह चलता रहे तो हम सब वहां आ जायगे। दुर्गाबहन[6]की तबीयत भी वहां ठिकाने आ जाय तो कितना अच्छा हो! उनसे कहना कि मुझे पत्र लिखें। महादेवभाईको मद्रास नहीं भेजा। वे वापस साबरमती पहुंच गये हैं।

---

१ २ बापूजीके भतीजे।

३ श्री छगनलाल गांधीकी पत्नी।

४ स्व. मगनलाल गांधीकी पत्नी।

५ मैं बीमार था इसलिये पहले मुझे अपने पास रखनेको पूना बुलवाया। वहां फर्क न पड़ा तो हजीरा भेजा।

६ स्व. दुर्गाबहन स्व. महादेवभाईकी पत्नी।

प्रकृति को कुछ चाहिये वह मंगवा लेगा। मांगे बिना मां भी नहीं परोसती। सच तो यह है कि मां ही नहीं परोसती। दूसरोंको शिष्टता दिखानी पड़ती है। मांको शिष्टता दिखानेकी फुरसत ही नहीं होती। मां विवेककी मूर्ति है। तुम्हें मालूम है कि मैं वैसी मां बननेकी शक्तिभर कोशिश कर रहा हूं।

राधा और कीकीबहन ठीक हैं ऐसा कहा जा सकता है। दोनोंका तापमान ९९ से अधिक नहीं चढ़ता।

शौकतअली दो दिन रहकर गये।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन वल्लभभाई पटेल
बोमजी भामर जीरजी सैनेटोरियम
डुमास सूरत होकर

१३

(जुहू)
(७–५–२४)

चि. बहन मणि

तुम्हारी डाक नियमपूर्वक आने लगी है। जिससे मुझे शान्ति रहती है। धीरज और आत्म-विश्वास रखना — दवासे भी विश्वास ज्यादा फायदा करेगा। मथुरादासका पंचगनी जाना स्थगित कर दिया है। चि. राधा ठीक है। प्रार्थनामें शामको आती है। कीकीबहन जैसी थी वैसी ही है। चि. गिरधारी कल अहमदाबाद गया।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन वल्लभभाई पटेल
डुमास सूरत होकर

---

१ मौलाना शौकतअली। अली भाइयोंमें बड़े।
२ आचार्य कृपालानीका भतीजा।

१४

(जुहू)
(११-५-२४)
रविवार

चि॰ बहन मणि

तुम्हारा पत्र मिला। यह मेरा चौथा पत्र है। अेक पत्र और दो कार्ड मैं लिख चुका हूं। तुमने अेक ही कार्डकी पहुंच भेजी है।

आत्म-विश्वास सच्चा तब कहा जायगा जब वह निराशाके समय भी अचल रहे। सत्य और अहिंसामें मेरा विश्वास हो तो मैं नाजुक समयमें भी अुनका पालन करूंगा। भले ही बुखार आये तो भी आशा हरगिज न छोड़ी जाय। हम नाचिन्त न रहें परन्तु चिन्ता न करें। 'त्यागमूर्ति'[1] के बारेमें तुम्हारी आलोचना देखनेको मैं आतुर हो रहा हूं। मुझे पत्र लिखना हरगिज न भूलना। तुम्हारे यहां और कोअी आकर रह सके अैसी गुंजाअिश है क्या? वहां वसुमतिबहन[2]को भेजनेका जी होता है।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन वल्लभभाअी पटेल
हजीरा सूरत होकर

१५

(जुहू)
(१४-५-२४)
बुधवार

चि॰ बहन मणि

कल तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। पता नहीं चलता कि मेरे पत्र तुम्हें मिलते हैं या नहीं। सप्ताहमें अेक लिखनेके बजाय मैंने लगभग हर तीसरे दिन लिखा है। बुखार जरूर जायगा। आया जाता है और

---

१ स्त्रियोंके प्रश्नोंके बारेमें बापूजीके लेखोंका संग्रह। (प्रकाशक नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद–१४)

[2] अेक आश्रमवासी।

बस्त ठीक आता है अिसलिअे मैं मानता हूं कि न आनेका सवाल ही नहीं रहता। बीमारी पुरानी है अिसलिअे देर हो रही है। त्यागमूर्ति के बारेमें आलोचना लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि बहन मणि वल्लभभाआी पटेल
सेठ आसरका सेनिटोरियम
डुमीस सूरत होकर

१६

(जुहू
१५-५-२४)
वै सु १२

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिला। तुम २ तारीख तक चली आओ यह तो बिलकुल ठीक नहीं होगा। वहां यह माघ तो पूरा करना ही चाहिये। मेरा वहां आना तो हो ही कैसे सकता है? २९ तारीखको मुझे साबरमती जरूर पहुंचना है। वसुमतीबहन आना चाहेगी तो बताना। बापा कम है।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन
सेठ आसरका आरोग्य भवन
डुमीस सूरत होकर

१७

(जुहू
१७-५-४)

चि मणि

अहमदाबाद पहुंचनेके बाद देखेंगे कि हवा भी आय या नहीं। बिलकुल अच्छी हुये बिना वहांसे हरगिज नहीं निकलना है। वसुमती-बहन कदाचित् सोमवारको चलकर वहां आवेंगी। बाकी मुभरा

सूरतका घर जानते हैं। वहां जाकर देखें। यदि वे आ गयी हों तो मुझे ले जायं। क्या वहां कोई अलग मकान मिलते हैं? वहां तक हो सकेगा तार दिया हुआ। अभी वसुमतीबहन वियेत्तान में रही हैं। दुर्गाबहनका क्या हाल है? क्या वे पत्र लिखेंगी ही नहीं? मेरा हाथ काँपता जरूर है।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन वल्लभभाई पटेल
मास्टर सेठका आरोग्य-भवन
हजीरा सूरत होकर

१८

(जुहू
२-५-२४)

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र और कार्ड मिले। त्यागमूर्ति के बारेमें पत्र पढ़कर मुझे तो बहुत ही हर्ष हुआ। यह निर्मलता और संयम-वृत्ति संग्रहणीय है। जिसकी चर्चा तो हम मिलेंगे तब करेंगे। अब तो बुखारको भी निकालकर चंगी हो जाओ तो ईश्वरकी कृपा हो। वसुमतीबहन देवलाली जायेंगी इसलिये यहां नहीं आयेंगी। यहांसे तुरन्त जानेका विचार ही न किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ दुर्गा

तुमने तो मुझे पत्र ही नहीं लिखा। वहां तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापू

चि॰ मणिबहन वल्लभभाई पटेल
हजीरा सूरत होकर

१९

(पूना
ता॰ २६ मअी १९२४)
सोमवार

चि॰ मणि

तुम तो जल्दी ही पहुंच गयीं[1]। मेरी तीव्र अिच्छा है कि तुम भाभी-बहन आश्रममें अलग कोठरी लेकर रहो। छात्रालयमें खाओ हाथसे बनाओ या बाकी साथ अनुकूल पड़े तो वहां खाओ। जैसा तुम दोनोंको अनुकूल हो वैसा करो। वहांसे कॉलेजमें जा सकते हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन
वल्लभभाई बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२०

(अहमदाबाद
२६-९-२४)

चि॰ मणि

आज सब तुम सब आये और चले गये। अब सम्हाल लेवनी हो! बीमारको जितनी बार चक्कर लगाना हो लगा सकता है। मुझे वचन नहीं बांधता। अिसलिअे न आनेके लिअे माफी है। और आनेका विचार हो तब छूट भी है। मुझे तो अेक ही काम है। किसी तरह अच्छी हो जाना।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल
खमासा चौकी
अहमदाबाद

---

१ मैं पू॰ बापूजीसे पहले अहमदाबाद आ गयी थी।

२ पू॰ बापूजीसे मिलने साबरमती आश्रममें गये थे परन्तु वे सो गये थे अिसलिअे मिले बिना वापस चले आये थे।

२१

(दिल्ली
२६-९-२४)

चि मणि

मेरे अुपवाससे बिलकुल घबरानेकी जरूरत नहीं। शक्ति अभी खूब है। २१ दिन निर्विघ्न पार हो जायेंगे अैसा मैं मानता हूं। डॉक्टरोंकी भी यही राय है। अपनी तबीयत खूब संभालना। बुननेका महावरा खूब रखना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन
ठि वल्लभभाभी बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२२

दिल्ली
२४-१ -२४

चि मणिबहन तथा डाह्याभाभी

अिस साल तुम्हें अपने शुभाशीष देने यहां मौजूद नहीं रहूंगी परन्तु अिस पत्र द्वारा और अपने मनसे तो तुम्हें अपने शुभाशीष दे ही रही हूं। तुम्हारे लिये भी यही चाहती हूं कि तुम्हारी सकल शुभ कामनायें सफल हों। जैसे हो अुससे अधिक तंदुरुस्त रहो और पढ़ाई पूरी करके देशके सच्चे सेवक बनो। बापूजीकी तबीयत दिन-दिन सुध-रती जा रही है। यह पत्र मिलेगा अुस दिन तो तुम दोनों [illegible]

१ पू बापूजीने हिन्दु-मुसलमानोंकी अेकताके सिलसिलेमें ता १७-९-२४ से ८-१ -२४ तक २१ दिनके अुपवास किये थे।

२ नये वर्षके लिये।

और स्वस्थ होगे ही असी आशा रखती हूं। बापूजी भी तुम्हें याद करते हैं और तुम दोनोंके लिअे अुनके शुभाशीष हैं ही।

शुभेच्छु बाके शुभाशीष

चि मणिबहन
ठि वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

२३

(दिल्ली)
का सु २
(१-११-२४)

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिला। अधिक बार लिखा तो बहुत अच्छा।

बापूको आज लिखा है। लिखा छोड़ देनेको कहा है।

तुम फिर दूसरीबार जानेका विचार नहीं करोगी? पास[1] होनेके लिअे क्याक्या चाहिये क्या? चाहिये तो समझ लेना। डाह्याभाअी अेक विषयमें फेल हो गये। कोअी बात नहीं। फेल होनेका अर्थ है अुस विषयमें अधिक प्रवीण होना। फेल होनेवाले विद्यार्थी अकसर निराश हो जाते हैं। यह भूल है। जो आलसी हों या जिनकी नजर नौकरी पर हो वही निराश हो सकते हैं। अभ्यासीके लिअे तो असफलता अधिक प्रयत्नका सुअवसर होती है।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन
ठि वल्लभभाअी पटेल
खमासा चौकी
अहमदाबाद

---

१ गुजरात विद्यापीठकी स्नातक-परीक्षा।

२४

(कलकत्ता)
वै. वदी ६
गुरुवार
(१४-५-'२५)

चि. मणि

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मैं खुश हुआ। औरतोंमें काम करना बहुत मुश्किल जरूर है। फिर भी धीरजसे जो हो सके वह कार्य किया जाय। डाह्याभाई बाबू अथवा नयी खबर भये ही होंगे। चूड़ियां[1] मेरे ध्यानमें अवश्य है। मैं भूलूंगा नहीं। वे ढाकामें मिलती हैं। और वहां मुझे तीन दिनमें पहुंचना है। बापू कहीं हवाखोरीके लिये जानेवाले हैं?

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२५

(शान्ति निकेतन
११-५-२५)
वै. सु. ८

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बा पत्र लिखनेका लोभ करने जाऊं तो शायद पत्र लिखा ही न जाय इसलिये जितना ही लिखकर संतोष कर लेता हूं। तुम्हें चूड़ियां तो कभीकी मिल गयी होंगी। वे तो कलकत्तेसे ही भेजी हैं। दूसरी मैंने ढाकेमें खरीदी हैं वे अभी मेरे साथ हैं। वे तो जब मैं आऊंगा तभी तुम देखोगी। चि. डाह्या

---

१ ढाकाकी चूड़ियां जो बंगालकी विशेषता मानी जाती है मैंने बापूजीसे मंगवायी थीं।

माजीके बारेमें लम्बा जवाब महादेवने लिखा होगा। अुन्हें कमाना हो तो भले ही कमायें। अुनकी तबीयत अच्छी हो गयी है यह जानकर खुशी हुआी। चि. यशोदा[1] से मुझे पत्र लिखनेको कहना। बापूकी खूब सेवा करना और अुन पर जो बोझ है अुसमें जितना भाग बंटाया जा सके अुतना तुम तीनों बटाना। मुझे बंगालमें अेक मास तो बिताना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाअी पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

२६

जेठ बदी ६,
बुधवार
(१२–६–२५)

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया है। आज तो मैं जहाजमें हूं। चूड़ियां कलकत्तेमें हैं। वहां १८ तारीखको पहुंचना है। वहां पहुंचकर थैलीमें बंद करके पार्सलसे भेज दूंगा। परन्तु देवदास आश्रममें न आया हो तो भी जांच की जाय। अुसके नामकी थैली जरूर होगी। अुस पर कब्जा कर लिया जाय।

डाह्याभाअीने कांतीका काम पसन्द किया था। अिस परसे मैंने यह सलाह दी। परन्तु अुनका मन विरुद्ध जानेका ही हो तो मैं रोकना नहीं चाहता। विवाह बारेमें मुझे बड़ी आपत्ति यह है कि किसीसे रुपया मांगना पड़ सकता है। भले ही कोअी मुलाहजेसे रुपया दे तो भी जहां तक हो सके हम न लें। यह आदर्श है। अुस पर टिके रहनेकी

[1] स्व. यशोदा। डाह्याभाअीकी पत्नी।

हमारी शक्ति न हो तो किसीसे मदद लेकर भी जानेमें बाधा नहीं है। मुझे वहां जानेमें समय लगेगा। अभी १९ जुलाओी तक बंगालमें हूं। डाह्याभाओीको वहां आना हो तो आकर बात कर जायं अथवा आश्रममें जाकर तय करनी हो तो कुछ समय कर लें। मुन्हें किसी भी तरह दुःखी न किया जाय। मैं अुनकी अिच्छाके अनुकूल होना चाहता हूं। मैं तो धीरे धीरे मार्गदर्शन करना चाहता हूं। तीन रास्ते हैं

१ खानगी नौकरी कर ली जाय।

२ खेती की जाय।

३ अमरीका जाकर अधिक सीखा जाय।

अिनमें से जो अुनकी अिच्छा हो सो करे। अुसमें मुझे कोओी आपत्ति नहीं। चौथा रास्ता राष्ट्रकी सेवाका है। रुपया लेकर राष्ट्रकी सेवा करना मुझे पसन्द नहीं अिसलिअे मैंने अुस रास्तेको नहीं बिताया। अुन्हें वैद्यक सीखनेका शौक है? हो तो यहां राष्ट्रीय कॉलेज है और दिल्लीमें भी है। डाह्याभाओी यह न जानते हों तो कह देना। यहां (कलकत्ते) का कॉलेज अच्छा माना जाता है। अुसमें अध्ययन करना हो तो कर सकते हैं।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। बीचमें जरा सरदी हो गयी थी। और तो कुछ भी नहीं था। हर जगह लोग काफी आराम देते हैं।

को नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। जिससे मुझे संतोष रहता है। प्रेमका भूखा है।

बापूकी सेवा खूब करना। जब मां मर जाती है और बाहरकी बहुत झंझटें होती है तब यदि बच्चे सेवावृत्तिवाले हों तो वे बापको अुसका सब दुःख भुला देते हैं। यह मैं अपने पिताके आज्ञाकारी पुत्रके नाते अपना अनुभव तुम भाभी-बहनको बता रहा हूं। जिससे बच्चोंका कितना कल्याण होता है अिसका साक्षी भी मैं हूं। मा-बापको परमेश्वरकी तरह पूजनेका फल मैं प्रतिक्षण भोग रहा हूं। यह सब तुम दोनोंको लिख रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि बापू पर बड़ी जिम्मेदारी है। मैं तो अुसमें कोओी भाग नहीं ले सकता। पत्र लिखने जितना समय भी नहीं निकालता। अिसलिअे अपनी जिम्मेदारी भी तुम पर डाल रहा हूं।

स्वास्थ्यको खूब संभालना। अभ्यास पूर्ण करनेमें समय जाय तो उसकी चिन्ता न रखना। महादेव कहते थे कि तुम दोनों भाई-बहनके अंग्रेजी शब्दोंके हिज्जे बहुत कच्चे हैं। यह सुधार कर लेना। जो भी सीखें वह ठीक ही सीखें। जहां भी शंका हो शब्दकोष खोलें। और कुछ करनेकी जरूरत नहीं रहती।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाई बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

२७

(कालीघाट
कलकत्ता
२९-६-२५)
सोमवार

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। पिताकी सेवा करनेके अनेक प्रसंग ढूंढ़ना। वे ढूंढ़ने पड़ते ही नहीं। फिर भी तुम जितनी हो सो समझ लिया। डाह्याभाई नवजीवन में जाते ही हैं तो चित्त लगाकर काम करें। स्वामी[1] की आज्ञा मानने में बहुत लाभ है। यह सुन्दर तालीम है। भले मजदूरीका ही काम सौंपें तो उसे भी दिल लगाकर करें। मैं कभी न कभी थोड़े बहुतके लिये आ जाऊंगा परन्तु समय तो ईश्वर

---

१ स्वामी आनन्द। पू. बापूजीके निकटके साथी। नवजीवन के आरम्भमें उन्होंने उसमें खूब काम किया था। उसके विकासमें उनका बड़ा हाथ रहा है।

ही जाने। बापूकी तबीयतके समाचार मुझे देती रहो। बापूके अंग्रेजी हिज्जे कच्चे होनेसे तुम्हारे भी वैसे ही रहने चाहिये ऐसा कोई नियम है क्या? बापके गुणोंका अनुकरण होता है, दोषोंका हरगिज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

२८

(कालीघाट,
कलकत्ता
(१६–७–२५)
गुरुवार

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दूसरी चूड़ियोंकी अभी जरूरत हो तो मुझे लिखना। डाकसे भेज दूंगा। डाह्याभाई कलकत्तेके राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेजमें पढ़ेंगे? वह अच्छा चल रहा दीखता है। अथवा डाह्याभाईकी हार्दिक इच्छा क्या है? मैं इतना काममें फंसा हूं कि लम्बे पत्र लिखे ही नहीं जा सकते।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाई बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

२९

(मुर्शिदाबाद जिला
९-८-२५)
श्रावण वदी २

चि० मणि

तुम्हारा और डाह्याभाईका पत्र मुझे मिल गया था। डाह्याभाईके पत्रका अुत्तर तुरंत ही दे देनेको मैंने महादेवसे कह दिया था। वह मिल गया होगा। डाह्याभाईका जो सवाल पूछा था अुसका अुत्तर ही अुन्होंने नहीं दिया। डाह्याभाईको सर्विस छोड़नी हो तो यहाँ तथा कलकत्तामें दोनों जगह पूरे साधन हैं। अुन कंपनियोंका सरकारके साथ काफी सम्बन्ध नहीं है।

तुम्हें मणिलाल (कोठारी) ने १२ चूड़ियाँ भेजी हैं, अिसलिये अभी तो तुम्हें अधिककी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु यदि ये चूड़ियाँ बहुत टूटें तो महँगी पड़ेंगी यह समझ लेना। अिससे तो चाँदीकी अथवा सूतकी चूड़ी हमें सस्ती पड़ेगी। वे अैसी चूड़ी बन सकती हैं कि मोटी होती हैं मजबूत होती हैं और हमेशा धोयी जा सकती हैं। परन्तु यह विचार हम मिलेंगे तब करेंगे। तब तकके लिये तो यह संग्रह काफी है।

मेरा वहाँ आना तो जब होगा तब होगा। शायद मैं दो दिनके लिये मधुपुरमें आ जाऊँ।

बालशिक्षण ली है तो अब अुस पर कसरत भी करना।

आज हम मुर्शिदाबाद जिलेमें हैं। मणिलाल (कोठारी) यहीं हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन
ठि० वल्लभभाई झवेरभाई पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

३०

श्रावण वदी अमावस
बुधवार
१९-८-२५

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम चूड़ियोंके बिना रहो। मेरी सलाह तो चांदीकी चूड़ियां पहननेकी है। केवल सीसमकी तो ठीक नहीं लगती। परन्तु लाखकी पहननेमें कोओ हर्ज नहीं है। मैंने तो देख लिया कि यह सस्ती चीज नहीं है। डाह्याभाओके बारेमें जवाब लिख चुका हूं। कुल मिलाकर मेरी नजर तिबिया कॉलेज[1] पर टिकती है। परन्तु अब तो मैं वहां ५ सितम्बरको पहुंचनेकी आशा रखता हूं। अिसलिये हम मिलकर निश्चय करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन
ठि. वल्लभभाओ बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

---

[1] हकीम अजमलखां साहब द्वारा दिल्लीमें स्थापित यूनानी पद्धतिका कॉलेज।

३१

(बांकीपुर,
२१-९-२५)
शनिवार

चि मणि

यह रहा देवधरका तार[1]। मेरा खयाल है कि जिस बीच प्रतीक्षा की जाय। परन्तु जिस बीच यदि बम्बअीके सेवासदनमें रहना हो तो प्रबंध कर दूं। अथवा वर्धामें जो कन्या पाठशाला है असमें काम करनेकी जिच्छा हो तो वह करो। जमनालालजी कमलाबेनकी पाठशालाको जानते हैं। असके लिये वे जिनकार करते हैं। परन्तु वर्धाकी कन्या पाठशालामें जितना काम कर देनेको कहते हैं। वर्धामें मराठी ही है। और वहां तो घर जैसा है, जिसलिये पहला अनुभव वहां लिया जाय तो ठीक ही है।

अब जो जिच्छा हो मुझे बताओ।

मुझे जुत्तर पटनाके पते पर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन
ठि वल्लभभाजी बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

---

१ मुझे अनुभव लेने और काम करनेके लिये कहां रहना चाहिये जिसकी जिस पत्रमें चर्चा है। श्री देवधरका तार था कि वे अपनी देख रेखमें चलनेवाले पूनाके सेवासदनमें मुझे दिसम्बरमें भरती कर सकेंगे।

३२

(कोठड़ा
कच्छ
२५-१ -२५)
सोमवार

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे बुखार आनेकी बात भी सुनी। अब तो थोड़े ही दिनोंमें वहां आना है, अिसलिये मिलेंगे तब बातें करेंगे। हाथ बिलकुल अच्छा हो गया होगा। डाह्याभाईके[1] साथ अेक बार सभी बातचीत हुअी है। फिर अवकाशमें करूंगा। वहां (अहमदाबाद) पहुंचनेसे पहले समझ लूंगा। तुम्हारे लिये मैंने तो निश्चय कर ही लिया है।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन
ठि वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

३३

(सत्याग्रहाश्रम साबरमती
७-१२-२५)
सोमवार

चि मणि

तुम्हारे पत्र मिले हैं। तुम्हारा सारा कार्यक्रम आ गया है। वहां सेवासदनमें सब कुछ नया लगता है यह तो मैं जानता ही था। फिर भी वहांका नियम, वहांकी पद्धति, वहांका अुत्साह, वहांकी भाषा सिखना वगैरा आकर्षित करनेवाली है। फिर, अिसके बराबर अन्य कोअी जीवित संस्था शायद ही कहीं होगी। हमें अुसकी पद्धति वगैराको हमारी अपनी पसन्दके कार्यमें दाखिल करना है। हमें तो गुणग्राही

---

१ डाह्याभाअी पू. बापूजीके साथ कच्छके दौरेमें थे।

बनना है। हमें जितना पसन्द हो अुतना ले लें। विरोधी मतवाले समाजमें भी हमें सहिष्णुतापूर्वक रहना तो आना ही चाहिये न?

तुम्हारी तबीयत अच्छी रहती होगी। मेरी चिन्ता न करना। मुझमें शक्ति आती जा रही है। आज बम्बअी जा रहा हूं। बम्बअी अेक दिन रहकर वहांसे वर्धा जाअुंगा। वर्धा नियमित रूपमें पत्र लिखना। वहांके अनुभवोंकी डायरी रखो तो अच्छा हो।

डाह्याभाअी अभी तो विट्ठलभाअीके आग्रहसे अुनके पास जायेंगे। दो चार दिनमें वहां जायेंगे। फिर अुनके साथ महासभा (कांग्रेसमें) में जायेंगे।

तुम्हारे लिअे तो जब तक चाहो वहीं रहना अच्छा है। मनमें अुठनेवाली सभी तरंगें बताना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
ठि. सेवासदन
पूना सिटी

३४

वर्धा
बुधवार
(१२-१२-२५)

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। वहांका काम पूरा करनेके बाद बम्बअी रहना हो तो भले ही रहो नहीं तो तुरन्त यहां आ जाओ। ज्यादातर तो यहां लम्बी छुट्टियां नहीं होतीं। अिसलिअे कन्या पाठशालामें तुरंत काम मिल जायगा। साथ ही जमनालालजी की लड़की कमला और मदालसाको भी तुम्हीं पढ़ाओ यह निश्चय किया है। अभी तो जानकी बहनके साथ ही रहनेका निश्चय रखना। तुम आओगी तबसे तुम्हारा

---

१ विट्ठलभाअी अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके अध्यक्ष थे। अुन्होंने डाह्याभाअीको अपने पास रहनेको दिल्ली बुलाया था।

२ स्व. जमनालालजी बजाज। मध्यप्रदेशके गांधीजीके मुख्य साथी चरखा-संघके अध्यक्ष कांग्रेसके खजानची १९२१-४२।

वेतन ५ रुपये प्रति मास लिया जायगा। जिसलिये अब आना हो तो आना। कांग्रेसमें आनेकी जिच्छा हो जाय तो यहांसे मेरे साथ अथवा बादमें आना कानपुर सभी आना। मुझे २१ तारीखको कानपुर पहुंचना है। पहली जनवरीको तुम्हें यहां पहुंच जाना चाहिये।

मेरा वजन[1] घट गया था। वह ९ पौंड वापस बढ़ गया है। अब ६ बाकी रहा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाओ पटेल
सेवासदन सदाशिव पेठ
पूना सिटी

३५

वर्धा
माघ बदी अमावस
(१६-१२-२५)

चि॰ मणि,

मेरे पत्र मिले होंगे। यदि अहमदाबाद जानेकी जरूरत हो तो जरूर अभी जाना। सिर्फ जितना याद रखना कि यहां पहली जनवरीको या शाम पर तक ही आना चाहिये। अब मिलनेका मोह कम रखा जाय जिसीमें समझदारी मालूम होती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाओ पटेल
सेवासदन
[illegible]
पूना सि[illegible]

[1] [illegible] बालकोंके व्यवहारमें मलिनता पाओ [illegible] २४-११-२५ [illegible] दिनका उपवास किये थे। [illegible] घटा हुआ [illegible]

३८

(सत्याग्रहाश्रम साबरमती
११-१-२९)
सोमवार

चि मणि

तुम्हारा पत्र मुझे सब समाचार देता है। मासी देवधरके नामका पत्र अच्छा है। अुन्हें अच्छा लगेगा।

वहां सब नया है जिससे जरा घबराहट होती है। परन्तु अिस तरह कायर नहीं बनना चाहिये। कमला जितनी बढ़ सकती है अुतना खूब बढ़ाया जाय। धीरे धीरे ठिकाने आयेगी। अुसे बातोंमें लगाया जाय। घूमने निकले तो घूमने ले जाओ। अुसे प्रेमसे जीता जाय।

मराठी सिखने और पढ़ानेकी आदत तुम्हें नहीं है। दोनों अभ्याससे आयेंगी। वहां मराठी है यह तो हम जानते ही थे। हिन्दी घर पर पढ़कर सीख लो। वहां किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेना।

गाड़ीकी बात दूसराको धीरेसे समझायी जाय और वे जितना मानें अुतनेको गनीमत समझा जाय।

अर्थात् प्रत्येक वस्तु निष्काम वृत्तिसे की जाय। हम प्रयत्नके मालिक हैं फलके नहीं। मेहनत करके सम्पूर्ण सन्तोष मानें। अुसमें कभी न हारें। अन्तमें तो सारा काम करनेका समय आयेगा ही।

मैं यहां रहूं अुसी समय तुम्हें दूर रहना है जिसका खेद न मानना। पत्र द्वारा तो मिलेंगे ही।

अपना स्वास्थ्य सम्भालना। और समाजके लिये मनको बिलकुल प्रफुल्लित रखना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन
ठि सेठ जमनालालजी
वर्धा (सी पी)

३९

(सत्याग्रहाश्रम
साबरमती
१–२–२९)
बुधवार

चि. मणि

देवदास तो यहां नहीं है। वह अभी तक देवलालीमें ही है। मेरी तबीयत अब अच्छी है। कमजोरी है, वह मिट जायगी। अब वहां भी कम मजा होगा। कमला जितनी आवे वहां सुतली चलाना। चिन्ता बिलकुल न करना। स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। घूमने हमेशा जाना। मधुबाई[1] जो आश्रम (वर्धा) में है शायद वहीं जायगी। कमला (बजाज) के विवाहके समय यदि संभव हो तो यहां आना। मुझे नियमित पत्र लिखना।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन
ठि. सेठ जमनालालजी
वर्धा (बी० अेन० रेलवे)

४०

(सत्याग्रहाश्रम
साबरमती
१५–२–२९)
सोमवार

चि. मणि

कार्ड मिला। बापसका वक्त है। यदि तुम दोनों[2] किसी निश्चय पर पहुंचे होओ तो उसके अनुसार करना। यदि न पहुंचे होओ तो हम सब मिलकर निर्णय करेंगे। मैं यहां बैठकर नहीं कर सकता। अभी

१ इस समय वर्धा आश्रममें रहनेवाली अेक बहन।
२ श्री जमनालालजी तथा मैं।

आओ या जमनालालजीके साथ जिसका निर्णय तो वहाँके कर्तव्यका विचार करके तुम्हींको करना है।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन
ठि॰ सेठ जमनालालजी
वर्धा (सी॰ पी॰)

४१

देवलाली
(१५-५-२६)

चि॰ मणि

काकाको राजी कर लिया। परन्तु मंगलवारसे पहले जानेसे अिनकार कर दिया अिसलिये अब तो वहां बुधवारको जायेंगी। सूरजबहन[2]का कहना। शिष्य और शिष्या[3] संतोष दे रहे होंगे। सबमें ओतप्रोत हो जाना सीखना। गंगूबहन (कालूणा)को मनाया जा सके तो मनाकर ले आओ[4]। कार्यक्रम बदल गया है यह कृष्णदास (गांधी) ने बताया होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

---

१ श्री देवदासभाईका बम्बईमें अपेन्डिसाइटिसका ऑपरेशन कराया गया था। अुस समय बा आश्रमसे बम्बई गयी थीं। पू॰ बापूजीने अुन्हें आश्रम लौटकर वहाँकी जिम्मेदारी सम्हालनेको राजी किया था, हालांकि बा अधिक समय देवदासभाईके पास रहना चाहती थीं।

२ अेक आश्रमवासी बहन।

३ श्री देवदासभाईके ऑपरेशनके समय बा बम्बई गयी तब अुनके पीछे जो अेक बहन और दो बालक थे अुन्हें बा मुझे संभालनेके लिये सौंप गयी थीं।

४ श्री गंगूबहन कालूणा पुत्रके देहान्तके बाद बहुत गमगीन रहती थीं। अुन्हें आश्रममें लौटानेका प्रयत्न अुस समय बापूजी कर रहे थे।

४२

(१९२६)

चि॰ मणि

वाह, कुमारियाँ बीमार पड़ें तो मैं दुखड़ा किसके पास रोअूँ? यह तो समुद्रमें आग लगनेके बराबर हुआ। सेवा करनेके लिये भी शरीर रखनेकी कला सीख लेनी चाहिये। मेरा तो खयाल है कि जैसे तुम सब कपड़े पहनती हो वैसे ही मच्छरदानी[2] भी रातको पहननी चाहिये। और तो मैंने बच्चोंके पत्रमें जो लिखा है सो देखना।

आशा है अिस पत्रके मिलने तक तो बीमारी चली गयी होगी।

बापूके आशीर्वाद

४३

सोमवार
(१९२६)

चि॰ मणि

अिस बार तो तुम्हारा अेक भी पत्र नहीं आया। अब तबीयत बिलकुल अच्छी हो गयी क्या? जैसे जैसे व्यर्थकी चिन्ता[3] घटेगी और चित्त बालककी तरह शुद्ध होगा वैसे वैसे बीमारियाँ कम हो जायँगी। शुद्ध का अर्थ समझ लो। शुद्ध चित्तको किसीका दुःख नहीं लगता, अुसमें किसीका दोष नहीं ठहरता, वह किसीका बुरा नहीं देखता। यह भव्य स्थिति है। मैं कहूँ कि मेरी तो यह स्थिति नहीं है। मैं अुस स्थितिको पहुँचना चाहता हूँ। परन्तु अुससे बहुत दूर हूँ। अिस स्थितिको अखंड ब्रह्मचारी और

---

१ ४१ से ४७ नंबरके पत्र आश्रमवासियोंके नामके पत्रोंके साथ आश्रमके व्यवस्थापकके मारफत आये थे।

२ आश्रममें मच्छर बहुत थे परन्तु मैं मच्छरदानी अिस्तेमाल नहीं करती थी।

३ १९२५–२६ में मैं बहुत अस्वस्थ रहती थी।

ब्रह्मचारिणी जल्दी पहुंचते हैं। अैसोंको मैंने देखा है। अेण्ड्रूज[1] अिस स्थितिके नजदीक हैं। अिन्हें मूर्ख माननेवालोंको तुम मूर्ख मानना। अैसी मुग्धता तुममें आनी ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४४

सोमवार
(१९२९)

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिला। बापूसे भी सब हाल सुने। बीमारीके बारेमें अब अधिक नहीं लिखता क्योंकि देरसे देर शनिवारको तो मिलनेकी आशा है। परन्तु तुम्हें झट अच्छी और ताजी हो जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४५

मारिया
(१९२९)

चि मणि

तुम्हारी भावनाको मैं जानता हूं। परन्तु मेरे ही साथ जन्मभर कोई रहा जा सकता है? मेरे कामके साथ रहा जा सकता है। अिसलिअे अुसके वास्ते तैयार हो जाओ। वहां अेक भी मिनट बेकार न जाने देना। मुझे लिखती रहना। यथासंभव मैं भी लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१ दीनबन्धुके नामसे प्रसिद्ध सी० अेफ० अेण्ड्रूज।

काम होगा। तुम्हें प्रफुल्लित रहनेका दृढ़ निश्चय करना चाहिये। १४ तारीखके बाद यहां आनेका विचार स्थिर रखना। यहां संस्कृतकी पढ़ाओीमें तो मदद मिलेगी ही। हवा तो अनुकूल है ही। मुझे कुछे लिखने जो कुछ लिखना हो असके लिखनेमें संकोच न रखना।

रमणीकलालभाभी[१]से कहना कि पूंजाभाभी[२]के स्वास्थ्यके समाचार मुझे नहीं मिले जिससे चिन्ता रहती है। अनका पता क्या है? अुन्हें स्वास्थ्यके समाचार मिलते हों तो लिखें।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

४९

वर्धा
बुधवार
(८-१२-२९)

चि० मणि

तुम्हारा कार्ड मिला। खुशीसे आओ। रातकी गाड़ी लेनेके बजाय सुबहकी लेना अच्छा है। फिर जैसी मरजी हो वैसा करना। मुझे अब कोओी वादी तो करनी नहीं है कि प्रतिकूल विचार बदलूं। यह विचारा तो कन्याओंका होता है। कुछ हद तक कुमार भी अुसे भोगते हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

---

१ श्री रमणीकलाल मोदी। आश्रमकी पाठशालाके शिक्षक।

२ वे राजचन्द्रजीके भक्त थे और पू० बापूजी भारतमें आये तबसे अुनके सम्पर्कमें रहते थे। कुछ समय गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके कोषाध्यक्ष रहे थे। जीवनके अन्तिम दो वर्षोंमें वे साबरमती आश्रममें आकर रहे थे।

(१-१-२७)

चि० मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। अिस पत्रके पीछेका पत्र पढ़ना[1]। अिस कामके लिअे तुम्हें भेजनेका विचार होता है। तुम या मीराबाअी ही यह काम कर सकती हो। सिन्धी लड़कियां होंगी अिसलिअे अंग्रेजी और हिन्दीकी जरूरत होगी। मीराबाअी अभी भेजी नहीं जा सकती। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम जाओ। यदि निश्चय हो जाय तो बताना।

तुम्हें सुख-दुःख सहकर भी आश्रममें अर्थात् मेरे साथ ही रहना है। अपना अन्तर मेरे सामने खोल कर मुझसे मां का काम लेना।

---

१ कराचीसे श्री नारायणदास आनन्दजीने कराची म्युनिसिपल कन्या पाठशालामें तकली सिखानेके लिये अेक बहनकी बापूसे मांग की थी। यह पत्र अुसीके सिलसिलेमें है। अुनके पत्रका प्रस्तुत भाग अिस प्रकार है

कराची
२०-१२-२६

परम पूज्यपाद बापूजीकी सेवामें

म्युनिसिपल कन्या पाठशालाओंमें तकलीसे कातनेका काम शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ है। और अुसके लिये अेक सिखानेवाला छह महीनेके लिये ५ रु वेतन पर रखनेका निश्चय भी हुआ है। यहां औसी महिला मिल नहीं सकती। अतः अिस कार्यमें आपकी सहायता लेना चाहता हूं। यदि अैसी किसी बहनको अहमदाबाद या दूसरी जगहसे भेज सकें— नियुक्तिकी अवधि बढ़ाई भी जा सकती है — तो लिखियेगा। परन्तु शिक्षिकाओं और लड़कियोंको दिलचस्पी हो सके औसी होशियार और साथ ही जिम्मेदार महिलाकी बड़ी जरूरत है।

नारायणदास आनन्दजीके
वन्दन

तुम्हारी नीरसताका कारण भीतर ही भीतर साथीका अभाव तो नहीं है न? मुझे तुम्हारे अेक हितैषीने आग्रहपूर्वक कहा है कि मुझे तुम्हारा विवाह कर ही देना चाहिये। यह बात अेक युवकके सिल-सिलेमें निकली। वह पाटीदार तो नहीं है परन्तु योग्य है। मैंने कहा कि तुम्हारे बारेमें मैं तो निर्भय हूं। तुम्हारी विवाहकी अिच्छा होगी यह अभी तो मैं नहीं देखता। तब अुन्होंने कहा — आप मणिबहनको नहीं जानते। — अिस समय तो मैं मजाक नहीं कर रहा हूं यह मेरी भाषा परसे तुम देख सकोगी। मुझे निर्भयतासे अुत्तर देना। अितना तो है ही कि अिसे कुमारी रहनेकी अिच्छा हो अुसे वीरांगना बनना चाहिये। अुसे प्रफुल्लित रहना चाहिये। नहीं तो लोग कहेंगे — अिसकी शादी कर दो।"

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

५१

(सोदपुर
३-१-२७)
सोमवार

चि. मणि

तुम्हारे पत्रोंकी मैंने आशा रखी थी परन्तु अेक भी नहीं मिला। स्वास्थ्य मानसिक और शारीरिक अच्छा होगा। संस्कृत खूब चल रही होगी। मुझे ब्यौरेवार अुत्तर लिखना। ९ तारीख तक कोमीलामें पहुंचा। तारीख तक काशीमें। काशीका पता गांधी-आश्रम बनारस छावनी रखना। बापूको पत्र लिखना। मालूम हुआ है कि वे तुम्हारी चिन्ता कर रहे हैं। हम सब अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
सत्याग्रह आश्रम
वर्धा बी. अन. रेलवे

५२

(काशी
८-१-२७)
शनिवार

चि० मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। वालजीभाई[1]से पढ़नेकी व्यवस्था की है सो ठीक हुआ। अुनसे बहुत सीखा जा सकेगा।

तुम्हें शिक्षणसे क्या मुक्त किया गया है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि जिस पत्रमें ये समाचार थे अुसमें कारण मेरी समझमें नहीं आया। तुम खुद साहसपूर्वक पूछ सकती हो। मैं तो समझता था कि तुम्हें कारण बताया गया होगा। मैं निश्चिन्त था क्योंकि शिक्षा देना हो या न देना हो तुम्हें आश्रममें ही रहना है और वेतन कहो या जो कुछ भी कहो वह चालू ही रहेगा। तुम्हारी जिम्मेदारी मुझे अुठा लेनी है। शिक्षक पर रोष भी न करना। अुन्हें सारा तंत्र चलाना पड़ता है, अिसलिअे अुन्हें जो ठीक लगता है वैसा वे करते हैं। परन्तु कारण जाननेका तो तुम्हें हक है ही। यह जान लेना।

परन्तु अब तो तुम्हें कातना सिखानेकी तैयारी करनी है। अुसके सिलसिलेमें जो सीखना जरूरी हो वह सीख लेना है अर्थात् चरखा सुधार, रूईकी किस्में तोड़ना पीजना कातना पुंजारना आंटी बनाना तार जोड़ना वगैरा सब क्रियायें। माल बनाना आना चाहिये। ताड़ी चढ़ाना

१ श्री वालजी गोविन्दजी देसाअी। अेक आश्रमवासी यंग अिंडिया के अेक सहायक।

२ आजकल तकुअे पर लोहेकी चरखी होती है। परन्तु पहले अुनको मोर लगा कर तकुअे पर लपेटा जाता था अुसे ताड़ी कहते थे।

जाना चाहिये। और जहां जाना होगा वहां जिन क्रियाओंके साथ दूसरा जो कुछ सीखनेको मिले वह सब सीख लेना चाहिये और किसी सिल-सिलेमें संस्कृत और हिन्दी तो पक्की हो ही जानी चाहिये। संस्कृतमें गीताजीके अर्थ व्याकरण-सहित पक्के होने चाहिये। तकली तो है ही। कराचीसे तार आया है कि तुम्हारा नाम बोर्डके सामने क्या है। मैं कुछ हुआ हूं।

मुझे पत्र लिखती रहना और खूब मुस्तैदीपूर्वक काम करना।

अब २ से ८ तारीख तक मोविया मामपुर, वर्धा अकोला अमरावती किस प्रकार कार्यक्रम रहेगा। निश्चित पहुंच नहीं जानता। वर्धा पत्र भेजनेसे ठीक रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

५३

(तार)

वर्धा
१५-१-२७

मणिबहन
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

तुम्हारे पत्रसे आनन्द हुआ। पीजना और ओटना जल्दी पूरा सीख लो।

बापू

५४

(बिहार,
१७-१-२७)
सोमवार

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। तुम्हारे पत्रमें कुछ भी छिपाने जैसी बात नहीं है जिसे कोअी न पढ़े। फिर भी महादेवके सिवा और किसीने नहीं पढ़ा।

---

१ (१९२७)

परम पूज्य बापूजी

जबसे शादी न करनेका निश्चय किया है तबसे आजकी घड़ी तक तो मुझे कभी शादी करनेका विचार आया नहीं। कितनी ही कमजोर होअूं, चित्त कितना ही व्यग्र हो, फिर भी मुझे अैसा नहीं लगा कि शादी करके तो शान्ति मिलेगी। मुझे यही खयाल हुआ है कि विवाह किया होता — मेरी सम्मतिसे या बापूके कहनेसे — तो अधिक दुःखी होती। खुद बीमार होकर आअी अुससे पहले आत्महत्या करनेका विचार दो तीन बरसोंमें अनेक बार हुआ था परन्तु निश्चित विचार कभी नहीं किया। अुस बीमारीके बाद तो अैसा विचार कभी विशेष किया नहीं। कभी बहुत ही व्यग्र हो जाती तब अेक या दोसे अधिक बार यह विचार नहीं आया। परन्तु आत्मघात नहीं करूंगी अितना विश्वास दिलाती हूं। और अेक बार यह देनेके बाद तो हरगिज नहीं करूंगी।

मैं तो संसारमें खूब सुखी हूं। यहां वहां रहकर अनेक लोगोंके हाथ सुख-दुःख सहते हुअे पली हूं। मेरी दृष्टिसे मैंने अब तक कुछ कम कष्ट नहीं भोगा है। जिनमें से ज्यादातर तो बापूको पता भी नहीं होगा। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि मैं शायद ही किसीसे जिन बातोंमें कुछ कहती हूं। और फिर भी जिस समय मुझे दुःख देनेवालोंमें से किसीका

मैं बरबस तुम्हारी शादी हरगिज नहीं करूंगा। और बापू भी नहीं

यहां कोअी बीमार हो और सेवा करने मुझे बुलावें तो मुझे अैसा नहीं लगता कि मुझे जितना सताया था अब मैं क्यों जाअूं? अैसा विचार भी नहीं आता। जितना ही नहीं हो सके तो मैं जरूर जाती हूं। मेरी बचपनकी लगभग सभी तरंगें तरंगें ही रह गयीं। वे सब हवाअी किले नहीं थे। परन्तु परिस्थितियां ही अैसी थीं जिनमें स्वतंत्र जीवने पर भी मैं परतंत्र ही थी। पाटीदार जातिमें जन्मी हुअी अेक लड़की थी अिसलिअे अुसके भी थोड़े-बहुत फल भोगे। मेरी अुमंग मेरा अुत्साह अिस प्रकार बचपनसे ही नष्ट होने लगा था। लगभग १९१५ से अिस प्रकारकी चित्तकी व्यग्रता अनेक बार होती रही है। अुस समय छोटी थी अिसलिअे कोअी यह नहीं कहता था कि अिसकी शादी कर दो। अुस समय मैंने भी कोअी निश्चय नहीं किया था। अुस समय भी और अुसके बाद भी कअी बार अेकांतमें केवल रोकर शान्ति प्राप्त की है। और जबसे मुझे अैसा लगा — मुझे साफ दिखाअी देता है — कि कुछ लोग मानते हैं कि मैं जरा जरासी बातमें रो देती हूं या मुझे रोनेकी आदत पड़ गयी है, तबसे मैं यथासंभव किसीके देखते नहीं रोती अथवा मेरे हृदयमें होनेवाला दर्द मैं जहां तक हो सके किसीसे कहती नहीं।

मैं मानती हूं अब यह स्पष्ट हो जायगा कि मेरी नीरसताका कारण शादीकी शर्म नहीं है। दूसरोंको जो कहना हो भले ही कहें। और मान लीजिये कि पू० बापू या आप मेरी शादी कर देनेका निश्चय करें तो भी अब मैं डरती नहीं कि आप लोग मेरी शादी जबरदस्ती कर सकें। अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। अधिकसे अधिक क्या होगा? झिकझिक झगड़ा और सत्याग्रह जैसी थोड़ी लड़ाअी भी होगी। भले अैसा हो परन्तु अिच्छाके विरुद्ध तो मैं हरगिज ब्याह नहीं करूंगी। अिसी तरह मैं यह भी विश्वास दिलाती हूं कि जब विवाह करनेकी मेरी अिच्छा होगी तब करनेमें शरमाअूंगी नहीं। [illegible] अवश्य मानती हूं कि [illegible] मेरी जबान
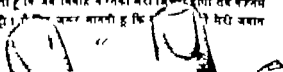
करेंगी। मेरी चले तो मैं लड़कियोंको जबरदस्ती कुमारी रखूं। विवाह करनेको तो लड़कियां मुझे मजबूर करती हैं। अिसलिअे जरा ज्यादा खुशी होती तो मुझमें अितनी अधिक व्यग्रता या गंभीरता न होती। परन्तु अब अिस दिशामें प्रयत्न करनेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती। अब तक मुझे जरूरी लगा मैंने प्रयत्न करके देख लिया। शायद मुझे करना नहीं आया हो। बापूके सामने नहीं बोल सकती अिसमें मेरा ही दोष है अैसा कहा जाय तो मुझे भी मैं स्वीकार करनेको तैयार हूं। अब अिस सम्बन्धमें पहलेकी तरह चर्चा या बातचीत नहीं करनी है। परन्तु अब मैं कुछ भी प्रयत्न नहीं करूंगी क्योंकि मैं स्पष्ट मानती हूं कि अिस बारेमें किसीसे कुछ नहीं हो सकता। विवाह न करने और बिलकुल असमर्थताके सम्बन्धमें अितने स्पष्टीकरणमें मैं विश्राम लेती हूं। फिर भी हमेशा अिस मनोदशा पर काबू पानेकी कोशिश तो मैं करती ही हूं। अकसर अुसमें सफल होती हूं। परन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं टिकती।

मनुके प्रणाम

---

१ पू. बापूके साथ मैं बोलती नहीं थी अिस बारेमें हमारे घरके रिवाजके विषयमें श्री महादेवभाआीके साथ पू. बापूने अिस प्रकार लिखा था:

तुम्हारा पत्र मिला। मनुके बारेमें तुमने लिखा सो जाना। कुछ तो मेरा दोष है ही। परन्तु मैं काममें अितना घिरा रहता हूं कि ज्यादा देर तक कुछ न कुछ काम हाथमें होता ही है अिसलिअे डॉक्टरके यहां जा बैठा हूं। परन्तु जाकर अहमदाबाद रहने आया तब मैं मानता था कि मनुको कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी। मेरे साथ वह खुलकर बोल ही नहीं सकती। मैं अुसे बुलाअूं तो भी वह बहुत हिचकिचाती है। यह अुसीका दोष है सो बात नहीं। मैं खुद भी १ वर्षका हुआ तब तक जहां बड़े हों अुस जगह अेक अक्षर भी नहीं बोलता था। घरके बड़े साथ मौजूद हों तब बोलना नहीं चाहिये यह घरका रिवाज था। यह स्वभाव बन गया। बड़े बूढ़ोंके साथ ज्यादा बोलने ही नहीं।

मेरी तरफसे तो तुम्हें समझदार ही है। तुम्हें न समझनेवाले मुझे तंग करते थे। जिसलिये मैंने भी पूछ लिया। यह भी तुम्हारी व्यवस्था देखनेके बाद। मैं असी जवान लड़कियोंको जानता जरूर हूँ जो स्वयं जानती नहीं किन्तु जिनकी चित्तकी व्यग्रताका कारण शादी न करना ही होता है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिये यह बात नहीं होगी। केवल जाड़ा बाहर रहा और मैंने पालकर खुश बड़ा किया जिसलिये यह मनका भाव पूरी छूट लेता है।

यदि तो पहले-पहल तुम्हारे और बापूजीके साथ खुलकर बरताव करने लगी है। और पत्र लिखना भी पहले-पहल तुम्हारे ही साथ सीखी। यह देखकर मुझे भी खुशी सा अजीब-सा लगा था। परन्तु मेरा खयाल है कि अब तुममें अधिक साहस आता जा रहा है। फिर भी मेरे साथ तो तुमकी हिम्मत खुलती ही नहीं। जिसके सिवा जिस सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष मिलने तब बात करेंगे।

---

१ यह पत्र मुझे भेजते हुये महादेवभाईने लिखा था

बम्बई १४- -१९२१

प्रिय बहन

* * *

जवाब बहुत ही बढ़िया है। यह पत्र ही तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हें हिम्मत रखनी ही चाहिये। पितासे जितनी बात की जा सकती है उतनी दुनियामें किसीसे नहीं की जा सकती। शास्त्रवाक्य असा है कि पिता गुरु और वैद्यके आगे तो कुछ भी छुपाकर रखा नहीं जा सकता। असके सामने अन्तरके द्वार खोले जा सकते हैं। तुम्हें तो असे महान पिता मिले हैं। असे तुमसे बातें करनेकी जिज्ञासा रहती है फिर भी तुम अनसे नहीं मिलती यह तुम्हारे ही साहसकी कमी है। तुम्हारी जैसी निर्दोष बालिकाको तो दुनियामें किसीके पास जाने या बातें करनेमें संकोच होना ही नहीं चाहिये। यह पत्र मिलनेके बाद आश्रम मिलना। सब बातें करना और मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा महादेव

परन्तु तुम्हें सावधान करना मेरा धर्म था और यह बताना भी कि अेक बार अेक बात कहनेके बाद शादीका विचार न किया जाय अैसा कुछ नहीं है। हां यदि व्रत ले लिया हो तो जरूर बात खतम हो जाती है। फिर तो आसमान टूट पड़े तब भी व्रतको तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु तुमने जब तक व्रत न लिया हो तब तक मेरे जैसा भी तुमसे पूछेगा। दूसरे तो आग्रह भी करेंगे। जिसका अर्थ यह नहीं कि मैं चाहता हूं कि तुम व्रत ले लो। यह तो जब व्रतके बिना न रहा जा सके तब अपनी अिच्छासे लेना। अब मेरे लिअे तो तुम्हारे विवाहकी बात करनी रह नहीं जाती। अितना ही नहीं मैं औरोंको भी अुससे रोकूंगा। परन्तु तुम्हें व्यग्रावस्थासे निकल जाना चाहिये। कुमारीपनको हर तरहसे सुशोभित करना चाहिये। ब्रह्मचर्यका तुम्हें धार्मिक अर्थ करना है और अुससे धार्मिक फल पैदा करनेके लिअे यह ब्रह्मचर्य तुम्हें पालना है जिसके बारेमें मैंने अभी नवजीवन में छप रही आत्मकथा में लिखा है। अिसलिअे तुम्हारी प्रकृति शान्त प्रफुल्लित अुद्यमी और समभावी हो जानी चाहिये।

मार्गोपदेशिका बार बार पढ़कर अुसे पचा डालो। गीताजीके प्रत्येक शब्दको अुसके नियमोंके अनुसार समझना।

ओटना-पींजना सीख लेनेके बारेमें मैंने तार दिया है। मैंने कराची भी तार दिया है। अभी तक नारणदासका जवाब नहीं आया। आये या न आये मेरे पास अैसी मांग तो और जगहसे भी आती है। अलग अलग जगह तुम्हें कताअी सिखानेके लिअे भेजते रहनेका विचार है। मैंने ५ रु और सफर-खर्चकी मांग की है। जिससे अनुभव भी काफी होगा। बादमें देख लेंगे। यहां अभी किसी काममें न लगना। १ रुपये तो लेती ही रहो। अुनमें से बचें तो भले ही बचें। मैं हिसाब मांगूंगा।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

गुरुवार

(१-२-२७)

चि॰ मणि

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। हिन्दी शुरू कर दी यह अच्छा किया। जो करो अुसमें स्वास्थ्यकी रक्षा करना। तो मैं निश्चिन्त रह सकूंगा।

अक्षरोंको बिलकुल मत बिगड़ने दो। भले ही लिखनेमें देर लगे। थोड़े समयमें सुधर जायेंगे और गति बढ़ जायगी।

पूनिया तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती है। मैं चाहता हूं कि स्त्रीकी सब क्रियाओंमें तुम्हें पहली श्रेणी मिले। तुम्हारा अच्छेसे अच्छा अुपयोग कन्या-पाठशालाओंमें अथवा शिक्षणालयोंमें होनेवाला है। और अन्तमें ईश्वर तुम्हारी तबीयत ठीक रखे तो गरीब बहनोंके कल्याणमें करना है। स्त्रियोंमें जो काम करना है अुसका कोअी अन्त नहीं है और वह पुरुषोंसे तो मर्यादित रूपमें ही हो सकता है।

सोमनाथलालकी आलोचना मुझे सब लिखना। और शंकर[1] को प्रेमपूर्वक पढ़ाना। अेक दो दिन छूट करके भी पढ़ाया जा सकता है। हमेशा मुझसे नाम लेनेकी जरूरत नहीं होती। तुम्हें दूसरोंके साथ रहनेकी शक्ति पैदा करनी है। जब मैं महादेव और देवदासकी तरह तुम्हें भी चाहे जहां निर्भय होकर रख सकूं तब मैं प्रसन्न होअूंगा। किसीसे तुम्हें दुःख न हो किसीको तुम दुःख न पहुंचाओ तब मुझे सन्तोष होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल

सत्याग्रह आश्रम

साबरमती

---

१ आश्रमका संयुक्त भोजनालय संभालनेवाला अेक भाअी।

५७

बुधवार
नासिक जाते हुये
(१८–२–२७)

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। ऐसा दीखता है कि मैं यहां जल्दीसे जल्दी ८ तारीखको पहुंचूंगा। अभी तक कराचीसे कोभी खबर नहीं आयी।

गंगाबेनी क्यों बीमार होती ही रहती है? उनका जलवायु परिवर्तन करने कहीं जानेका विचार हो तो वैसा करें। तोतारामजी[1] और गंगाबेनी दोनोंसे पूछना। खाने-पीनेमें परहेजसे रहती है क्या?

मैं आकर संस्कृतकी और पींजने कातने वगैराकी परीक्षा लूंगा। तुम्हारे गुजराती अक्षर अभी और अच्छे होने चाहिये। गुजराती व्याकरणका अध्ययन खूब बढ़ा देना।

संयुक्त भोजनालयको संपूर्ण बनानेकी ओर आजकल मेरा मन अधिक रहता है। यह प्रयोग पूरा होना ही चाहिये। जिसमें भरसक मदद देना।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

---

१ आश्रमवासी दम्पति।

५८

मौनवार
सेगांवी
(२८-३-२७)

चि मणि

मेरी बीमारीका[1] खयाल भी न करना। जो वर्ष बीत जाते हैं अुनका हम खयाल नहीं करते। अैसे ही विकारी मनुष्योंके नसीबमें बीमारी भी वर्षोंकी तरह लिखी हुअी ही रहती है। कोअी यूं ही चले जाते हैं। फिर भी जाना तो सभीको है फिर हर्ष-शोक क्यों?

अभी तक तुम्हारे बारेमें तार नहीं आया। अब तो आना चाहिये। तैयारी रखना। संस्कृत कितनी कर ली? पींजने-कातनेका काम अब तो ठीक हो ही गया न?

बापूके आशीर्वाद

यद्यपि अेक ही दिन लिखा गया है फिर भी यह पत्र बहनोंके पत्रके बाद मिलेगा क्योंकि डाकके समयके बाद लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

५९

रविवार
(१९२७)

चि मणि

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि तुम जान बूझ कर मुझे पत्र नहीं लिखती। परन्तु अैसा करनेकी अब तो जरूरत नहीं। संस्कृतकी पढ़ाअी कितनी हुअी? अब कातने-पींजनेमें पहला नम्बर आयेगा या नहीं?

---

१ पू. बापूजीको रक्तचापका दौरा पहले-पहल हुआ।

२ ५८ से ६७ नम्बर तकके पत्र आश्रमकी डाकके साथ आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम आये थे। वे आश्रमकी डाकमें आये हुअे पत्र जिनके हों अुन्हें भेज देते थे।

कराचीकी कोअी खबर नहीं। तबीयत कैसी रहती है? मैं ठीक होता जा रहा हूँ। मेरी चिन्ता करनेका कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

६०

शुक्रवार,
(१९२७)

चि मणि

तुम्हारे पत्र मिले हैं। यदि सम्मिलित भोजनालयमें खाना खाया जा सके तब तो बहुत ही अच्छा हो। अिस बारेमें मैंने शंकरको पत्र लिखा है। अुसे पढ़ लेना। चि चंपा[1]की संभालका भार तुमने लिया यह बहुत अच्छा किया।

अब तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

६१

(नंदीदुर्ग
२५-४-२७)
सोमवार
चैत्र वदी ९

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। अुसका अंतिम वाक्य अधूरा है और हस्ताक्षर तो है ही नहीं। और न तिथि है। यह तो बड़ी अुतावलीका सूचक है। हमारे यहां कहावत है कि धीरजका फल मीठा होता है। अुतावलीसे आम नहीं पकते — अैसी भी हमारी अेक कहावत है। अुसका अंग्रेजी अनुवाद Haste is waste किया जा सकता है। तुम बापूको अपनी साड़ियोंमें से दो दे आयी यह तो बहुत अच्छा किया। अिस

---

१ पत्र नं ५ देखिये।

२ डॉक्टर प्राणजीवनदासकी पुत्रवधू।

नियमको जारी रखो। मुझमें आश्रमवासी तथा अमोला शरीक हों तो कैसा अच्छा हो!

कराचीका काम नहीं होगा अैसा माननेका कारण नहीं। अैसा ही हो तो भी दूसरी जगहें तो तैयार ही हैं। परन्तु जिसका निश्चय हो जाय तो दूसरा विचार करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

६२

(नन्दीदुर्ग
२–५–२७)
सोमवार

चि मणि

तुम्हारा पत्र मिला।

बापू लिखते हैं कि तुम्हारा शरीर दुबला हो गया है। अैसा क्यों? शरीर तो मजबूत और तेजस्वी होना चाहिये। आदर्श कुमारीमें तो वीरता सभी तरहसे होनी चाहिये।

यदि कराची जाना न हो तो मेरा विचार तुम्हें दिल्ली भेजनेका है। वहां चपावतीको भेजनेकी बात थी। वहां बहुत लड़कियां हैं और बहुत काम है। दिल्लीका प्रबन्ध तो अच्छा है ही। आजकलमें कराचीसे तार मिलना चाहिये।

बहनोंमें से किसीको चोरोंका डर रहा ही करता हो तो मुझे बताना।

राधा (भाभी)को कितनी चोट आयी? क्या वह डर गयी थी? मुझे अलग पत्र लिखनेका समय अभी नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ आश्रममें रातको पहरा देनेमें बहनें भी शरीक होती थीं। अेक बार मगनलालभाईके घरमें चोर आये तब राधा जाग गयी थी।

६३

(नंदीदुर्ग
४-५-२७)
वैशाख सुदी ३

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिला। गंगाबेनसे कहना कि डॉक्टर कहे वैसा जरूर करें और मूंगका पानी पीना हो तो पियें। यहां बैठा हुआ मैं बहुत मार्गदर्शन तो कैसे कर सकता हूं? ये नये डॉक्टर कौन हैं? और कबसे आने लगे हैं?

पहरेमें किन किन बहनोंने नाम लिखवाये हैं?

मेरी तबीयत अच्छी होती जाती है। मुझे नियमपूर्वक लिखती ही रहना। तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहनसे पत्र लिखनेको कहना।

६४

६५

(१९२७)
गुरुवार

चि॰ मणि

तुम्हें बुखार आ गया और तुम्हें कमजोरी रहती है यह मुझे अच्छा नहीं लगता। धूपमें बाहर मेहनत नहीं करनी चाहिये। अब तो समय है या नहीं यह मैं नहीं जानता। परन्तु कांग्रेसमें आनेके लिये तुम्हारा चुनाव हुआ होगा तो मुझे खुशी होगी ही।

बापूके आशीर्वाद

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें अखबारोंमें कुछ आये तो समझ लेना कि अुसमें अतिशयोक्ति है। रक्तचापका अुतार-चढ़ाव तो अिस दौरेमें होता ही रहा है।

६६

नंदीदुर्ग
(१९२७)

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिला। कभी कभी अैसे समाचार देना।

हम तो न घरके हैं न बाहरके। रास्तेमें बैठे हैं। पूज्य बापूजीकी तबीयत मामूली रहती है। डॉक्टर आराम लेनेको कहते हैं। खुराकमें रोटी नहीं खाते। फल खाते हैं।

कृष्णदास[1] की तबीयत साधारण है। कमजोरी मालूम होती रहती है। बाकी सब मजेमें हैं। यहां राजगोपालाचार्यजी[2] तथा

---

१ Seven months with Mahatma Gandhi के लेखक। अेक समय बापूजीके मंत्रियोंमें थे।

२ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाडके गांधीजीके मुख्य साथी। १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल बनाये तब मद्रास प्रांतके मुख्यमंत्री। १९४६–४७ की अंतरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और

गंगाधरराव[1] बेलगांववाले भी अब दो-चार दिन बाद आयेंगे। चि. कान्ति और रसिक मानें तो अुपदेश देना। सुरजबहन क्या करती है? कहां है? अुन्हें मेरा आशीर्वाद। आश्रममें जेकीबहन डॉक्टर महेताकी लड़की आयी हुआी है। अुन्हें यहां अच्छा लगता है या नहीं?

बहनोंकी प्रार्थनामें भाग लेती हो या नहीं? पूज्य वसुमतीबहनकी तबीयत अच्छी होगी। यहां मंजुबहनका पत्र आया था। अुन्हें मेरा जय श्रीकृष्ण कहना।

अिस सप्ताहमें बहनोंने खूब अुत्साह दिखाया है। अिसलिअे मैं बधाअी देती हूं। यहां प्रार्थना बहुत अच्छी चल रही है, यह जानकर आनन्द होता है।

बापूके आशीर्वाद

६७

नंदीदुर्ग
वैशाख सुदी १२
(१२-५-२७)

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दोनों बहनोंने नाम लिखा दिया सो ठीक किया।[3] मैं तो चाहता हूं कि जितना शरीर सहन करे अुतना पहरा तुम्हारे द्वारा भी हो (भले ही किसीके साथ रहकर)। डर जैसा भूत अिस संसारमें दूसरा कोअी नहीं और वह तो महावरेसे और अीश्वरकी कृपासे ही जाता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि चोरोंके

रसद-मंत्री। १९४७–४८ में पश्चिम बंगालके गवर्नर। १९४८ में पहले भारतीय गवर्नर जनरल। जुलाई १९५ से अक्तूबर १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री। आजकल मद्रासमें निवृत्तिमय जीवन बिता रहे हैं।

१ श्री गंगाधरराव देशपांडे। कर्नाटकके नेता।

२ गांधीजीके सबसे बड़े पुत्र हरिलाल गांधीके लड़के।

३ अुन दिनोंमें चोरियां होनेसे आश्रममें पहरा देनेका निश्चय हुआ था। अुसमें नाम दर्ज करानेका अुल्लेख है।

जब सचमुच विश्वास हो जायगा कि हमारा चौकीदार भी मुन्हें मारनेके लिये नहीं परन्तु मरनेके लिये ही खड़ा है और पहरा देनेवाले आश्रमवासी चौकीदार जैसे वैतनिक आदमी नहीं परन्तु गृहस्थी हैं तब चोर हमारा पिंड छोड़ देंगे। तुममें से कोओी तो किसी दिन आत्मबल दिखायेगा और अुन लोगोंको प्रेमसे वशमें करेगा। परन्तु जिसमें शक नहीं कि यह सब साँपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। संभव है तुममें से किसीको मार भी खानी पड़े मरना भी पड़े। रोज देवताकी मार कौन नहीं खाता? स्त्री पुरुष बालक सभी अुसकी चपेटमें आ जाते हैं। राजा कितनी बार गिरी? रुक्मी को क्या हुआ? बापूके अस्पतालमें कितनी लड़कियां थीं? अगर यह सब हम सहन करते हैं तो चोर अित्यादिकी मार भी हम हंसकर सहन करें जिसमें आश्चर्य क्या? सिपाहियोंसे रक्षा चाहनेवालोंको तो जरूर अचम्भा होगा मगर हमें नहीं होना चाहिये।

तुम्हारी पूनियां मैं कल कात रहा था तभी मिलीं। अुनमें से कुछ तुरंत कातीं। अेक भी तार नहीं टूटा। और आज मैंने सूतका कस निकालनेका अेक विधी अुपाय ढूंढ़ा है। अुसमें तुम्हारी पूनियोंसे निकले हुअे तारकी बराबरी अेक भी तार नहीं कर सका। जिससे अच्छी पूनियां मेरे हाथमें कभी नहीं आओी। जिनके जैसी शायद अेक दो बार आओी हों तो भले ही आओी हों। परन्तु मैं नहीं मानता कि तुम्हारी पूनियोंसे अच्छी पूनियां कोओी बना सकता है। तुम्हारी पूनियां मिलनेके बाद दूसरी पूनियोंसे कातना मुश्किल हो सकता है। जैसी पूनियां है वैसे अक्षर कर लो कातना भी वैसा ही करो सभीमें पहला नम्बर रखो यह मेरी अिच्छा और आशा है।

कपासीया बक पन आ गया। नारणदास की मैरहाजिरीमें काम अव्यवस्थित हो गया है। जिसलिये वे अेक महीना मांगते हैं।

---

१ श्री मगनलाल गांधीकी लड़की।

२ श्री नारणदास खुशालदास गांधी। बापूजीके भतीजे। अब सत्य आश्रमके व्यवस्थापक।

मैंने लिखा है कि यदि मुझे तुम्हारी हाजिरीकी जरूरत ही हो तो भले ही अेक महीना ले। घरके कारण अथवा तुम्हें वहां बीमारीके लिये अथवा हम पर कोअी अुपकार करनेके खातिर वे प्रयत्न करते हों तो बिलकुल न करनेको मैंने लिख दिया है। और तारसे जवाब मांगा है। वहां खास जरूरत हो वही जाना है। जिस बीच दोनों हुअी चीजोंको पक्का करती रहो।

बापूके आशीर्वाद

६८

नंदीदुर्ग
२१–५–'२७

चि॰ मणि

तुम्हारा पत्र मिला।

कदी नहीं हारना भले साठी जान जाये यह गीत तो सुना है न? जिसलिये भले ही हमारी जान भी चली जाय तो भी क्या? कातने और अक्षरोंके मामलेमें क्या हार मानी जा सकती है? सावधान करनेको मैं अेक चौकीदार तो बैठा ही हूं। बूंद बूंद करके सरोवर भरता है और रत्ती रत्ती करके पाल बनती है। अुद्यमके आगे कुछ भी असंभव नहीं। निराश न होना। नियमपूर्वक कातनेसे गति जरूर बढ़ेगी और नित्य [illegible] लिखना सीख और सुन्दर अक्षर लिखनेकी आदत डालनेसे अक्षर भी [illegible] सुधरेंगे। मेरे पास अेक सुन्दर अुदाहरण है कि जिसके अक्षर [illegible] खराब [illegible] अभ्याससे अच्छे हो गये। कातनेके कामका भार [illegible] अभ्यास किया [illegible] तुम [illegible] न छोड़ना और [illegible] परन्तु हिसाबके [illegible] और [illegible] निश्चित करके दो घंटे कातनेका समय [illegible] परन्तु जितना समय निश्चित करो अुतने [illegible] समय तक कातनेकी

अपेक्षा अेकाग्र चित्तसे धीरजके साथ थोड़े समय कातनेसे कस बढ़ेगा और गति बढ़ेगी और सब तरहसे अच्छा सूत निकलेगा।

गंगादेवीके बारेमें मुझे खबर देती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

६९

१९२७
मौनवार

चि॰ मणि

तुम्हारा कार्ड मिल गया था। जो पत्र तुम लिखनेवाली थी वह नहीं मिला। मातर[1] में किस काममें लग गयी हो और कौन कौन यह लिखना। कुछ भी सेवा करते हुये शान्ति न खोना।

काका (विट्ठलभाओ) को मैंने लिखा था कि जब आप अपनी कुरसी पर बैठकर तकली चलायेंगे तब मणिबहन आयेगी। अुसके अुत्तरमें वे लिखते हैं कि मणिबहन तो पागल है। मैंने लिखा है कि वे पागल हैं जिसीलिये पागलके साथ रहती है।

यशोदा[2] के लड़केका नाम क्या रखा है?

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल
मातर

---

१ मातरमें बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिये मैं गयी थी।
२ मेरे भाभी डाह्याभाईकी पत्नी।

मौनवार
(१९२७)

चि. मणि

तुम्हारा पत्र मिल गया। गाँवोंका अनुभव लिखकर रखना चाहिये जिससे भविष्यमें काम आये। कहीं भी अधीरता न रखी जाय। निराश न होना। अशान्त न होना। मुझे तो तुमसे बहुतसे प्रश्न पूछने होंगे। परन्तु वे अभी नहीं। मिलेंगे तब या काम हो जाने पर। मुझे पत्र नियमपूर्वक लिखती रहना। तबीयत हरगिज न बिगड़ने देना।

काका (विट्ठलभाअी) से मिली होगी। काका खूब काम करनेकी अुम्मीदसे आये हैं। वे सफल हों।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
मातर

---

१ काका (माननीय विट्ठलभाअी)। १९२७ के चौमासेमें गुजरातमें अतिवृष्टि हुअी और बहुत नुकसान हुआ। अुस समय गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे पू. बापूने बाढ़-संकट-निवारणकी व्यापक योजना बनाअी थी। विट्ठलभाअी बड़ी व्यवस्थापिका सभाके अध्यक्ष थे। गुजरातके मतदाता-मंडलकी तरफसे वे व्यवस्थापिका सभामें गये थे। अिसलिअे गुजरातकी आफतके समय यह सोचकर कि अुन्हें गुजरातकी मदद करनी चाहिये वे नड़ियादको मुख्य केन्द्र बनाकर वहाँ रहे थे और गुजरातमें सब जगह दौरा किया था। अुनके आग्रहके कारण वाअिसरॉय भी गुजरात आये थे। पू. बापूजी अुस समय मैसूरमें नंदीदुर्गमें आरामके लिअे गये हुअे थे। बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिअे वे गुजरातमें आना चाहते थे। परन्तु पू. बापूने लिखा था यदि और किसी कारणसे नहीं तो अिस बातकी जाँच करनेके लिअे ही कि आपकी अितने वर्षों तक दी हुअी तालीमको हम हजम कर सके हैं या नहीं आप यहाँ न आअिये।

७१

(साबरमती
१५-४-२८)
रविवार

चि मणि

वहां जानेके बाद पत्र तक नहीं यह ठीक नहीं। वहांका कार्यक्रम बताना। अनुभव लिखना।

गांवका मन पढ़कर खादी चलानेकी भी करे तो लिखना।[1] (राष्ट्रीय) सप्ताह[2] कैसे मनाया?

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली
सूरत होकर

७२

(सत्याग्रह आश्रम
साबरमती २१-५-२८)
सोमवार

चि मणि

चि कांति (पारेख) के नाम लिखे गये पत्रमें शारदाबहन[3] के सम्बन्धमें तुमने जो टिप्पणी लिखी है वह मैंने पढ़ी। जरा खेद हुआ। मैं तो नित्य स्मरण करता हूं। जो कोअी यहांसे जाता है अुसे

---

१ लोगोंके कामोंमें खादीका प्रचार करनेके लिये।

२ ६ अप्रैल १९१९ का दिन रौलट कानूनके विरोधमें सत्याग्रह करनेके लिये नियत हुआ था। अुस दिनसे देशमें दमनका दौर चला और १३ अप्रैलको जलियांवाला बागमें हत्याकांड हुआ। अुस अेक सप्ताहमें हुअी अैतिहासिक घटनाओंकी यादमें यह सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताहके रूपमें मनाया जाता है।

३ श्री शारदाबहन कोटक अेक आश्रमवासी।

पूछता हूं। मीराबहन[1] ने तो बहुत कुछ कहा है। यह सब क्या लिखा जा सकता है? परन्तु मैं आशा छोड़ नहीं बैठा हूं। यह मानकर बैठा हूं कि सब ठिकाने आ जायेंगे। लिखनेका अुत्साह आने तब लिखना। वहांके (बारडोलीके लगान-सत्याग्रहके समयके) तुम्हारे कामसे वल्लभभाईको संतोष है, यह मैंने बम्बअीमें अुनके मुंहसे समझा। अितना संतोष हुआ। मेरे लिये अितना काफी नहीं। मुझे तो बानीमें शान्ति संतोष विवेक मर्यादा निश्चय सूक्ष्म सत्य-परायणता तीव्रता अध्ययन ध्यान अित्यादि चाहिये। नहीं तो कुमारी और सेविकाको शोभा देनेवाला तुम्हारा जीवन नहीं बनेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली
सूरत होकर

७३

(सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२८-५-२८)

चि॰ मणि

मैंने तुझे मूर्ख माना है जो बिना विचारे नहीं। यह तू सिद्ध कर रही है। मीराबहन जो कहे वह मेरे लिये कभी बेरहम नहीं हो गया। वह बहुत निर्मल है। तू यहां होती तो तुझसे ही कहता।

१ मिस स्लेड। अुनके पिता ब्रिटिश नौसेनाके बड़े अधिकारी थे। पू॰ बापूजीकी पुस्तकें पढ़कर अुनसे आकर्षित होकर वे भारत आयीं और अपने जीवनमें अुन्होंने भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा। आजकल हृषीकेशकी तरफ गोसेवाका काम कर रही हैं।

तू नहीं थी जिसलिये अमीदासभाओीसे कहा। परन्तु किसी दिन तो मूर्ख न रहकर तू सयानी बनेगी यह आशा रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

चि मणिबहन पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली
सूरत होकर

७४

स्वराज्य आश्रम
बारडोली
शनिवार
(४–८–'२८)

चि मणि

स्वामी (आनंद) तो यहां नहीं हैं। परन्तु तुम्हारा अुनके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ा। आनेका हठ करनेकी जरूरत नहीं। सिपाहीका धर्म अपना शरीर ठीक रखना और सरदार कहे सो आनंदित होकर मानना है। तबीयत तो जल्दी ही अच्छी हो जायगी यदि अच्छी बनानेमें मन लगाया जाय।

बापू और महादेव तथा स्वामी पूना[2] में हैं। आज वहांसे चले हुवे। पूनासे तार आना तो चाहिये था पर नहीं आया। समझौता

---

१ श्री अमीदास आशर। अेक आश्रमवासी। मभी १९४९ में गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री नियुक्त हुअे। सितम्बर १९५२ में त्यागपत्र दिया। परन्तु फरवरी १९५३ में नये मंत्रीने काम संभाला तब तक अुस पद पर बने रहे। बादमें खादी ग्रामोद्योग बोर्डमें। १९५७ में निवृत्त हुअे।

२ सरकारके साथ समझौतेकी बातचीतके लिये बम्बअीकी अुस समयकी कौंसिलके वित्तमंत्री सर सी वी मेहताके बुलाने पर पूना गये थे।

होगा या नहीं यह अभी नहीं कहा जा सकता। मुझे लगा करता है कि अब सरकारमें लड़नेकी शक्ति नहीं है। लोकमत अुसके बहुत विरुद्ध है और अुससे बहुत भूलें हुई हैं। आज सरजोम हो जाता। आजकल बरसात नहीं है। आज बहुतसे लोग तो सूरत जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
ठि. वल्लभभाई बैरिस्टर,
खमासा चौकी
अहमदाबाद

७५

आगरा
१८-९-२९

चि. मणि

तेरा पत्र मिल गया। यशोदा आ गयी यह बड़ा अच्छा हुआ। अुसकी तबीयतके समाचार खेदजनक हैं। परन्तु अब वहां है अिसलिये ठिकाने पर है और संभव है कि देखभालसे अच्छी हो जायगी।

वल्लभभाई वहां पहुंच गये हों तो कहना कि लखनअूमें ता. २७ को अुनसे मिलनेकी आशा रखता हूं।

भाभी चिमनलालकी पत्नीके बारेमें जाना।[1] यह बहुत दुःखसे *हुआ यही ऐसा मैं मानता हूं।* भाभीके बारेमें परा आश्चर्य होता है। परन्तु आजकी हवामें तो यह चीज नयी ही है, तब आश्चर्य क्या? मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अभी धूप यहीं फल पर हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
ठि. श्री वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
अहमदाबाद,
बी बी सी आई आर

---

१ श्री चिमनलालकी पत्नीके देहान्तका अुल्लेख है।

७६

(सत्याग्रह आश्रम
साबरमती)
९-१-३

चि० मणि

तेरे पत्रकी मैं तो रोज बाट देखता था। तेरी याद किये बिना अेक दिन भी नहीं गया। परन्तु तुझे मैं लापरवाह लगूं अिसे समझता हूं। अिसके लिअे मेरी बचावनाक स्थिति जिम्मेदार है। मुझे किसीके सामने देखने तकका समय नहीं मिलता। तू कहां है, क्या हो रहा है अित्यादि जानकर संतोष कर लिया करता था।

बापू तो तेरे बारेमें कुछ कह ही नहीं गये। अुन्हें कहां पता था? तुझे वहीं रहना है जहां तू शांत और सुखी हो सके। जेलमें तो समय आने पर जाकर जा सकेगी। अिस बारेमें महादेवने लिखा है। आश्रममें तुझे अच्छा लगे अिसे समझता हूं। परन्तु मेरी राय है कि यह ठीक नहीं। फिर भी अिसमें निग्रह करना नहीं देता। अिसलिअे शान्त रहता हूं। मेरी यही अिच्छा है कि तू जहां रहे वहां सुखी रहे।

---

१ पू० बापूजीके दाण्डीकूचके मार्गके सिलसिलेमें व्यवस्था वगैराके लिअे गये थे। ० मार्गमें रासमें जानेमें यह हुक्म मिला कि अमुक प्रकारका भाषण न दें। पू० बापूने कहा कि वे अिस आज्ञाका अुल्लंघन करेंगे। अिसलिअे तुरत ही गिरफ्तारी हुअी। फिर मामला चलाकर तीन मासकी सादी कैद और पांच सौ रुपये जुर्माना अथवा तीन सप्ताहकी अधिक कैदकी सजा दी गअी। अिसलिअे आश्रमके या किसी व्यक्तिके बारेमें कोअी सूचना देने या समझानेका अुन्हें समय ही नहीं मिला था। अुस समय मैं बीमार होनेके कारण अिलाजके लिअे बम्बअी गअी हुअी थी।

मैं मंगलवार तक गिरफ्तार होनेकी आशा रखता हूं।

तू बहादुर बनना। अपना शरीर सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
c/o डाह्याभाई वल्लभभाई पटेल
श्रीराम निवास
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई–४

७७

(१९१)
बुधवार

चि० मणि

तेरे दो पत्र मिले हैं। चलती रेलमें लिख रहा हूं। तुझसे हो सो दृढ़तासे कर गुजरना। तू अपने दूसरे पत्रमें लिखती है वह प्रसंग उपस्थित हो तो तू सिकारपारका अथवा यहाँ पहुंच जाना। मेरे पास आ जायगी तो अधिक समझाऊंगा और तुझे शान्ति भी होगी। मंगलवार या बुधवारको आना। जिस बीच तू वहांके अधिक समाचार भी दे सकेगी। थोड़ी बहनोंसे भी जो हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
नडियाद

७८

(१९३१)

चि० मणि

तेरा पत्र मिला। कल अन्तमें तेरे विषयमें पत्र लिखना रह ही गया। अब तो तू आयगी ही।[1] अिसके साथ पत्र भेज तो रहा हूँ यद्यपि अुसकी कोअी जरूरत नहीं है।

देखना मेरी बापूकी और अपनी लाज रखना। अपनेको शोभित करना। गीता और गुजराती पढ़ने और समझनेका प्रयत्न करना।

मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना।

खेड़ामें नमकके गड्ढोंमें जहर डालनेकी बात सुनी थी। अुसकी जाँच करना और मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
नड़ियाद

७९

१९–५–३

चि० मणि

ओीश्वर तेरी रक्षा करेगा। रोज तुझे याद करता हूँ। अब तू अुदास नहीं रहती होगी।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
नड़ियाद

---

१ मैं सूरत जिलेमें दारूकी दुकानों पर पिकेटिंगका काम करती थी। अुस काममें लगी थी तब खेड़ा जिला समितिने खेड़ा जिलेमें अिस कामके लिअे मेरी माँग की थी। अिसलिअे वहाँ जानेके बारेमें अुल्लेख है।

८०

य. मं.[1]
१४-७-३

चि. मणि (पटेल)

वाह! सच्चे बापू[2] आ गये तो नकली बापूको भूल गयी क्या? और अब तो व्याख्यान देनेवाली हो गयी फिर क्या पूछना? तेरी तबीयत शारीरिक या मानसिक कैसी है? मेरे पत्र तो मिल गये न?

डाह्याभाई कैसे हैं? यशोदाका अब क्या हाल है? बिलकुल अच्छी हो गयी क्या?

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
c/o कानूगाका बंगला
एलिसब्रिज
अहमदाबाद

---

१ यरवडा मंदिर। यरवडा जेलसे लिखे गये पत्र पू. बापूजी आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम भेजते थे। और वे सबको पत्र पहुंचाते थे।

२ पू. बापू तीन मास और तीन सप्ताहकी पूरी सजा भुगतकर ता. २६ जूनको छूटे थे।

८१

य० मं०
२८–७–३०

चि० मणि (पटेल)

तेरी मराठी चिट्ठी सप्ताहमें मिली। तू काममें है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया यह तो जानता हूं। फिर भी तेरे पत्र पाना चाहता हूं।

खूब जियो खूब सेवा करो।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
श्रीराम मैन्शन
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बई

८२

य० मं०
१८–८–३०

चि० मणि (पटेल)

तेरा पत्र मिला। बापू मेरे साथ चार पांच दिन रहकर गये।[1] तेरे समाचार मिले। ईश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभाईसे लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
श्रीराम मैन्शन
पारेख स्ट्रीट
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बई

---

१ उस समय पू० बापूजी तथा पू० बापू दोनों यरवडा जेलमें थे। परन्तु दोनोंको अलग अलग रखा जाता था। सरकारके साथ समझौता करानेके लिए सर तेजबहादुर सप्रू तथा श्री जयकरने बातचीत शुरू की थी। उस सिलसिलेमें परामर्श करनेके लिए कांग्रेस कार्यसमितिके कुछ सदस्योंको यरवडा जेलमें भेजकर रखा गया था।

८१

य. मं.
२१–८–३

चि. मणि (पटेल)

अपना अनुभव तूने ठीक ठीक बताया है। तू बापूसे मिल पाअी यह भी जाना। बापू तो नहीं मिले। मुझे बराबर लिखती रहना। बम्बअीमें हो तब पेरीनबहन[1] और लीलावतीसे[2] मिलना।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि. मणिबहन पटेल
श्रीराम निवास
पारेख स्ट्रीट,
सेन्डहर्स्ट रोड
बम्बअी

---

१ स्व. दादाभाअी नवरोजीकी पोती।

२ श्री कन्हैयालाल मुंशीकी पत्नी। बादमें राज्यसभाकी सदस्य।

८४

म मं

७-९-३

चि. मणि (पटेल)[1]

तेरा पत्र मिला। बापू तथा जयरामदास[2] दो दिन और साथ रहकर चले गये। अितनेमें तेरा पत्र मिला। अिसलिअे बापूने भी पढ़ा। बापूके नामका मैंने पढ़ा। मां सम्बन्धी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताओं अैसी ही थीं। अिसलिअे तूने जो वर्णन किया है, अुस पर आश्चर्य नहीं होता। फिर भी यह प्रेम अुसमें मोह होने पर भी अितना अुज्ज्वल है कि नित नया जैसा ही लगता है। पत्र लिखनेके नियमका भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुंच जाय तो दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

---

१ बापूजीको आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी छूट थी। अिसलिअे ये पत्र बापूजी आश्रममें भेजते थे और वहांसे जिस जिसके पत्र होते अुन्हें भेजनेकी व्यवस्था होती थी।

२ श्री जयरामदास दौलतराम। सिन्धके पू. बापूजीके मुख्य साथी। १९१ में कराचीमें अेक सभा पर पुलिसने गोली चलाओ थी अुसमें अेक गोली अिनकी पेटसे पार हो गयी थी। १९११ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अन्तरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १९४७ से १९५ तक केन्द्रीय सरकारमें खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५ से १९५६ तक आसामके गवर्नर। आजकल दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी के मुख्य संपादक।

३ समझौतेकी जो बातचीत चल रही थी अुसके सिलसिलेमें फिर अिन्हें गिरफ्तार किया गया था।

८५

यरवडा मंदिर,
१४-९-३

चि० मणि (पटेल)

तू आशा रखती है, अिसलिअे यह लिख रहा हूं। तुझे कैसे मिलेगा यह तो ईश्वर ही जाने। तेरा पत्र बापूको पढ़नेके लिअे भेज दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। अब तो जबरदस्तीकी शान्ति[1] है। अुसका पूरा अुपयोग करना। अिसे भी मैं अैसा मानता हूं। स्वास्थ्यको संभालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, अित्यादि बातें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

८६

य० मं०
२७-९-३०

चि० मणि (पटेल)

तूने मुझे हर हफ्ते पत्र लिखनेको तो कहा है परन्तु यह मिलेगा क्या? तू लिख सकेगी या नहीं अिस बारेमें भी शंका है। देखना शरीरको संभालना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना और हिसाब रखना।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

८७

य० मं०
१४-१२-३

चि० मणि

अब तू बाहर निकल आयी तो तेरे ब्यौरेवार पत्रकी आशा रखता हूं। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

---

१ आर्थर रोड जेलमें।

८८

य॰ मं
२१-१२-३

चि॰ मणि (पटेल)

तू लिखे या न लिखे मैं तो लिखता रहूँ न? अपना वचन भूल गयी न? मुझे तू पत्र लिखती ही रहनेवाली थी। जागें वहींसे सवेरा भूलें वहींसे फिर गिनें। अब वचनका मूल्य समझ। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा? क्या खाती थी?

बापूके आशीर्वाद

(अम्बजी)

८९

य॰ मं
२७-१२-३

चि॰ मणि (पटेल)

तेरा पत्र अन्तमें मिला जरूर। कहा जा सकता है कि जेल हद तक बदला मिल गया। अपना शरीर तो अच्छा कर ही डालना। तेरे पास सेवा जितनी पड़ी थी कि पढ़नेकी जरूरत नहीं थी। तूने

---

१ साबरमती जेलमें खुराकके सम्बन्धमें और दूसरे कैदियोंके सम्बन्धमें लिखनेकी छूट नहीं मिलती थी। अिसलिअे जेलसे छूटनेके बाद मैंने साबरमती जेलके सब हालचालका ब्यौरेवार पत्र पू॰ बापूजीको लिखा था।

२ साबरमती जेलमें कुछ गर्भवती बहनें आतीं, कुछ बच्चोंवाली और कुछ छोटी लड़कियाँ जैसी भी आतीं। अुनमें गाँवसे आनेवाली बहनोंकी संख्या बड़ी थी। अिन सबकी छोटी बड़ी सुविधाओंके बारेमें मुझसे हो सकती वह सेवा करनेका प्रयत्न मैं करती थी।

लड़ाअी[1] तो अच्छी लड़ी मालूम होती है। और वह अुचित थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। अेक ही दिन दस्त बन्द होकर सख्त मरोड़ा आया था। अिसलिअे खाया हुआ निकाल दिया और दूसरे दिन केवल सायका पानी ही लिया। अिससे कष्ट मिट गया। अिस निमित्तसे दूध भी छूटा तो छूटा ही है। यहां मिलनेवाली ज्वार या बाजरेकी अेक रोटी दिनमें लेता हूं। और साग तथा थोड़े बादाम। मेरी चिन्ताका जरा भी कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

(साबरमती जेलमें)

१०

य मं

१–१–३३

चि मणि

तेरा पत्र मिला। बापूसे मिलना हो तो कहना कि मुझे अुनसे अीर्ष्या होती है क्योंकि वे तो बाहर भी हैं और आराम-घर[2] में भी। रोज डॉक्टरके यहां जानेका आनन्द[3]। अैसा आनन्द तो केवल बाहर रहकर भी कभी नहीं पाया। परन्तु अिन सब बातोंका बदला अितना तो मिलना ही चाहिये कि हमेशाके लिअे दांत और नाककी तकलीफ मिट जाय।

---

१ साबरमती जेलमें चूड़ियां पहनने देनेके बारेमें हमें लड़ाअी छेड़नी पड़ी थी।

२ जेलमें।

३ अुस समय पू बापू आर्थर रोड जेलमें थे और दांतके अिलाजके लिअे अुन्हें डॉ जी अेम देसाअीके दवाखानेमें फोर्टमें लक्ष्मी-धाम-अुद्योग भवन — अुस समयके अनुसार आखिर वे लेवलकी मंजिल — पर रोज अेक महीने तक पुलिसके पहरेमें ले जाया गया था। वहां बम्बअीके कुछ कार्यकर्ता अुनसे मिल लेते और लड़ाअीके बारेमें हिदायतें ले जाते थे। मैं और डाह्याभाअी भी रोज मिलने जाते थे।

बिस बार भी मेरे ही पड़ोसी हुमि न ? राजेन्द्रबाबू[1] हों तो कहना कि पत्र लिखें। अुनसे पूछना कि मेरा अुत्तर मिल गया था या नहीं।

वैसे तू सब खबरें देनेवाली है, बिसलिये बाहर है तब तक देती रहना।

बाहामायीने लिखनेकी सौगन्ध खा ली दीखती है।

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

९१

य. मं.
१०–१–३१

चि. मणि,

तूने लिखा है वैसा ही मैंने हरिलालके[2] बारेमें सोचा था। मेरा तो खयाल है कि जो कुछ हुआ अुसका हाल प्रकाशित होता तो अुसमें कोअी नुकसान नहीं था। हरिलाल बाअूत होता। परन्तु बापत

---

१ डॉ. राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में अुन्हें चम्पारनके नीलके सत्याग्रहके समयसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, १९३९ और १९४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। बिस समय भारतके राष्ट्रपति।

२ पू. बापूजीके सबसे बड़े पुत्र स्व. हरिलाल गांधीने पू. बापू आर्थर रोड जेलमें थे तब अुनसे मुलाकात मांगी थी परन्तु हरिलाल पिये हुअे थे और सब-कुछ सरकारका रचा हुआ प्रतीत हुआ बिसलिये पू. बापूने मुलाकात करनेसे बिनकार कर दिया था। फिर भी अुसी दिनके ‘ श्रीमिंग स्टार ’ में अुनकी पू. बापूके साथ हुअी मुलाकातका वर्णन छपा और अुसमें पू. बापूके मुहमें लड़ाअीके प्रतिकूल कुछ शब्द रखे गये। बिसका पता चलने पर पू. बापूने आपत्ति की थी और दूसरे दिन अखबारमें सुधार आ गया था।

होता या न होता हमारा मार्ग सीधा है। सब स्वजन हैं। अथवा सब परजन हैं।

तेरे अक्षर काफी सुधर रहे हैं। अब कहां बसनेका विचार है?

बापूके आशीर्वाद

(गुजराती)

१२

य. मं.[१]

१५-१-३२

चि. मणि,

घरबार-सम्बन्धी तेरा पत्र मिला। हरिलालको तो हम जानते ही हैं। बापूको अब दलीलोंके लिये कब तक ठहरना पड़ेगा? मच्छरोंका कष्ट होने पर भी बातोंका निबटारा हो जाय तो यह वांछनीय ही है। मैं मानता हूं कि मुझे डॉक्टरके[२] पास जानेकी जरूरत जब तक है तब तक तो तू वहीं रहेगी। हम दोनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा कैसी है? मनोरा अब चलती फिरती है? विट्ठलभाई क्या वहीं रहेंगे?

(गुजराती)

---

१ काका कालेलकर कुछ समय पू. बापूजीके साथ यरवडा जेलमें थे।

२ स्व. डॉक्टर कानूगाकी पुत्री।

९५

२१-१०-'३१

चि. मणि

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। मेरे जवाब न मिलनेसे दुःख न मानना। मुझे आजकल पत्र लिखनेका समय मिलता ही नहीं। आज थोड़ासा समय बचा हुआ परिषदमें[1] मिल गया अुसका अुपयोग कर रहा हूँ।

यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि डाह्याभाईका स्वास्थ्य अच्छा हो गया। अुन्हें और यशोदाको मेरा आशीर्वाद कहना।

लक्ष्मीदास (आसर) से और मंजुकेशासे पत्र लिखनेको कहना। मैं मानता हूँ कि कमसे कम अेक डाक तो मुझे मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
श्रीराम मैन्शन
सैन्डहर्स्ट रोड
बम्बअी

९६

य. मं.
२९-१-'३२

चि. मणि

आज मुझे सारी चिट्ठियोंको लिखनेकी छूट मिली है, जिसलिये लिख रहा हूँ। मुझे यदि लिखनेकी छूट है तो जिसे मैं लिखूं अुसे अुत्तर देनेकी छूट मिलनी चाहिये। मुझे तुरन्त अुत्तर लिखना। लीलावती[1]

---

१ लन्दनकी गोलमेज परिषदमें।

श्री किशोरलाल मशरूवालाकी भतीजी डॉ. मंजुबहन। बारडोली स्वराज्य आश्रममें १९२१ से डॉक्टरके रूपमें अुस प्रदेशके गरीबोंकी सेवा-शुश्रूषा कर रही हैं।

१ स्व. लीलावतीबहन देसाअी। डॉ. हरिभाअी देसाअीकी पत्नी — मंजुबहनकी भाभी। १९५१ से १९५६ तक बम्बअीकी राज्य
[illegible]

मैं देखता हूं कि तूने अपने अक्षर सुधारनेका प्रयत्न अच्छी तरह किया है। यह बताता है कि प्रयत्नसे अक्षर अच्छे हो सकेंगे। और यह नियम सब बातों पर लागू होता है।

गीता कंठस्थ करनेका अर्थ यह है कि अर्थके साथ आनी चाहिये और अुच्चारण शुद्ध होना चाहिये। शिक्षिका कौन है? शायद यह जवाब तो तू मिलते समय ही देगी अथवा आखिरी खत लिखने दें तो पत्र भी लिख डालना। तन्दुरुस्ती अच्छी है या नहीं यह तो हम लोग देखकर प्रमाणपत्र दें तब सही। ×××

बाबा और यशोदा अेक बार यहां आ गये। बाबा तो कुर्सी पर चढ़ बैठा था। और जितना ज्यादा मौजमें आ गया था कि अपने नये जूते भूल गया। अुसके सौभाग्यसे या डाह्याभाअीके सौभाग्यसे हममें से किसीने देख लिये और तुरन्त भेज दिये। यशोदाकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं कह सकते। अुसने कुछ वर्षोंसे अच्छा स्वास्थ्य रखा ही कहां है? डाह्याभाअी हर सप्ताह आते हैं और हम दोनों अुनसे मिल सकते हैं।

जीवतरामका[1] काम अभी अच्छा चलता है। देवदास गोरखपुर (जेलमें) है। अुसका पत्र अभी आया है। वह अकेला है, मगर आराममें है। पठन अच्छी तरह कर रहा है। लक्ष्मीको अब बेचारी हरगिज नहीं कहा जा सकता। पापा (राजाजीकी बड़ी लड़की) की देखभाल जरूर करती है। परन्तु पापा अब अच्छी हो गयी कही जा सकती है। राजाजी मजेमें हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अुनके साथी भी

---

१ आचार्य जीवतराम कृपालानी। ये बिहारके मुजफ्फरपुर कॉलेजमें अध्यापक थे। और चम्पारनके मामलेमें बापूजी बिहार गये तब कॉलेज छोड़कर पू॰ बापूजीके साथ हो गये थे। गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य। बारह साल तक कांग्रेस महासमितिके मंत्री रहे। अुसके बाद अध्यक्ष हुअे। अुसके बाद कांग्रेससे अलग हो गये। आजकल प्रजा सोशलिस्ट दलके अध्यक्ष और लोकसभाके सदस्य हैं। यह पत्र लिखा गया अुस समय वे पकड़े नहीं गये थे और बाहर काम कर रहे थे।

अुनके काफी दांत हैं। अिन्दु[1] मुझसे नहीं मिली। अब कहां है यह पता नहीं। बहुत करके पूनामें ही है। कमला (नेहरू) प्रयागमें है। कमलापति (जवाहरलालजी) की फारसी तो कुछ शान्त हुई मालूम होती है। परन्तु थोड़ा बुखार रहता है।

चरखेके बारेमें अहमदाबाद लिखूंगा। परन्तु बढ़िया चरखा चाहिये तो यहांसे भी दे सकूंगा। ×××

××× बाको तो पहला पत्र मैंने आज ही लिखा है। परन्तु अुनके पत्र मिलते रहते हैं। वह और दूसरी बहनें (यरवडा जेलमें) मजेमें हैं। मीठूबहन अपनी कक्षा चलाती है।

चश्मा टूट गया हो तो यहां भी बनवाया जा सकता है। परन्तु अब निकलनेका समय नजदीक आ गया है। अिसलिये अिस सुझावमें बहुत सार नहीं है।

तेरा पत्र आज ही यहां आया और आज ही मिला है। और यह अुत्तर भी आज ही लिखा जा रहा है। कल यहांसे निकलूंगा अैसी आशा रखता हूं। वहां कब मिलेंगे यह हम सबके भाग्य पर आधार रखता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
प्रिझनर,
प्रिजन बेलगांव

---

१ पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लड़की अिन्दिरा गांधी अुस समय पूनामें पढ़ती थी।

२ यह पत्र पू. बापूजीने पू. बाके हाथसे लिखवाया था।

९८

(तार)

मणिबहन पटेल
सेंट्रल जेल
बेलगाव

पूना
२-५-'४४

यशोदा कल गुजर गयी। यह मानना चाहिये कि वह जीवित मृत्युसे छूट गयी।

गांधी

९९

यरवडा मंदिर,
२-७-'३२

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। मेरा सन्देशा मिला होगा। तूने पूनियाँ भेजनेका विचार किया जिससे भेजनेका पुण्य तो पा चुकी। भेजी नहीं यह अच्छा ही किया। अब यहाँ खराब पूनियाँ रही ही नहीं हैं। जो यहीं हैं वे बहुत हैं। सब महादेवकी ही बनायी हुई हैं। लगभग दो मासके [illegible] हो गयी है। महादेव [illegible] लक्ष्मीदासकी भेजी हुई पूनियाँ काममें ला रहे हैं क्योंकि उनकी कढ़ी अलग है और पूनियाँ बड़ी

सावधानीसे बनाअी हुअी है। मैं मगन चरखे पर महादेव जैसा बारीक सूत कभी नहीं कात सकता। यज्ञका सूत अपने लिअे हरगिज काममें नहीं लेना चाहिये यह मेरी हमेशासे राय रही है और यह ठीक ही है। यदि यज्ञके निमित्त कातनेवाला लापरवाह रहे, तो अुसकी परीक्षा हो गयी और वह फेल हो गया। यज्ञका सूत सबसे ज्यादा सावधानीसे कातना चाहिये। जितना सूत काते अुतना देकर खुद जो मनचाहा सूत मिले वही काममें ले तो अुत्तम है। परन्तु अैसा करनेका साहस न हो तो अन्तमें यज्ञके लिअे अेक घंटा या आधा घंटा रखकर कमसे कम १५ तार तो कृष्णार्पण कर ही देना चाहिये।

तू सामूहिक प्रार्थना पसन्द करती है यह बिलकुल समझमें आता है। क्योंकि तेरी प्रार्थना ही सामूहिकसे शुरू हुअी। परन्तु अकेले प्रार्थना जरूर करनी चाहिये। भले ही वह अेक ही मिनटके लिअे हो। अन्तमें तो हृदयमें यही रटन चलती रहनी चाहिये। और यह अकेले प्रार्थना करनेकी आदत न पड़े तो हो ही नहीं सकता। अकेले प्रार्थना तो सोते नहाते खाते कोअी भी क्रिया करते हुअे हो सकती है। अिसलिअे अुसका बोझा तो होता ही नहीं। अुलटे अुससे मन हल्का हल्का हो जाता है — होना चाहिये। अैसा अनुभव न हो तो अुस प्रार्थनाको कृत्रिम समझना चाहिये।

डाह्याभाअीकी समस्या जरा कठिन है। परन्तु वे बड़े समझदार हैं। अिसलिअे अपने आप स्थिर हो जायेंगे। अिसमें किसीको अुनका पथ-प्रदर्शन नहीं करना है। यदि फिर शादी करनेकी अिच्छा होगी तो अुन्हें कोअी रोकनेवाला नहीं है। और शादी नहीं करनी हो तो अुन्हें कोअी ललचानेवाला नहीं है। दूसरे लोग तो तंग करेंगे ही। अुनसे डाह्याभाअी जरूर निपट लेंगे। मेरा लिखना बन्द हो गया है यह अैसे समय आते हैं तब खटकता है। परन्तु जिस तरह सहन करनेमें ही हमारा धर्म है। बायें हाथकी कोहनी अमुक रीतिसे काममें लेनेसे दुखती है। आजकल लगभग अेक पामने कपड़े भीतर बोता है। मेरे वजन

बेलके ही हैं। समझते तुझे तो नहीं रहते पर याद रहते हैं। तू शरीरको संभालना। पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
ठि. डॉक्टर बलवन्तराय कानूगा
ऍलिसब्रिज
अहमदाबाद

१००

य. मं.
२६-८-'३२

चि. मणि,

तेरे कैद होनेके बाद किसीके नाम भी कोअी पत्र नहीं आया। अिसका क्या कारण है? कैद होनेके बाद तुरन्त पत्र लिखनेका अधिकार तो है ही न? अभी तक न लिखा हो तो अब लिखना। हो सके तो अिस बार शरीर सुधार लेना। खुराक जो आवश्यक हो वह लेने या मांगनेमें संकोच न रखना। मेरी सलाह है कि अपनी पढ़ाअीका क्रम तैयार करके आजतकके कच्चे विषयोंको पक्का कर लेना। गुजराती व्याकरण पक्का कर ले। और भाषा पर अधिक काबू पा ले तो अच्छा। अंग्रेजी जानती ही है अिसलिअे अुसे भी पक्का किया जा सकता है। अिसमें कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) की मदद भी ली जा सकती है। संस्कृतमें लीलावतीबहन (मुन्शी) मदद कर सकेगी। साथ ही मराठी भी अधिक अच्छी कर ली जाय तो ठीक। थोड़ा स्त्रियों संबंधी ज्ञान भी प्राप्त कर लेनेकी आवश्यकता है ही। परन्तु यह तो मेरा सुझाव हुआ। अिसमेंसे तुझे कुछ पसन्द न हो तो जो पसन्द हो वह चुन लेना। अिसमेंसे कुछ भी पसन्द न हो तो कुछ नया चुन लेना। मेरा कहना तो अितना ही है कि यह जो अमूल्य अवसर मिला है अुसका पूरा सदुपयोग आत्मशुद्धिके लिअे कर लेना। कातनेकी छूट हो तो कातना। प्रार्थना और रामगीता तो भुलाया ही नहीं जा सकता।

हम तीनों आनन्दमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाई जितनी तेजीसे हो रही है कि तू देखे तो आश्चर्य करे। पुस्तक हाथसे छूटती ही नहीं। नौजवान विद्यार्थीमें भी जिससे अधिक लगन नहीं हो सकती। कातते हैं परन्तु ४ नम्बर तकका। और लिफाफे तो बनाते ही हैं। महादेवके ८ नम्बर चल ही रहे हैं। जिसके सिवा फ्रेंच और अुर्दू है। मेरी धीमी गाड़ी सपाट रास्ते पर चलती है। पढ़ाई तो लूली-लंगड़ी ही है। पत्र बहुत वक्त खा जाते हैं। ×××

किसी समय तुझे पत्र लिखनेकी गुंजाअिश हो और जिच्छा हो जाय तो लिखना। हम सबकी तरफसे आशीर्वाद।

बापू[1]

मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
प्रिजन बेलगांव

१०१

(य मं)
२१-९-३२

चि. मणि

तुझे आश्वासनकी जरूरत होगी क्या? खबरदार, यदि अेक भी आंसू गिराया तो। जो सौभाग्य तुझे मिला है वह विरलोंको ही कभी कभी मिलता है। जिससे मुक्त हो सकते हैं, वे तो बचने ही नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिअे अुपवास नहीं है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्तव्य

---

१ मैं ता. ११-८-३२ को अहमदाबादसे गिरफ्तार हुअी थी। मुझे १५ मासकी सजा हुअी थी। अुसके बाद बेलगांव जेलके पते पर यह पत्र लिखा गया था।

२ पू. बापूजीने ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध ता. २०-९-३२ से अुपवास शुरू किया था जो ता. २६-९-३२ को तोड़ा था। अुस मौके पर लिखवाया हुआ पत्र। यह पत्र बेलगांव जेलमें मुझे ता. २४-९-३२ को मिला।

पालन है। मुझे जब लिखना हो तब लिखनेकी छूट मैंने पा ली है। इसलिये मुझे लिखना। यह पत्र मुझे तुरन्त मिलना चाहिये। दूसरी बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
(प्रिजनर
सेंट्रल प्रिजन)
बेलगाम

१०२

य मं
८-१०-३२

चि मणि

तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मेरे लिये तो लम्बा नहीं था। उपवास तो अब पुरानी बीती बात हो गयी। वह औसर-रूप वस्तु थी इसलिये सुशोभित हो गयी। अब शरीर फिर बड़ी तेजीसे बन रहा है। शक्ति लगभग आ गयी है। दूध दो पौंड और ढेरों फल ले रहा हूं। फलोंमें नारंगी मोसम्बी अनार अथवा अंगूरका रस और दूसरी अथवा टमाटरका रस। × × × काफी घूम-फिर सकता हूं। कमसे कम २ तार कातता हूं। ४५ अंकके। पत्र तो काफी लिखता ही हूं। इसलिये कोई भी चिन्ताका कारण रह ही नहीं गया है। बाको दिनमें मेरे साथ रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी तबीयत अब ठीक है।

तुझे खानेके सपने आते हैं जिसमें थोड़ा-बहुत अपच कारण हो सकता है। ऐसे सपने या तो बहुत भूखे पेट रहनेसे आते हैं या बदहजमीसे। जिन कारणोंको ढूंढ़कर उचित उपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन नियमित हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट

---

१ यह पत्र २४-१०-३२ को दिया गया था जैसा डाककी मुहरसे पता चलता है।

हो ही जाते हैं। दीर्घकालके आचरण अेकाअेक मन्द पड़ जायँगे अैसा माननेका कारण नहीं है। वे अपना समय लेते ही हैं। अिसलिअे घबराना नहीं चाहिये। निराश भी नहीं होना चाहिये। प्रयत्नमें शिथिल भी नहीं होना चाहिये और परिणामके बारेमें निश्शंक और निश्चिन्त रहना चाहिये। यही गीताकी अनासक्ति है।

अुपवासका असर अलग अलग होता है, अिसमें आश्चर्य नहीं। अुसका आधार शरीरकी बनावट पर और मानसिक तैयारी पर है। अुपवासकी जिसे आदत ही न हो वह अेकसे भी घबरा जायगा और अुसके अस्थि-पंजर ढीले हो जायँगे। जिसे आदत है अुसके लिअे वह खेल हो जाता है। अिसी तरह जिसके शरीरमें चरबी वगैरा है ही नहीं वह बहुत लम्बा अुपवास न करे। बहुत चरबीवाला धीरज रखे तो खूब लम्बा सकता है और शारीरिक दृष्टिसे अुसका लाभ अुठा सकता है।

बापू और महादेव मौज कर रहे हैं। अितना अेकान्तवास तो हमने कभी अनुभव किया ही नहीं था। अिससे खूब काम हुआ है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी ठीक रहती होंगी। और जो बहनें हों अुन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुंशीका[1] मुझे सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाअिश हो और वैसी अुमंग आवे तो लिखें।

अिस पत्रके साथ नन्दुबहनका जो पत्र यहाँ आया है वह भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगाँव

---

१ श्री कन्हैयालाल मुंशी बम्बअीके प्रसिद्ध अेडवोकेट। १९३७ से १९३९ तक बम्बअी प्रान्तके गृहमंत्री। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद १९५ से १९५२ तक भारत सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५२ से १९५७ तक अुत्तरप्रदेशके गवर्नर।

१०३

(तार)

पूना
२८-१-३२

मणिबहन पटेल
कैदी बेलगांव जेल

आशा रखता हूं कि दादीकी मृत्युसे तू बिलकुल नहीं दुखी होगी। ऐसी मृत्युकी सब इच्छा करते हैं। बहुत समयसे तेरा पत्र क्यों नहीं आया? प्यार।

बापू

१०४

(तार)

पूना
११-१०-३२

मणिबहन पटेल
कैदी बेलगाम जेल

दादीने शुक्रवारकी दोपहरको करमसदमें चार दिनकी बीमारीके बाद शान्तिपूर्वक शरीर छोड़ा। आशा करता हूं कि पुष्पाको मृत्युका विवरण देते हुये जो पत्र लिखा है [illegible] सब आनन्दमें हैं। प्या

१०५

(तार)

पूना

१९–११–३२

मणिबहन

कैदी बेलगांव जेल

डाह्याभाअीको ७ दिनसे बुखार आता है। अब मालूम हुआ है कि टाअिफॉअिड है। और कोअी खराबी नहीं है। खास नर्सें देखभालके लिये हैं। चिन्ताका कोअी कारण नहीं है। रोजके समाचार भेजनेकी कोशिश करूंगा।

बापू

१०६

यरवडा मंदिर,

२०–११–३२

चि॰ मणि

डाह्याभाअीके बारेमें दिया हुआ मेरा तार मिला होगा। तुझको हमेशा खबर देनेकी और तुझे लिखना हो वह लिखनेकी (डाह्याभाअीको या मुझे बारेमें) अिजाजत मिल गअी है। अिसलिअे तू यहांसे रोज लिख सकती है। वह पत्र मैं डाह्याभाअीको पहुंचा दूंगा। यहांसे तो रोज पत्र लिखा ही करूंगा। डॉ॰ मालन[1]का पत्र आया है। वह अिसके साथ भेज रहा हूं। अुसके बाद आज भी भाअी करमचन्द[2]का पत्र आ गया है। अिसलिअे कल उनका हाल अच्छा ही माना जायगा। आज १४ दिन पूरे हुअे हैं। अभी बुखार १   से १ १ के बीच रहता है। अेक बार ९९॥ तक भी गया था। कमी कोके बगैर ठीक है।

---

१ बम्बअीके कुशल पारसी डॉक्टर

२ बम्बअीके अेक पेपर-दलाल। पूज्य बापूके भक्त सुबेच्छु।

फलोंका रस, नारंगीका पानी और कभी कभी पतली छाछ जितनी चीजें ले सकता है। खास नर्स रखी गयी है। सब तरहसे पूरी सावधानी रखी है। जिसलिये चिन्ताका कारण भी नहीं है।

हम सब आनन्दमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगाम

१०७

५ मई
(२९-११-३२)

चि. मणि

तुझे तार दिया है। खत लिखा है। दोनों मिले होंगे। तू रोज लिखे तो मुझे पत्र मिलेगा और वह डाह्याभाईको पहुंचा दिया जायगा। आज भी खबर अच्छी ही है। देवदास देखकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाईको देखकर तो कोई कह ही नहीं सकता कि टाईफॉईड हुआ है। ऐसी हिम्मत और शांति बताता है।

सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
प्रिजनर
सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगाम

डाह्याभाईको बम्बईमें टाईफॉईड हुआ था जिसकी यह
खबर सरदारने सरकारसे मिलकर ले ली थी।

यरवडा मंदिर,
२५-११-३२

चि. मणि

तेरा लम्बा पत्र — तुझे खबर देनेके बाद पहुंचा ही — आज मिला। तू व्यर्थकी न करने जैसी चिन्ता करती है। तुझे जानना चाहिये कि बापू और तू जेलमें हैं तब बाहर बैठे हुअे लोग जो कुछ करना चाहिये अुसे करनेसे चूक नहीं सकते। टाअिफाअिडका पता चलते ही तुरन्त वालचन्दने[1] करमचन्दको[2] कहा कि रात-दिनकी दो नर्सें रखो, डॉक्टरोंमें से जिसे रोज बुलाना अुचित हो अुसे बुलाओ और सारा खर्च खुद ही देनेको कहा। रोज ३-४ रुपये खर्च होते हैं। वे ही देते हैं। अस्पतालसे ज्यादा अच्छी देखभाल होती है। घरके लोगोंमें करमचन्द छोटूभाभी हैं (जो सारे दिन पास ही रहती हैं) और दो नर्सें हैं जो बहुत मिलनसार हैं और डाह्याभाअीके स्वभावको माफिक आ गयी हैं। अिसके सिवा बस्तीं[3] और दूसरे मित्र भी हैं ही। अिस समय डाह्याभाअीके पास तू नहीं है यह तुझे खटकना स्वाभाविक है। लेकिन जो ओीश्वरका अधिक चाहता है अुनकी वह ज्यादासे ज्यादा कसौटी करता है। यहां करमचन्द छोटूभाभी वगैराके पत्र रोज आते हैं। यह तीसरा हफ्ता है। अब बुखार १०२ से अुपर नहीं जाता। कल तो नॉर्मल भी हो गया था। डॉक्टर आशा करते हैं कि अगले सोमवार तक बुखार बिलकुल नॉर्मल हो जायगा और बढ़ना घटना बन्द हो जायगा। तुझे तो हाँ आश्वासन जो देखभाल और अिलाज करते हैं वसलभाभीके नाम आया हुआ पत्र भी भेजा था। अुससे भी तू समझेगी कि डॉक्टर भी

---

१ स्व. सेठ वालचन्द हीराचन्द। पूज्य बापूके अेक मित्र।

२ मेरे काकाके पुत्र।

३ स्व. जमनादास बजरी। बम्बअीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य बापूके अेक भक्त।

प्रेमसे देखभाल कर रहे हैं। मोसम्बीका रस आदि वगैरा देते हैं। साधारण तौर पर तो टायफॉयडके बीमारको वस्त या वैसा ही कुछ पूछने हो जाता है। डाह्याभाईको जिसमें से कोओ व्याधि नहीं है। जिसलिये चिन्ता करनेका कुछ भी कारण नहीं। तू अपने काममें परायण रहना और अैसी प्रार्थना करना कि डाह्याभाई जल्दी अच्छे हो जायं। दादीके लिये शोक हो ही नहीं सकता। अुनके जैसी भाग्यशाली मृत्यु कितनोंको मिलती है? हम अमुक व्यक्तिकी सेवा नहीं कर पाये और वह चला गया यह भावना पैदा हो तब अैसा निश्चय करके निश्चिन्त हो जायें कि आगे किसीकी भी सेवा करनेका मौका हाथसे नहीं जाने देंगे।

हम तीनों आनन्दमें हैं। सोनेके कुछ घंटे छोड़कर हम तीनोंका बाकी सारा समय अस्पृश्यता-निवारणके काममें लगता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
प्रिजनर
सेण्ट्रल जेल
बेलगाम

१०९

य मं
२६-११-३२

चि मणि

आज डाह्याभाईके अधिक अच्छे समाचार हैं। बुखार १ ॥ से आगे गया ही नहीं और ॥ तक अुतरा था। जिसलिये कह सकते हैं कि अब बुखार गया है। अब अवश्य बरसों बिलकुल नॉर्मल होकर फिर नहीं चढ़ता अैसी डॉक्टर आशा रखते हैं। कमजोरी है सो तो रहेगी ही। परन्तु चिन्ताका जरा भी कारण नहीं। जिसलिये अब तुझे

मेरा दादी मामला अुनकी आश्रममें नजर पड़ी। वे अन्त तक स्वाभाविक बनी रहीं राम करना ही।

तार करनेकी जरूरत नहीं रही और मुझसे तेरे पास तार भेजनेकी भी जरूरत नहीं रही।

तुझे रुपया भेजनेके लिये तो बापूने करमचंदको कह लिख ही दिया है। हम तीनों मजेमें हैं। तेरा पत्र डाह्याभाईको भेज दिया है। अपनी तबीयतके समाचार क्यों नहीं भेजती?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
श्री क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन
बेलगांव

११०

य मं
२७-११-३२

चि मणि

आज कलसे भी ज्यादा अच्छी खबर है। बुखार शुक्रवारको ९७।। तक गया था। ९९।। से ज्यादा नहीं बढ़ा। नींद अच्छी आती है।

तू अपने कर्तव्यमें निमग्न रहना।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाईके खर्चका चोखा हिसाब मिलाने भेजा किया है।

श्री मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन
बेलगांव

१११

यरवडा मंदिर,
१०-११-३२

चि० मणिबहन

आज डॉ० कानूगाका पत्र आया है। वह साथमें भेज रहा हूं। अिससे तुझे पता लग जायगा कि डाह्याभाअीकी चिन्ता करनेका कारण नहीं। बुखारके जानेमें तो अभी समय लगेगा मगर अिसमें चिन्ता करने जैसी कोअी खास बात नहीं। हम तीनों आनंदमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
बी क्लास प्रिज़नर
सेन्ट्रल प्रिज़न
बेलगाम

११२

य० मं०
६-१२-३२

चि० मणि

देख आये। सब कहते हैं कि डाह्याभाअी आनंदमें हैं। किसीको नहीं लगता कि चार सप्ताहसे टाअिफाअिडसे बीमार हैं। तू जरा भी चिन्ता न कर।

मेरा अुपवास[1] तो अब पुराना हो गया। टाअिम्स से [सब] जान लिया होगा। ऐसे अुपवास तो मेरे जीवनमें होते ही रहेंगे। अिसलिअे अिसे स्वाभाविक समझकर कार्य-परायण रहना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
प्रिज़नर,
सेंट्रल प्रिज़न
बेलगाम

११३

य मं
९-१२-३२

चि मणि

यह मानकर कि तुझे बम्बअीसे नियमपूर्वक खबरें पहुंचती रहती हैं, मैं रोज लिखनेकी चिन्ता नहीं रखता। डाह्याभाअीके स्वास्थ्यमें सुधार होता ही जा रहा है। अभी दिनमें दो तीन घंटे थोड़ा बुखार रहता है। फिर भी शक्ति खूब आती जा रही है। आज ही देवदास आया है। वह डाह्याभाअीसे मिलकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाअी थोड़े धीमे लगते हैं। डॉक्टर खुराक बढ़ाते जा रहे हैं। अब दूध वगैराके

१ अप्पासाहब पटवर्धनने जेलमें भंगीका काम करनेकी अनुमति मांगी थी। वह अुन्हें नहीं दी गयी, अिसलिअे अुन्होंने बहुत थोड़ी खुराक लेना शुरू कर दिया था। पू बापूजीको अिस बातका पता लगा तो अुन्होंने भी ३-१२-३२ को सरकारके अिस रवैयेके खिलाफ अुपवास शुरू कर दिया। ता ४-१२-३२ को समझौता हो गया तो अुपवास छोड़ दिया।

सुघड़ता तो मैंने आनंद-भवनमें भी नहीं देखी।" अिसलिये यह तो तू अुससे अच्छी तरह सीख लेना। अिस पर अुंडेले अुस पर अपनी सेवा अुंडेलनेकी भी अुसकी शक्ति अजीब है। अुसकी निडरता तो अैसी है कि तुम लोगोंमें से कुछ बालायें अुसकी स्पर्धा कर सकती हो। अिसलिये अिस ओर ध्यान नहीं खींच रहा हूं।

*

बापूके आशीर्वाद

११६

य॰ मं॰
४-४-३२

चि॰ मणि

पत्रोंकी तेरी शिकायत समझमें नहीं आती। तुझे पत्र नियमित लिखे ही जाते हैं। क्यों नहीं मिलते अिसकी अब जांच हो रही है। बापु लिखते थे अिसलिये मैं लिखे बिना काम चला लेता था। परन्तु कुछ न कुछ तो बीच लिखाना ही था। किसी समय यह भी न हुआ होगा। अिसलिये कुछ पता नहीं चलता। हम कोअी तुझे पत्र न लिखें तो तुझे दुःखी होनेका जरूर अधिकार है और गुस्सा भी आयेगा। परन्तु तुझे यह मान ही लेना चाहिये कि कुछ भी कारण हो तो भी यह नहीं हो सकता कि तुझे पत्र न लिखा जाय। कोअी आकस्मिक बात हो गअी होगी यह सबसे सीधा अनुमान है।

यहां सब मजेमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाअी फिर शुरू हो गअी है। यह तो नहीं कहूंगा कि धड़ाकेसे चल रही है, मगर काफी अच्छी चल रही है। जितना सीखा है अुतना तो याद रखनेका सतत प्रयत्न करते हैं। डाह्याभाअी लगभग हर सप्ताह मिल जाते हैं।

मेरे हाथका तो जैसा था वैसा ही हाल है। परन्तु कोअी बाधा नहीं पड़ती है। महादेवका स्वास्थ्य अच्छा है। छगनलाल (जोशी) का भी

---

१ जेलमें लिखा ता॰ ८-४-३२ को मुझे दिया गया ता॰ १५-४-३२ को।

अच्छा है। तुझे अच्छी पूनियां चाहिये तो यहांसे भेजी जा सकती है। बहुत जाती रहती है। तेरे विषयमें समाचार मृदुलाकी तरफसे मिले थे। कमलादेवीकी तरफसे भी और लीलावतीकी तरफसे थी। मालूम होता है सभी पर तूने अच्छी छाप डाली है। बा और मीरा बहुत मजेमें है। मीराबहन हर हफ्ते पत्र लिखती है। काकासाहब आजकल यहीं है और हरिजन-पत्रोंके काममें सहायता देते है। पत्रिके गुजराती मराठी और हिन्दी संस्करण निकल रहे है।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च मैं अगले महीनेकी ४ तारीखको अपना पुण्य और होने पर मृत्युलोकमें प्रवेश कर रहा हूं।

म (महादेवभाई)

श्रीमती मणिबहन पटेल
सी क्लास प्रिजनर
सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगांव

११७

यरवडा मंदिर
२६–४–३३

चि० मणि

[illegible] — मिल पहले ही मिला। तू कितना ही लम्बा क्यों [illegible] लम्बा नहीं लगेगा। जितनी ही बात है कि यहांसे [illegible] बहुत लम्बा बनानेकी आशा तू रखती हो [illegible] मैं तू [illegible]। तू आशा [illegible] तो मैं पूरी तरह [illegible] मारे राम [illegible] सुविधायें भी [illegible]

[illegible]

अुपयोग केवल सेवाके लिये न करते हों अथवा अुसीके लिये वे सुविधायें पैदा न करते हों तो हम अयोग्य सेवक साबित होंगे और अुससे भी अधिक अयोग्य कुटुंबी साबित होंगे। सैकड़ों बच्चोंके मां-बाप होनेका दावा करके बैठ जाना और हवामें अुड़ते रहना जरा भी शोभनीय नहीं माना जा सकता। अिसलिये हम आरामसे अिस वैभव अित्यादिका अुपयोग कर रहे हैं अिसकी अीर्ष्या तुझे या मुझको अिन किसीको करनी ही पेट भरकर करते रहना। मीराबहनके बारेमें तूने अुलाहना दिया भी है और फिर वापस भी ले लिया है। बापका धर्म क्या है? अिस बच्चाको जो चाहिये वह अुन्हें दे या सब बच्चोंको अेक जैसा देकर घोर अन्याय करे? और संसारके सामने या नासमझ बालकके सामने न्यायपरायण साबित होनेके प्रयत्नमें किसीके प्राण भी ले ले? तुझे तेरी बीमारी मिटानेके लिये बाजरेकी रोटी और मक्खन निकाली हुअी छाछ देनी पड़े तो क्या शारदी (सारामाअी) जैसी लड़कीको शहद, मक्खन और पेटुके फूले देनेकी जरूरत होते हुअे भी बाजरेकी रोटी और छाछ ही दी जाय? बापका धर्म प्रत्येक बालकके श्रेयके लिये जितना आवश्यक हो अुतना देना है। अिससे आगे बढ़कर श्रेयको हानि न पहुँचे अिस हद तक अधिक देनेकी भी अुसे छूट है। परन्तु अैसा करना अुसका फर्ज नहीं है। यह सब ज्ञान क्या तुझे आज देनेकी आवश्यकता है? परन्तु मुझे तो ज्यों त्यों कागज भर देना है अिसलिये अितना अनावश्यक समाचार लिख रहा हूँ। हम पर तुझे जरा भी गुस्सा नहीं आया तो फिर भी क्यों जलता रही थी? अितनी कम श्रद्धा क्यों रखी? और तूने निश्चयपूर्वक क्यों नहीं मान लिया कि हम दोनोंमें से अेकका मन तो जरूर गया ही होगा? मैं अवश्य मानता हूँ कि लिखा जा सके तो हम दोनोंको लिखना चाहिये। परन्तु जहां पत्र लिखनेके बारेमें ही अनिश्चय हो वहां अिस तरह लिखनेकी अुमंग बहुत नहीं रहती। किसी भी तरह अेक या पखवाड़ा हो पर समाचार अेक तो नियमित रूपमें लिखा ही जाता है। और आज भी लिखा जाता रहेगा यह तुझे विश्वास रखना चाहिये। तेरे पत्रका

प्यारेलाल अुत्तर देनेकी जिम्मेदारी तो सरदारने ही ली है। अिसलिये तेरे सन्देशोंका मथुरादासका जवाब वे ही पहुंचायेंगे। और प्यारेलाल अुत्तर भी वे ही देंगे। कुछका जवाब देना तो मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अिस लोभका मैं संवरण कर बैठा हूं।

जानकीका आपरेशन तो भूतकालकी वस्तु हो गयी। वह आश्रममें कभीकी चली गयी है और मजेमें है। बीचमें मुझे सरदी और बुखार हो गया था। परन्तु यह तो क्षणिक ही था। मिल गये।

के हाथ लगे जैसे हो गये हैं। मुझे फूलकी तरह संभाल रहा है। वह पति है मित्र है शिक्षक है, सेवक भी है। मुझे अधिक अच्छा पति विधाता भी नहीं ढूंढ सकता था जैसा अभी तो लगता है। मुझसे योग्य है या नहीं सो तो देव जाने। परन्तु मुझकी त्रुटियां मैंने स्वयं शादी करानेसे पहले के सामने रख दी थीं, और यह लिख दिया था कि वह सम्बन्ध करना न चाहे तो बिलकुल सगाई तोड़ सकता है। परन्तु के मस्तिष्क तालीम पाया हुआ अेक बार किये हुअे निश्चयसे कैसे डिगे? विवाहके अवसर पर सबने मुझे ने प्रेमसे नहलाया था। सबने कुछ न कुछ भेंट दी थी। लम्बे समय तक हम लोगोंको साज-सामान और कपड़ों पर खर्च भी करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। जिससे जितना संतोष मिले अपना ले लेना।

हमारे दारोगा अब मुझे हमारे रहनेके बारेमें ले जानेके लिये आकर खड़े हो गये हैं। अब ग्यारह बजेंगे। अिसलिये अब अपने लिखनेसे जा रहा हूं। स्नान आदि करनेके बाद फिर १२ बजे मुझे [illegible] जायेंगे।

(बापूके अक्षरोंमें)

देता हूं। जिसलिये पुस्तकों वगैराके जो सन्देश हैं वे जुन्हें मिल जायेंगे। शान्ताभाभी पिछले सप्ताह आ गये थे। आनन्दमें हैं। अब स्वास्थ्य पहले जैसा हो गया माना जा सकता है। बाबा मजेमें है। परीक्षामें पास हो गया। (जुस समय छह वर्षका था।) जिसलिये अब पहली कक्षामें बाकायदा भरती कर लिया गया है। अब कुछ कुछ पढ़नेमें जुसका ध्यान कम रहा है। आज टाअिम्स में फर्स्ट अेम बी बी अेस का परिणाम पढ़ा। जुससे मालूम हुआ है कि नीटु[1] पास हो गया। परन्तु अभी तो अैसी और चार परीक्षायें हर साल देनी हैं। कल श्री सरलादेवी का पत्र आया था। ता २२ का अहमदाबादसे लिखा हुआ पत्र था। जुसमें वे लिखती हैं कि कल अर्थात् ता २१–८–११ को मसूरीके लिये रवाना होंगी। सारा परिवार जायगा। साथमें बिन्दु और जुसकी मा भी जायेंगी। श्री इन्दुबहन[3] बादमें जायगी। सब बड़े आनन्दमें हैं। जिस बार दोनों बर्नी चिन्ता नहीं करते जिसका विश्वास दिलाते हैं।   मुझे कुछ कम चिन्ता है। अंबालालभाअीकी विलायत जानेकी बातें अखबारोंमें आ रही हैं। परन्तु जुनके पत्रमें जिस बारेमें कोअी जुल्लेख नहीं। अगले पत्रमें कुछ न कुछ पक्की खबर आयेगी। कमलादेवी दो दिन पहले बापूसे मिलने आअी थी। वापस बम्बअी गयी।

देवदास भटकता भटकता कल बम्बअी आया है। कल यहां मिलने आनेवाला है। मथुरादास भी कल यहां आये थे। श्री जमनालालजी दो तीन महीने अल्मोड़ा रहने गये हैं। जुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। डॉक्टरोंने पहाड़ पर जानेकी सलाह दी। जानकीदेवी भी साथ गयी

१ डॉ कानूगाके पुत्र।

२ श्री अम्बालाल साराभाअीकी पत्नी।

३ श्री इन्दुमती चिमनलाल सेठ। १९५२–१९५७ तक बम्बअी राज्यकी अुप-शिक्षामंत्राणी।

४ स्व निर्मलाबहन बकुभाअी।

तो वे पीड़ासे छूट गओ क्योंकि बीमारी अैसी थी कि जीनेसे मरना अच्छा था। फिर भी मनुष्य चला जाता है तब सगे-संबंधियोंको वियोगका दुःख होता ही है।

जिस बार तुम्हारा मन स्वस्थ रहता है जिससे हम बहुत प्रसन्न हुअे। अैसा ही रहना चाहिये। यह तो हमारी सामान्य स्थिति हो गयी है। और धर्मका पालन करते हुअे मनको जो शान्ति रहनी चाहिये वह न रहे तो यह माना जा सकता है कि कहीं न कहीं हमारी भूल हुअी होगी। शरीर भी नियमित आहार और सुन्दर जलवायुमें यथासंभव अच्छा रहना चाहिये। जो भी शारीरिक दुःख हो असको सुधार लेनेका पूरा अवकाश यहां मिलता है। असका सदुपयोग कर लेना चाहिये। बाहर हम शरीर पर समय या ध्यान बिलकुल नहीं दे सकते। यहां जितना समय देना हो अतना दिया जा सकता है। जो भी तकलीफ हो वह डॉक्टरको बताना चाहिये और अिलाज करा लेना चाहिये। मामूली कसरत भी करनी चाहिये। नियमित रूपमें रोज घूमना-फिरना चाहिये। बहुत पढ़ना न हो सके तो चिन्ता नहीं परन्तु शरीरको संभालना चाहिये। यह बात तो तुम दोनों[1] पर लागू होती है। मेरी तबीयत अच्छी है। हमारी कोअी चिन्ता न करना। हम तो जरूरतकी सब चीज जुटा सकते हैं और जो सुविधा चाहिये वह प्राप्त कर सकते हैं। अिसलिये हमारे बारेमें पूछनेका क्या है?

अब अगले मासके मध्यमें फिर पत्र लिखेंगे। तुम्हारा पत्र आ गया तो ठीक वरना हम तो लिखेंगे ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
पी आर नं १ २४९,
बेलगांव सेंट्रल प्रिजन शिरसपा

[1] मैं और मृदुलाबहन।

मिला लिया है। यह अुपवास किसीके विरुद्ध नहीं है। मुझे पता नहीं कि किस चीजसे आघात पाकर मैंने यह प्रतिज्ञा की। बहुतसी बातोंका आने अनजाने बकर असर हो रहा था। परन्तु बात यह है कि मुझमें कहीं न कहीं अपवित्रता होगी। तभी तो मेरे साथ सम्बन्ध रखनेवाले हरिजन सेवक कुन्दन जैसे नहीं है? और अस्पृश्यतारूपी राक्षस रावणसे भी बुरा है। रावणके दस मस्तक थे जिसके सैकड़ों हैं। जिन सबका नाश तंत्रोंसे नहीं होगा करोड़ों रुपयोंसे नहीं होगा हरिजनोंको अधिकार दिलानेसे नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंको मा-बेटीकी तरह मिलानेके लिये अुनके हृदय बदलने चाहिये। अैसा विशाल आध्यात्मिक कार्य हमारे पास जितनी भी आध्यात्मिक पूंजी हो अुसे खर्च कर दें तभी हो सकता है। यह मार्ग तो पुराना है। राजमार्ग है। आज तक नहीं सूझा यही आश्चर्य है।

दोनों शान्त रहना और समय आने पर सहयोग देना। मेरे साथ अुपवास हरगिज न करना।

तुम दोनोंको
बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन
बेलगांव

११९

य मं
(८-५-३३)

चि अमि

तुझे शनिवारको पत्र लिखा है। तू अबाव भी रोज लिख सकती है। जिसमें मुदुला भी साथ है। कोओी बहुत दुःखी न हो। परन्तु अब अपनेमें जहां जहां मैल लगा हो अुसे निकालनेका प्रयत्न करें। कोओी न

कभी यथासंभव रोज लिखा करेगा। मैं खूब शान्त हूं। हम स
आनंद कर रहे हैं।

श्री मणिबहन पटेल
प्रिज़नर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन
बेलगांव

बापूके आशीर्वा

१२०

(पर्णकुटी
पूना)
१५-९-४१

चि० मणि

नासिकसे (पूज्य बापूका) पत्र मुझे नियमित मिलता ही है किन्तु कारण मैंने कुछ भी नहीं लिखा। अब देखता हूं कि मैंने लिखा होता तो तुझे मिल जाता। खैर। अगर मैं बाहर रहा तो वहां होगा यहां तू मुझसे मिलने आ ही जायगी यह मान लिया है। मैं जानता हूं कि तू तो बिना बेलगाममें रहेगी। फिर नासिक तो जायगी ही। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं मजेमें हूं। आज बम्बई जा रहा हूं। २१ ता० को अहमदाबाद। २१ ता० को वर्धा।

श्री मणिबहन पटेल
सेन्ट्रल प्रिजन
हिंडलगा
बेलगांव

बापूके आशीर्वाद

१२१

(वर्धा)
२९–९–३३

चि॰ मणि

तेरा कार्ड मिल गया। तुझे जब तक रहना पड़े तब तक रहकर अच्छी होकर आना। बापूका पत्र मुझे भी मिला है। उससे मालूम हुआ कि उनके साथ आजकल चन्दूभाई[1] हैं।[2] बहुत ठीक हुआ। मुझे पत्र लिखती रहना। डाह्याभाईसे कहना कि मैंने करमचन्दको जवाब दिये हैं। मैं अच्छा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
रामनिवास पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड
बंबई – ४

१२२

वर्धा
७–१०–३३

चि॰ मणि

तेरा पत्र मिला। जहां मिलना हो वहां फुरसत लेकर आना। परन्तु इसका यह अर्थ न करना कि अगले पूनमें भी आये तो हर्ज नहीं। बाबाको जरूर साथ लाना। उसे अच्छा लगेगा। मैं अच्छा होता जा रहा हूं अर्थात् शक्ति आती जा रही है। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट,
बंबई – ४

---

१ डॉ॰ चन्दूलाल देसाई।
२ पूज्य बापू नासिक जेलमें थे उसका जिक्र है।

१२३

वर्धा
२२-१०-३३

चि० मणि

तेरा कार्ड मिला। तुम तीनोंकी राह बुधवारको देखूंगा। बाबा आयेगा न? तू अच्छी होती जा रही होगी। स्वामी आज पहुंचे हैं। शेष सारी बातचीत बुधवारको होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
ठि० श्री डाह्याभाई वल्लभभाई पटेल
पारेख स्ट्रीट
सैण्डहर्स्ट रोड
बंबई – ४

१२४

वर्धा
४-११-३३

चि० मणि

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाई काफी घूम रहे हैं। वहां पंचगनी अथवा हविमता पानी जाय यहां सबके ही लगातार घूमते रहें। तेरी देखभाल अच्छी तरह हो रही होगी। मुझे नियमित लिखती ही रहना। बाबा यहां आ गया यह तो बहुत अच्छा हुआ। बा तेरे आनेके बाद (चेक आनेके लिये) निकलेगी। तुझको लिये तैयारी तो कर रखनेकी जरूरत है ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मृदुलाबहन डाह्याभाईकी ६ बरसकी लड़की और मैं।

२ स्व० विट्ठलभाईका शव जहाजमें आ रहा था। उन दिनों इस बारेमें बंबईमें बड़ी खटपट और चर्चा हो रही थी कि उसका अग्नि-संस्कार कहां और किस ढंगसे किया जाय।

चि. मणि

डाह्याभाईका क्या हाल है यह मैं नहीं जानती। अुन्हें मेरे आशीर्वाद और बाबाको भी। तू जब वल्लभभाईको पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिख देना। मेरे बारेमें बापूजीने लिख दिया है जिसलिये मैं नहीं लिख रही हूं। यहां सब मजेमें हैं। बहुकि (समाचार) लिखना। यहां बापूजीसे मिलने बहुत लोग आते हैं। आज शंकरलाल आये हैं।

बाके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
ठि. श्री डाह्याभाई वल्लभभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बअी

१२५

वर्धा
५-११-३३

चि. मणि

तेरा पत्र मिला। मैंके वातावरणको डाह्याभाई काफी शुद्ध कर रहे हैं। मेरा वहां आना नहीं होगा। मुझे ब्यौरेवार लिखती रहना। बा कदाचित् यहांसे १३ तारीखको चलेगी। मुझे नागपुरका काम पूरा करके यहां लौट आना है। जितने समय यहां रह जानेका यह लोभ रखती है। अहमदाबादमें रणछोड़भाईके यहां रहेगी अैसा मानता हूं अथवा लाल बंगला तो है ही। यह तो मुझे देखना होगा।

---

१ श्री शंकरलाल बैंकर।

२ अुस समय मध्यप्रान्तमें पू. बापूजी हरिजन-यात्रा करनेवाले थे। अुसीका अुल्लेख है।

३ अहमदाबादके श्री रणछोड़भाई सेठ।

होता है लोग भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे दरबारके बखुदा सहन न होते मैं अपने ढंगसे कुछ कर न पाता। मैं तेरा या डाह्याभाअीका पथप्रदर्शन न कर सकता था। अिसलिये मैं मन मारकर बैठा रहा। अिसके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी बात भी है। यह भी तू जान ले। रसिक (भाभी) मृत्युशय्या पर था वह चाहता भी रहा होगा कि मैं अुसके पास पहुंचू। परन्तु मैं दिल्ली नहीं गया था पर्दा। रसिक मर गया। मैंने आंसू तक नहीं बहाया। मैं जा रहा था तब तार आया। ताना जवाब किया और अपने काममें लग गया! मेरे जीवनमें अैसी घटनायें बहुत हुअी हैं। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार बना रखे हैं जो दृढ़ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नहीं समझता। विवाह भयानक हो सकता है मृत्यु कभी नहीं। अिससे तेरी शंकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।

बड़ाका वर्णन तूने बढ़िया किया है। बड़ा पुजारा है। लोगोंका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नहीं है परन्तु जो चीज लोगोंको चाहिये अुसे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं अुसीके लिये यह प्रेम है। अिसलिये यह बड़ी निर्मल वस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है दुनियाकी आंखें खोलनेवाली है। विट्ठलभाअीकी स्वतंत्रताके पुजारी पर अिस बारेमें कोअी शंका कर ही नहीं सकता।

अब बाके बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अुस पत्रमें अधिक समझाता। बाका दिल कमजोर हो गया है। वह मंदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जानेका धर्म समझती है अिसलिये अुसे छोड़ नहीं सकती मगर मैं बाहर हूं अिसलिये अुसे मन्दर जाना अच्छा नहीं लगता। मैंने कोअी आग्रह नहीं किया। अुसकी मरजी पर छोड़ दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू अुसे धर्म-पालनमें दृढ़ बनाना और समझाना। तुझ पर मुझे

श्री विट्ठलभाअीकी स्मशान-यात्रामें भाग लेने पू॰ बापूजी नहीं गये। अिसीके कारण अिस पत्रमें समझाये गये हैं।

वास्ता और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूँगा तो वह हुक्मके रूपमें माना जायगा और वा रह जायगी। अिसलिअे कुछ नहीं कहता। नहीं कहता अिसका अर्थ भी वा तो अेक ही करती है कि मुझे जेल जाना ही चाहिये।

मेरे दांतोंकी और पैरकी बात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाअीको लिख रहा हूँ।

पत्र वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
रामनिवास
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बअी–४

१२८

(सेवाग्राम)
१९-११-४१

चि॰ मणि

तू अपने और कुटुम्बियोंके विचार मेरे सामने रख रही है यह बड़ी समझदारीकी बात है। डाह्याभाअी या मोहनभाअीके मनमें मेरे बारेमें जरा भी नाराजगी हो यह मुझे असह्य प्रतीत होता है। तू बम्बअीमें होगी तब तो मोहनभाअीके साथ लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। कुछ कहना मुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। अखबारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखबारवाले मुझे न समझें या जान-बूझकर गलतफहमी फैलायें तो अपना जवाब देनेकी मुझे इतनी जरूरत दिखाअी नहीं देती। परन्तु तुम भाअी-बहन चाहो तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति बिलकुल साफ है। डाह्याभाअी जो कहता है अुसमें काफी सार है। आज अखबारोंमें रोज खबर बनाये जा सकते हैं। रोजनिंदा

तू कुछ कहना चाहती है? पैरका अिलाज जितना हो सके अुतना तो करना ही। बिना सोचे-समझे अुतावली न करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
ठि. श्री डाह्याभाभी पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बअी – ४

१२६

नागपुर
९-११-३३

चि. मणि

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सब साफ लिखा यह समझदारी की है। अैसा ही करती रहना। तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्याभाभीको पत्नलक्ष्मी हुअी और पुत्र आया यह आश्चर्यकी बात है। मगर अुनका खयाल न करना। अुन्हें शायद सारी बात मालूम भी न हो। अुन्हें दुःख हो अिसे समझ भी सकता हूँ। तू ही जितना समाधान हो सके अुतना करना। तू चाहे तो मैं अुन्हें लिखूँ और अुनका दुःख मिटाअूँ। मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा। यह पत्र भी तू अुन्हें पढ़ाना चाहे तो पढ़ा देना।

बा मंगलवारको वर्धा छोड़ेगी। थोड़े समय अर्थात् कुछ घंटे अकोला रहेगी। फिर अुतर जायेगी। बा अिस समय कुछ दुविधामें है। चिन्तित भी है फिर भी (जेल) जानेका निश्चय अुसने अपने आप ही प्रगट किया है। तू अुसे अच्छी तरह पूछ लेना।

तू अच्छी तरह मालिश कराकर पाँवको यथासंभव सुधार लेना। मुझे नियमित लिखती रहना। विलायती अिलाज आवश्यक हो अुतना लेना ही। अहमदाबादमें भी किया जा सकता है। दांतोंका क्या किया?

होता है कोअी भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे सरकारके अंकुश सहन न होते मैं अपने ढंगसे कुछ कर न पाता। मैं तेरा या आश्रमवासीका पथप्रदर्शन न कर सकता था। अिसलिये मैं मन मारकर बैठ रहा। अिसके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी बात भी है। यह भी तू जान ले। रसिक (गांधी) मृत्युशय्या पर था वह चाहता भी रहा होगा कि मैं अुसके पास पहुंचूं। परन्तु मैं दिल्ली नहीं गया था पथी। रसिक मर गया। मैंने आंसू तक नहीं बहाया। मैं जा रहा था तब तार आया। खाना खतम किया और अपने काममें लग गया। मेरे जीवनमें अैसी घटनायें बहुत हुआी हैं। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार बना रखे हैं वे दृढ़ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नहीं समझता। विवाह भयानक हो सकता है मृत्यु कभी नहीं। अिससे तेरी शंकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।

यहांका वर्णन तूने बढ़िया किया है। बड़ा सुन्दर है। लोगोंका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नहीं है परन्तु जो चीज लोगोंको चाहिये वह अुसे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं अुसीके लिअे यह प्रेम है। अिसलिये यह बड़ी निर्मल वस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है दुनियाकी आंखें खोलनेवाली है। विट्ठलभाअी स्वतंत्रताके पुजारी थे अिस बारेमें कोअी शंका कर ही नहीं सकता।

अब बाके बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अुस पत्रमें अधिक समझाता। बाका दिल कमजोर हो गया है। वह मंदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जानेका धर्म समझती है अिसलिये अुसे छोड़ नहीं सकती। अगर मैं बाहर हूं अिसलिये अुसे अन्दर जाना अच्छा नहीं लगता। मैंने कोअी आग्रह नहीं किया। अुसकी मरजी पर छोड़ दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू अुसे धर्म-पालनमें दृढ़ बनाना और समझाना। तुम पर अुसे

---

१ श्री विट्ठलभाअीकी श्मशान-यात्रामें भाग लेने पू॰ बापूजी नहीं गये। अुन्हींके कारण अिस पत्रमें समझाये गये हैं।

आस्था और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूँगा तो वह द्वेषके रूपमें माना जायगा और बा दब जायगी। असलिये कुछ नहीं कहता। नहीं कहता असका अर्थ भी बा तो अेक ही करती है कि मुझे अेक जाना ही चाहिये।

तेरे दाँतोंकी और पैरकी बात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाजीको लिख रहा हूँ।

पत्र जल्दी ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
रामनिवास
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बअी-४

१२८

(चितलदा)
१९-११-३३

चि॰ मणि

तू अपने और कुटुम्बियोंके विचार मेरे सामने खोल रही है, पर यही गलतफहमीकी बात है। डाह्याभाजी या गोरधनभाजीके मनमें मेरे बारेमें जरा भी गलतफहमी हो यह मुझे असह्य प्रतीत होता है। तू बम्बअीमें होगी तब तो गोरधनभाजीके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। अुस परसे तुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। अखबारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखबारवाले कुछ न समझें या जान-बूझकर गलतफहमी फैलायें तो अनका जवाब देनेकी कुछ हमेशा जरूरत दिखाअी नहीं देती। परन्तु तू अैसी-वैसा चाहे तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति बिलकुल साफ है। डाह्याभाजी जो करना है अुसमें काफी समय है। दान वगैराके बारेमें दोष जरूर बताये जा सकते हैं। दोनोंमिल

कौन है? परन्तु मेरे व अुनके साथ विठ्ठलभाअीके दोषोंका कोअी संबंध नहीं। जो आदर दूसरे नेताओंने पाया है वह पाने लायक विठ्ठलभाअी भी जरूर थे। अुनका त्याग अुनकी लगन अुनकी कुशलता कार्यके प्रति अुनकी वफादारी ये सब गुण दूसरोंसे अुनमें कम हरगिज नहीं थे।

तेरी अपनी अुदारता मुझे चकित कर रही है। यह तेरी ही विशेषता नहीं है जिसे समझ लेना। मैंने यह चीज असंख्य स्त्रियोंमें देखी है। स्त्रिया अपने प्रति हुअे दुर्व्यवहारको भूल जानेके लिअे हमेशा तैयार रहती हैं। अिस गुणसे स्त्रीजाति सुशोभित हुअी है। परन्तु स्त्रीके अिस गुणका पुरुष जातिने खूब दुरुपयोग किया है। परन्तु यह तो विषयान्तर हो गया। मेरी दृष्टिसे अब तू सुशोभित हो रही है, जिसका मैं गर्व कर सकता हूं न?

पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
रामनिवास
सैन्डहर्स्ट रोड
पारेख स्ट्रीट
बम्बअी–४

१२९

कड़ला,
२–१–१४
सुबहके ४ बजे
प्रार्थनासे पहले

चि० मणि

तेरे समाचार अब सीधे मिलते या नहीं यह प्रश्न है। सरकारकी आज्ञा निकली है। मिलनेसे सन्तोष नहीं हो सकता। डाह्याभाअीसे पुछवाता हूं। तू मिल सके तो मिलना। शरीर और मन अच्छा

रखना। मेरा तो ठीक चल रहा है। बाको हर हफ्ते नियमित और लम्बे पत्र लिखता हूं। आज तो लिखना ही।

पता वर्धाका लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
प्रिजनर
हिंडलगा सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगाम

१३०

(कानपुर)
२१-७-३४

चि. मणि

तू ठीक नियमसे लिखती रहती है। असी तरह लिखती रहना। मेरे पत्रकी आशा न रखना। महादेव है अिसलिअे मैं कुछ पत्र लिखनेसे बच जाता हूं। अब सरदारको भी लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। तेरी तरह मैं भी मानता हूं कि तेरा वहां रहना ही तेरे लिअे सुन्दर औषधि है।

शायद अब तो जल्दी ही मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : सरदारका पत्र तेरे ही साथ भेज रहा हूं। उसे बापूको तुरन्त पहुंचा देना। तूने आश्चर्यकारी बात कहकर बापूको काफी मस्त कर दिया। ऐसे तो मैंने सभी लोगोंके साथ बातें की थीं। परन्तु मैं अकेला कहां हूं? मेरे साथ कोई नहीं तो देवदास और [illegible] तो है ही। अिसलिअे हमारा मकान बिलकुल खाली नहीं है। वर्धामें सारा निश्चय होगा ऐसी आशा रखें।

१११

(कानपुर)
२५-८-३४

चि. मणि

तेरी दो पंक्तियां पढ़ीं। तू आजकल नहीं लिखती यह बिलकुल ठीक है। स्वास्थ्यकी लापरवाही न करके उसे अच्छी तरह सुधार लेना। लिखने योग्य हो तब तो अच्छी तरह लिखना ही। अब मुझ पर बहुत दया करनेकी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

११२

वर्धा,
११-१-३५

चि. मणि

तू बीमार क्यों पड़ती रहती है? पितृभक्तिका यह अर्थ तो नहीं करती कि पिता बीमार पड़े तो तू भी बीमार हो जाय? माता-पिता अपंग थे तब श्रवणने अपना शरीर वज्र जैसा बनाया और अपने कंधे पर कावड़ रखकर दोनोंको यात्रा कराई थी। मिस सिमरकी लड़कीने खूब तंदुरुस्त रहकर पिताकी सेवा की थी। तू क्यों बुढ़िया जैसी बन कर बैठी है? अपच न हो तो बुखार और बुखार न हो तो सरदी कुछ न कुछ तो रहता ही है। इसका कारण ढूंढ कर वज्र जैसी काया क्यों नहीं बना डालती?

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
८ वॉर्डन रोड
बम्बई

१३३

वर्धा
१२-११-३५

चि. मणि

अिसके पीछेका भाग बापूको पढ़ा देना। अैसी खबर है कि जवाहरलालके व्यवहारसे सब बहुत खुश हो गये थे।

बापू मजेमें होंगे। वे डॉक्टरोंको हंसाते होंगे[1]। तू अपने स्वास्थ्यके विषयमें गाफिल न रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
८९, वॉर्डन रोड
बम्बअी

१३४

(कानपुर)
२१-८-३७

चि. मणि

केवलराम[2]का पत्र तो तूने भी वापस दिये मुझीमें था। मुझे पता नहीं कि तारका पहला भाग नहीं था। अब दोनों अिसके साथ भेजता हूं। आज मीराबहन दिल्लीसे आनेवाली गाड़ीमें ९–८ पर आ रही है। राजकुमारी कल सुबह बम्बअीसे आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके पास
बम्बअी

१ अुस समय पू. बापूकी नाकका ऑपरेशन कराया गया था।
२ स्व. केवलराम। अेक आश्रमवासी।

१३५

डेरा अिस्माअीलखां
२८-१०-३८

चि. मणि

कभी बर्षोंमें तुझे मेरे नाम पत्र लिखना पड़ा है। काफी खबरोंसे भरा है। अिसी तरह लिखती रहना। नासिककी सिपाही-शाला[1] सम्बन्धी खबरको सच मानकर मैंने टिप्पणी लिखी है। तू खेर या मुन्शीसे मिले तो बात भी करना।

वहांका अधिकारी वर्ग यदि मद्य-निषेधके काममें दिलसे सहयोग न दे तो मंत्रियोंको गवर्नरसे दृढ़ताके साथ कहना चाहिये। अुनका दिल अिस काममें नहीं यह विश्वास होना चाहिये।

जमीनोंकी बाबत तो मलकानीजीका पत्र आया अुसके पहले ही मैं लिख चुका था। अिस सम्बन्धमें विधान-सभामें हुअी चर्चा[2] मुझे भेजना।

अश्लील साहित्यके बारेमें कदम अुठाये ही नहीं जा सकते यह मैंने नहीं कहा। अपनी राय जरूर दी। मुझे यह अन्देशा जरूर है कि लोगोंको गंदगी अच्छी लगती है, जिसलिये यह लेखाजेख दूर नहीं होगी। लोगोंको ही घिन आये तब यह बन्द हो। मैं तो मानता हूं कि अश्लील लेख वगैरा कानूनसे बन्द हो सकते हों तो अुन्हें अुस तरह बन्द करनेका प्रयत्न होना चाहिये। परन्तु अितना याद रख कि विद्यार्थीको अैसी चीजें पढ़नेको मजबूर करनेमें और अखबारोंमें भी अिन्हें छापनेमें बड़ा फर्क है।

---

१ नासिक जेलमें पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (थानेदारोंको तालीम देनेवाली पाठशाला) है। वहां तालीम पानेवाले अुम्मीदवारोंको खानेके भोजनमें शराब दी जाती है अैसा मैंने सुना था और अुसके बारेमें पू. बापूजीको खबर दी थी।

२ रास और बारडोलीकी जो जमीनें सरकारने जब्त कर ली थीं और दूसरोंको बेच दी थीं अुन्हें खरीदारोंसे वापस लेकर असल मालिकोंको लौटानेके बारेमें विधान-सभामें विधेयक पेश हुआ था अुस पर हुअी चर्चा।

राजकोटका[1] मामला अद्भुत है। जो हो रहा है वह टिका रहेगा तो लोग मुँहमांगा ले सकेंगे जिसमें सन्देह नहीं। त्रावणकोर[2] के बारेमें बापूने ठीक किया है। रामचन्द्रन्‌को बुलाकर अच्छा किया। यद्यपि बापूका पत्र आया अुससे पहले मैं अपना बयान[3] तो प्रकाशित कर चुका था। मेरा खयाल है कि मुझे बयान देना ही चाहिये था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी बात नहीं रहती।

नाकमें से पानी गलेमें टपकता रहे[4] यह बिलकुल अच्छा नहीं कहा जा सकता। जिसे मिटाना ही चाहिये।

बड़ोदेकी बात समझा। भावरवर्में[5] जो कुछ हो वह बताना।

मैं १५ तारीखके आसपास वर्धा पहुँच जानेकी आशा रखता हूँ। यहाँ[6] का काम ९ तारीखको पूरा होगा।

---

१ राजकोट सत्याग्रहका प्रारम्भ जिस समय हुआ था।

२ त्रावणकोर राज्यमें राज्यके विरुद्ध सत्याग्रह हो रहा था। अुस समयके दीवान सर सी पी रामस्वामी अैयरने पू बापूको त्रावणकोर बुलाया था। अुन्होंने जवाब दिया था कि यदि मुझे जेलमें बन्द सत्याग्रहियोंसे मिलने दिया जाय तो मेरा वहाँ आना सार्थक होगा।

३ जिस बयानमें अुन्होंने त्रावणकोरके विद्यार्थियोंके अुपद्रवका अुल्लेख करके अुन्हें मन वचन और कर्मसे अहिंसाके पालनका आदेश दिया था और लड़ाकी चलानेवालोंसे यह विचार करनेको कहा था कि वे हिंसाकी शक्तियोंको काबूमें न रख सकें तो लड़ाकीके हितमें ही सविनय कानून-भंग स्थगित करनेमें समझदारी है या नहीं। सम्पूर्ण वक्तव्यके लिअे देखिये हरिजनसेवक ता २२-१०-३८ पृ २८७।

४ पूज्य बापूको तेज जुकाम होता था तब नाकका पानी गलेके भीतर अुतर जाया करता था।

५ भावरवमें बड़ोदा राज्य प्रजा मण्डलके १९३८ के अधिवेशनके पू बापू अध्यक्ष थे।

६ अुस समय पू बापूजी गफ्फार खानके प्रदेशमें थे। अुसीका अुल्लेख है।

सुभाषबाबूके बारेमें जो हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। अिसीलिये मैंने कार्य-समितिमें थोड़ीसी चर्चा तो की थी। परन्तु बापूकी राय यह थी कि जवाहरलालके आने तक राह देखें। अिसलिये मैं चुप रहा। अिस बार अध्यक्षके चुनावमें कठिनाअी तो होगी ही। मैंने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है अुस पर बापू विचार करें। मेरी राय है कि जैसा हो रहा है वैसा होने देनेमें हानि है।

अब दोनों पत्रोंके अुत्तर आ गये। बापूको फुरसतमें पढ़ा देना।

मेरा स्वास्थ्य सचमुच ही अुत्तम रहता है। बापूको अिस प्रान्तमें आना चाहिये। मौलानाको साथ लेकर।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी

१३६

सेवाग्राम
२८-११-३८

चि. मणि

तेरा पत्र मिल गया। जितने कामोंमें तू हिस्सा लेगी यह आशा नहीं रखी थी। दूर बैठा बैठा तेरे पराक्रम देख रहा हूं। तू पुण्यशाली है। तेरी हिम्मतके बारेमें मेरे मनमें कभी शंका नहीं थी। तू जेलमें यथासंभव न जाना। यह काम राजकोटवालोंका है।

तेरा शरीर ठीक रहता होगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
दरबारके पास
राजकोट

१ राजकोट सत्याग्रहके समय पूज्य बापूने मुझे राजकोट भेजा था। यह पत्र वहांके पते पर लिखा गया है। बादमें मुझे वहां गिरफ्तार कर लिया गया था।

१३७

सेगांव-वर्धा
५-१२-३८

चि. मणि,

तेरा वर्णन बढ़िया है। तेरे कामका क्या पूछना? तू मेरा कहना मानकर शरीरमें तेल मलवाना[1] अथवा स्वयं मलना। जो सिपाही अपना शरीर स्वस्थ नहीं रखता वह सजाका पात्र होता है। असा ही होना चाहिये।

लोग अहिंसाका पाठ समझ गये हों और मारपीट वगैरा सहन कर लें तो अुनकी हार होती ही नहीं। महादेव यहीं है। मजेमें है। जानबूझ कर कम लिखते हैं। अिस बार 'हरिजन' में बहुत लिखने दिया है। असा बार-बार नहीं होने दूंगा। कुछ भी जिम्मेदारी न होना अच्छा है। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो ठीक ही है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
तारघरके पास
राजकोट

१३८

सेगांव-वर्धा
२१-१२-३८

चि. मणि,

तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है यह बहुत अच्छा है। खुराक वगैराका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह बिताती है?

---

१ सूखी हवा और ठंडमें चमड़ीके भाग फट जाते हैं और खून निकलने लगता है। राजकोटकी सूखी हवा और ठंडमें मेरे सारे शरीरकी लगभग यही हालत हो गयी थी।

२ श्री महादेवभाईको अुस समय रक्तचाप काफी रहता था।

महादेव कलकत्तेके पासकी गोशाला देखने ४ दिनके लिये गये हैं। २४ ता० को आ जानेकी संभावना है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बाको यहाँ आनेकी अिजाजत¹ तो अभी नहीं मिली। कुसुम गुरुकुलके लिये देहरादून जा रही है। मैं पहली जनवरीको बारडोली जा रहा हूँ। तुझे और मृदुलाको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
स्टेट जेल
राजकोट (काठियावाड़)

१५९

सेगांव-वर्धा
१९–२–३९

चि० मणि

तेरा लम्बा पत्र और और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो जो कदम² उठाये उनसे मैं तो मुग्ध हो गया हूँ। कहीं दोष निकालने जैसी बात नहीं। मैं देखता हूँ कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गयी है। अिसलिअे बिलकुल निश्चिन्त हूँ।

---

१ पूज्य बापू अिजाजत देते तभी बाहरका कोअी आदमी लड़ाअीके लिअे राजकोट जा सकता था।

२ पूज्य बाको और मुझे पकड़कर स्टेशनसे सीधे सणोसराके डाक-बंगलेमें ले जाकर रखा गया था। वह मकान सूना पड़ा था और वहाँ कोअी सुविधा नहीं थी। वहाँ पहुँचनेके बाद पूज्य बाकी तबीयत बिगड़ गयी। दूसरे दिन मुझे राजकोटके जेलमें दूर किया गया। मैंने जब तक पूज्य बाके साथ मुझे या राजनीतिक कैदियोंमें से पूज्य बाकी देखभाल कर सकनेवाली किसी बहनको न रखा जाय तब तक खाना लेनेसे अिनकार कर दिया। अिस बीच पूज्य बाको सणोसरासे अलग हटा दिया गया था। तीसरे दिन मुझे भी अलग ले गये। वहाँ पहुँचनेके बाद पूज्य बाने मुझे खाना खिलाया। मृदुलाको पकड़कर अलग लाये तो हम तीनों साथ हो गये।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो तीन आये थे। यहांसे रोज पत्र गये हैं। पहले तू बताती थी अुस पते पर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते तब मुझे तार दिया गया कि पत्र फर्स्ट मेम्बरके मारफत भेजे जायं। अब मैं वैसा ही करता हूं।

तुम्हारी तरफसे तो रोज मिलते ही हैं। अिसलिये शान्ति है।

मृदुको अच्छा नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहांका भार कम है जो वह कांग्रेसका अुठायेगी?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
स्टेट प्रिजनर,
ठि. फर्स्ट मेम्बर ऑफ दि कौन्सिल
राजकोट (काठियावाड़)

१४०

सेगांव
१८-२-३९

चि. मणि और मृदुला

तुम दोनों वहां हो यह अीश्वरका अनुग्रह है। तुम तीनों सबके साथ हो यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु अीश्वर जैसे रखे वैसे रहना है।

सुभाषबाबू वगैराके बारेमें तुम्हें कुछ विचार करनेका नहीं है। अिसके लिये तो तुम जेलमें ही हो। अीश्वर मुझे जैसी सूझ देगा वैसा करता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
कैदी
फर्स्ट मेम्बरके मारफत
राजकोट

१४१

राजकोट,
५-३-३९

चि मणि

तू क्यों परेशान होती है? ये अनुभव क्या तेरे लिये नये हैं? अिस मामलेमें तो तू मेरी आशासे आगे बढ़ गयी है। मैं अपने आप आया हूँ। धर्म समझकर आया हूँ। अीश्वरकी प्रेरणासे आया हूँ। अब भी दुखी न होना। आजतक किसीको पत्र नहीं लिखता। अेक बाको लिखा था यह तुझे लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
कैदी
फर्स्ट मेम्बरके मारफत
राजकोट

१४२

सेवाग्राम-वर्धा
४-५-३९

चि मणि

तेरे भेजे हुये धागे अच्छे हैं। मुझे पत्र लिखनेकी अपेक्षा तू काते तो अधिक अच्छा।

बापूसे पूछना कि वे अेक हजार मैं बम्बई भेजूँ या सीधे पृथ्वीसिंहको। बापूकी तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
मारफत सरदार पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बई

१४५

सेवाग्राम-वर्धा सी पी
१९-५-'४१

चि मणि

तेरा पत्र आज मिला। आशा तो रखता हूं कि यह तुझे जेलमें ही मिलेगा। अेक पत्र मैंने तेरे लिये डाह्याभाईको भेजा है। यह अच्छी खबर है कि तूने अपने स्वास्थ्यको संभाला है।

छूटने पर तुझे थोड़े समय बम्बई रहना हो तो वहां रहकर मेरे पास आ ही जाना। अहमदाबाद¹ के बारेमें मृदुला और गुलजारी साथ आये हैं। यहीं हैं। बातें हो रही हैं। बापूको या तुझे जेलमें बैठकर ऐसी बातका विचार ही नहीं करना चाहिये। अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। जमनालालजीके बारेमें चिन्ताका बिलकुल कारण नहीं। सब ठीक हो रहा है। मनु दिल्ली मजेमें है। आ थोड़े दिनोंमें दिल्लीसे आ जायगी। मीराबहन (आश्रम) मुझसे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

[illegible] मणिबहन पटेल

[illegible]

[illegible]

[illegible] अहमदाबाद मजदूर-संघके मंत्री।

[illegible] राष्ट्रीय सरकारके [illegible]

[illegible] कृपाप्रार्थी।

[illegible] पुत्र।

१४६

सेवाग्राम-वर्धा सी पी
२ –५–४१

चि मणि

तुझे अेक पत्र लिखा है। अुसमें मिलना चाहिये। यह तेरे पत्रके अुत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मानूं कि यदि मैं अहमदाबादमें होता तो जो दंगा हुआ वह न होता? आज किसीके लिअे अैसा कहना मुश्किल है। मैं अीश्वरके चलाये चलता हूं। अुसने मुझे यहां रख दिया है। मैं जानता हूं कि गुजरातमें अैसे बहुतसे स्थान हैं जहां मैं बस सकता था।

मनुभाओी[1] बड़ी बहादुरी दिखला रहे हैं। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

बा तो आजकल नओी दिल्लीमें (निमोनियासे) रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोओी कारण नहीं। कल मैंने लीलावतीको वहां भेजा है। जानकीबहन[2] की तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। मंजुबहनने किस आधार पर खराब बताओी? वे पहले कभी नहीं घूमती थी अुतना आजकल घूमती हैं। अच्छी तरह खाती हैं।

कनु[3] की सगाओीकी बात खतम रही है। अभी तो नहीं होगी यही मानकर चलना है। लड़की भी अपने घर गयी है।

मीराबहन चोरवाड़में गरमी बिता रही हैं। दुर्गाबहन[4] की तबीयत अच्छी होती जा रही है।

---

१ श्री मिश्रीके पुत्र। मिश्रीके देहान्तका अुल्लेख है।
२ स्व जमनालालजी बजाजकी पत्नी।
३ श्री नारणदास गांधीका पुत्र।
४ स्व महादेवभाओी देसाओीकी पत्नी।

तू वहाका काम ठीक करके दो तीन दिन मेरे पास रह जाय यह मैं जरूर चाहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि. डाह्याभाई

मणिबहन आवे तब यह पत्र मुझे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१४७

सेवाग्राम-वर्धा सी पी,
११-८-४१

चि. मणि

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाई[1] ने तो जवाब दिया ही। मानमती का ऐसा क्यों हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कर सकते? बच्चीका जीना कठिन है। जिये तो भी शायद दुर्बलता रह ही जायगी।

बापूका मेरे पत्र पहुंचे क्या? जल्दी पहुंचें इसलिये जोहरी सावधानी तो रखी थी।

मेरे परेशान होनेका कुछ भी कारण नहीं। इस हालतमें जेल जानेका धर्म और ही है। बाहर बैठकर तू बापूका ही काम कर

१ आश्रमवासी श्री किशोरलाल घ. मशरूवाला।
२ मेरी भाभी
३ गांवगाममें बाढ़-संकट आया था। उसके लिये चंदा करनेमें मणिबहन के साथ मेरी भाभी थी।

९

रही है। जिस समय जेलमें जायगी तो मनको झूठा संतोष देगी। जानेका समय आने पर तुझे अेक क्षणके लिअे भी नहीं रोकूंगा। अभी तो जो गुजराती काम करें अुन्हें काम देते रहना है।

सूखे अच्छे अंजीर मुझे पांच पौंड भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गये होंगे। अब तक कितना चंदा हुआ? यहां ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल और
श्री महादेव देसाअी
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१४८

सेवाग्राम
११-८-'४१

चि मणि

तुझे तो मैं जान-बूझकर नहीं लिख रहा था। अभी तुझे जेलमें नहीं भेजना है। समय आने पर तो भेजूंगा ही। तू बाहर रहकर भी काम तो कर ही रही है। तुझे भेजनेका समय जरूर आयेगा। अभी तो निश्चिन्त होकर सेवा करना और अपना स्वास्थ्य अच्छा कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१४९

(सेवाग्राम)
१-९-'४१

चि. मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने सारा ब्योरा[1] भेजा सो ठीक किया। मैंने कल जसावाला[2] का पत्र भेजा है। उसके अनुसार तुरंत इलाज करनेका मेरा तो आग्रह है। तबीयत बहुत गिर जानेके बाद इलाज बेकार भी जा सकता है। डॉ. नाथूभाई[3] से चर्चा कर लेनेकी मुझे तो जरूरत मालूम होती है।

मुझे बराबर समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१५०

(महाबलेश्वर)
२७-२-'४५

चि. मणि,

चि. डाह्याभाई लिखते हैं कि तू कल छूट रही है। वे यह भी कहते हैं कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आनेकी सुविधा हो तो तू यहां आ ही जाना। न आ सके तो पूरा पत्र लिखना। तुझसे मिलनेको तो मैं उत्सुक हूं ही। बहुत समय हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ व्यक्तिगत सविनय भंगके समय पू. बापूको स्वास्थ्यके कारण जेलसे छोड़ दिया गया था। उनके स्वास्थ्यके ब्योरेवार समाचार मैंने पू. बापूजीको लिखे थे।

२ बम्बईके अेक प्राकृतिक चिकित्सक।

३ डॉ. नाथूभाई पटेल अेम. डी. बम्बईके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

१५१

महाबलेश्वर
२२–४–'४५

चि॰ मणि

तूने पत्र ठीक लिखा। मैं जानता हूं कि दूध वगैराकी सुविधा बापू प्राप्त कर लेंगे। अिसलिअे चिन्ताकी बात ही नहीं।

तेरा स्वास्थ्य बिलकुल सुधर जाना चाहिये। तू जितने अधिक मेहनत करती है जिसके औचित्यके बारेमें मुझे शंका है। तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की परन्तु मनमें यह बात बनी रही है। अिसे लिखनेका विशेष हेतु तो यह है कि अहमदाबादका काम निबटाकर तुझे यहां आ जाना है यह याद रखना।

यहां सबको आशीर्वाद। डॉ॰ (कानूगा) अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन वल्लभभाई पटेल
मारफत डॉ॰ कानूगा
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद

१५२

महाबलेश्वर,
२७–४–'४५

चि॰ मणि

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। भूलसे रख लिया था परन्तु निजी देखकर तुरन्त ही मेरे पास पहुंचा दिया।

परन्तु तूने जो लिखा अुसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरे सम्मानके लिअे और तुझे निर्भय करनेके लिअे ही फाड़ा है और वैसा ही तेरे पास भेज चुका।

१ पू॰ बापू अुस समय अहमदनगरके किलेमें नजरबन्द थे। अुनके स्वास्थ्यके समाचार मेरे नामके पत्रमें आते थे। वे मैंने पू॰ बापूजीको लिखे थे।

अुपवास तो शायद हममें सबसे अधिक मैंने किये होंगे। दक्षिण अफ्रीकामें तो चाहे जिस बहाने कर डालता था। अेक वर्षसे अधिक समय तक अेकासन भी किया। मेरी राय है कि जिसकी अपेक्षा अल्पाहार बहुत बड़ी चीज है। अुपवासका स्थान है मगर मृत्युके निमित्त हरगिज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं? मैंने यह भी किया है परन्तु विचार करके छोड़ दिया। जिससे तू अपने अेकासनकी बात समझ ले। शरीर अीश्वरका घर है। अुसे ज्योंका त्यों ही रखना चाहिये।

तेरा दुबलापन क्या मैं नहीं जानता? मोतीलालजीने[1] तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साथियोंके प्रति अुदार रहना चाहिये। तू अैसा नहीं करती जिसलिअे तेरा पड़ोसी-धर्म भंग होता है। फिर तू अपना दोष मान लेती है। मानना या तो दोषको पकड़ रखनेके लिअे या दोषको निकालनेके लिअे होता है। क्या तू दोषको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी दुबलता दूसरोंको दे और अपनीकी रक्षा तो कर ही। मेरी तरह अपने लायक साफ कर लेना। जेलमें रहकर भी यह कला नहीं सीखी? महादेवके पाससे तूने क्या लिया? अुनकी अुदारता तूने देखी थी?

जितना तो तेरे लिअे बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहां आ जा। मेरे लिअे मत आना। आये तो धर्म समझकर और मनको अुदार बनाकर या बनानेके लिअे आना। अगर तुझे बुरा लगा हो तो यहां आकर क्या लेगी? अपने दोषोंको पहाड़के समान मानें और दूसरोंके दोष पहाड़ जैसे हों तो भी अुन्हें रजकणके समान मानें तब मेल बैठेगा।

कुछ भी सामग्री न रखनेका नियम बना ले तो जिसकी नकल भेज देना। बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल
मारफत डॉ० कानूगा
अहमदाबाद

१ पंडित मोतीलाल नेहरू।

महाबलेश्वर
१-५-४५

चि मनि

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

अुपवासके बारेमें तू लिखती है अतः मैं सूचित करता हूं कि अुसे केवल शरीर-शुद्धिके लिअे ही कर। तब तुझे खुद ही अपना पता चल जायगा। और अुसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा तो मिल जायगा और तू वहम या आडम्बरसे बच जायगी। महादेव या बाके लिअे और कुछ नहीं तो अुपवास तो करें, यह विचार बिलकुल गलत है। वे जाग्रत हों तो अुन्हें क्लेश ही हो। प्रियजन चल बसें तब अुनके लिअे अुनका प्रिय और कठिन काम हम करें। अिसलिअे महादेव जैसे मीठे बननेकी कोशिश करें। बाके समान आस्तिक बननेका प्रयत्न करें। ये दो अुदाहरण तो जबान पर आ गये अिसलिअे दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते हैं। शरीर केवल अीश्वरके रहने या आत्माको पहचाननेका घर है यह जान लें तो सब कुछ अपने आप ठिकाने आ जाय। अैसा हो जाय तो धर्मके नाम पर चल रहा ढोंग मिट जाय। तेरा जीवन सरल है अिसलिअे और बहुतसे प्रलोभनोंको तू पार कर सकी है अिसलिअे मैं अितना परिश्रम तेरे लिअे कर रहा हूं। तू सब तरहसे सूखी अुठ जाय तो मैं जानता हूं कि तू बहुत अधिक काम कर सकती है।

अिसी कारणसे तुझे यहां अथवा आश्रममें खींच लाता है। बापू स्वयं नहीं चाहते हैं अिसलिअे तुझे जीनेका मनमें अधिक अुत्साह होता है। अैसा हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहूंगा कि अेक घड़ी भी तू मुझे छोड़कर कहीं रहे। और तू मेरे आसपास होगी तो तुममें सहनशीलता बढ़ेगी क्योंकि यह स्थान अैसा है जहां अनेक स्वभावोंके अनुकूल बननेकी और अलिप्त रहनेकी जरूरत है। अर्थात्

हम गुणग्राही बनकर रहें। दूसरोंका अवलोकन करके हम गुणके गुणोंका अनुकरण करें, और अवगुणोंको सहन करें क्योंकि अवगुणोंको दूर करनेका सबसे अच्छा उपाय यही है। इसलिये जल्दी आना।

मंजुबहन दीवान मास्टर,[1] कानूगा वगैराके समाचार तूने भेजे यह ठीक किया।

अब तो सवेरा हो गया और रोशनी बुझा रहा हूँ। इसलिये बस।

वहां सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
मारफत श्री डाह्याभाई पटेल
मरीन लाइन्स
बम्बई

१५४

महाबलेश्वर,
५-५-'४५

चि० मणि

तूने अच्छा पत्र लिखा। जो खबर तूने दी वह और कोई मुझे न देता। बापूका पत्र कानजीभाई को दे आना। अब तो तू यहां आनेवाली है, इसलिये अधिक नहीं लिख रहा हूँ। कल नरहरि (परीख) मणिलाल (गांधी) कमलनयन[3] और सत्यनारायण[4] आये थे।

१ स्व० जीवनलाल दीवान।

२ श्री कन्हैयालाल नानाभाई देसाई। गुजरात कांग्रेस समितिके १ ४५ से १९५१ तक अध्यक्ष। १९४६ से संविधान-सभाके सदस्य। उसके बाद १९५२ तक लोकसभाके सदस्य।

३ श्री जमनालाल बजाजके पुत्र।

४ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समितिके मंत्री।

आज मुन्शी आयेंगे। कमलनयन और मुन्शी तो जैसे आये वैसे चले जायेंगे।

शुभ सबको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
मारफत श्री डाह्याभाई पटेल
६८, मरीन ड्राइव
बम्बअी

१५५

(सेवाग्राम)
२५–७–'४५

चि॰ मणि

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिये।

यह तो तुझे पुष्पा[1] के बारेमें लिख रहा हूं। वह बहुत दुःख पा रही है। अुसने मुझे मिलनेको लिखा है। परन्तु तू अुससे मिलने जायगी तो ठीक है। वह अपने घर तो होगी ही। पता है नयी हनुमान गली धरडाकी चाल दूसरी मंजिल कमरा नं॰ १९, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मारफत।

तेरा स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
मारफत श्री डाह्याभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बअी

---

१ बम्बअीकी यह लड़की घरसे भागकर पू॰ बापूजीके पास चली गयी थी। अुन्होंने अुसे समझाकर घर वापस भेज दिया था। पर वह फिर आश्रममें लौट आयी। आजकल श्री भणसालीके पास आश्रममें रहती है।

१५६

पूना
२७-११-'४५

चि. मणि

तेरे दो पत्र मिले। कानजीभाओीके नामका पत्र तेरे पास भेज रहा हूँ। तू अपनी रायके साथ भेज देना।

अरवडा पैक्टके बारेमें अेक सवालका विचार करना। पैक्टमें दस वर्षकी बात है। परन्तु यह १९३५ के कानूनमें नहीं है। तो मुदत अमल कानूनसे कराया जा सकेगा या नहीं? पकवासा[1] विचार करें। कौंसिलसे मिलना हो तो मिलें। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता न भी करे। राजनीतिक रूपमें लड़ा जा सकता है। अिस विषयमें दो मत नहीं हो सकते। यह जरूर सोचना है कि अिस समय यह लड़ाओी छेड़ी जाय या नहीं। परन्तु अिसकी चर्चा तुम्हारे यहां आने पर कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बओी

१५७

[यह पत्र पू. बापूजीने मौनमें लिखा था।]

(वाल्मीकि मंदिर,
नओी दिल्ली
१९४५ के बाद)

नकल करनेका काम तो मनुको सौंपा है। मैंने तुझसे कहा था कि मनुसे लिखवाना। तेरी भी दूसरी नकल है अिसलिओ अिसे पास करता हूँ। और यही हुआ। परन्तु अिसमें दोष है। हमेशा हाशिया जरूर छोड़ना चाहिये। रोज पत्र आते हैं। अुनका तू अवलोकन करती

1. श्री मंगलदास पकवासा बम्बओीके अेक सॉलीसिटर। बम्बओीकी कौंसिलके अध्यक्ष थे। आजकल मध्यप्रदेशके गवर्नर।

हो तो पता चलेगा कि तैयार किये हुअे पत्रोंमें हाशिया जरूर होता है। अब दूसरा मत लिखना। यह तो भविष्यके लिअे तुझे लिखा है। यह तो मैंने तुझे सिर्फ बता दिया।

१५८

सेवाग्राम
१८-२-'४६

चि० मणि

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छे समाचार दिये हैं।

बापसमानो मोह[1] (विवाह-समारंभोंका मोह) गुजरातीमें होने पर भी सबके लिअे है।

अखबारकी कतरन लौटा रहा हूं।

तेरे सुझावों पर जितना अमल हो सकेगा करूंगा।

तू अपना स्वास्थ्य संभालना। अब तो जल्दी ही मिलना है, अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१५९

१८-७-'४७

चि० मणि

यह पत्र देखना। सरदारको पढ़ाना हो तो पढ़ा देना। समय न मिले तो यह बात ही मत करना। जो होना है वह हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अकबर[2] का पत्र लौटा देना या भेज देना।

---

१ देखिये हरिजनसेवक १०-२-'४६, पृ० ८।

२ श्री अकबरभाअी चावड़ा। सपाड़ीमें रहनेवाले सेवाग्राम आश्रमनिवासी। आजकल लोकसभाके सदस्य।

१६०

११-७-'४७
रेलमें ४-१ बजे

चि. मणि

साथका पत्र[1] पढ़कर जो करना हो सो कर। तेरी अनन्य पितृभक्तिने तेरे हाथमें महान सेवा करनेका अवसर दिया है। जिसका जो अुपयोग करना हो करना।

काश्तकारों के बारेमें जो पत्र मैंने लिखा अुसमें कुछ तथ्य है क्या? जिन लोगोंने ब्यौरेवार लिखा है।

साथका पत्र राजकुमारीको देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन
ठि. सरदार पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

१६१

सोदपुर
११-८-'४७

चि. मणि

आपके पत्र पर तो डाह्याभाईको हस्ताक्षर करने हैं, ऐसा लगता है। तू देख लेना। मुझे तो जिस विभागका पता भी नहीं। शायद आपके हस्ताक्षर चाहिये। तू देख लेना और फिर जो करना हो वह लिखना।

काश्मीरके बारेमें तो मैं सरदारको लिख चुका हूँ। वह मिला होगा। लम्बा बयान जो जवाहरलालको भेजा है वह सरदारके लिये भी है।

---

१ निर्वासित-सम्बन्धी पत्र।

१६३

(कलकत्ता)
२६-८-'४७

चि० मणि

तुझ पर मुझे दया आती है। परन्तु दया कैसी? तू भार अुठाने योग्य है। अिसलिये अुठाती रहना और सरदारका भार कुछ हलका करना।

रामस्वामी[1] को बहुत चोट आअी यह तो तुमसे सुना। अेक पत्र अैसा था जरूर, परन्तु मैंने अुस पर विश्वास नहीं किया था। मैंने तो पत्र लिखा ही नहीं था। अब लिखूंगा।

साथके पत्र पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
नअी दिल्ली

१६४

(कलकत्ता)
१-८-'४७

चि० मणि

सब पत्र साथमें है। यथास्थान पहुंचा देना। तुझ पर इससे ज्यादा काम तो नहीं लाद रहा हूं? किसी तरह सब पत्र जल्दी पहुंचा सकता हूं। जवाहरलालवाला पत्र सरदारको पढ़वाकर जिस तरह जल्दी मिले अुस तरह भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
नअी दिल्ली

---

१ त्रावणकोरकी अेक सभामें सर सी० पी० रामस्वामी पर हमला हुआ था और अुन्हें गंभीर चोट आअी थी।

१६७

८-९-४७

चि. मणि

आज यहांसे रवाना हो रहा हूं। अिसलिअे लिखता हूं। तेरा खत तो ठीक है मगर मुझमें सार नहीं है। लिखने अिलाजके बाद दिल्ली तो आना ही चाहिये। वहां सरदार और जवाहर निश्चय करेंगे कि क्या किया जाय। मेरे रहनेकी व्यवस्था मुझे वहां करनी हो वहां करे। बिड़ला हाउसका मैं बहिष्कार नहीं करता। परन्तु आराम मिले या न मिले मुझे भंगी-निवास अच्छा लगता है। सरदारकी आबरू भी मुझे वहीं रखनेमें है। रातको वहां कोअी न आ सके अिसमें हर्ज नहीं। गाड़ी दिल्ली अेक्सप्रेस। 'ब्रजकृष्ण' से कह देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
नअी दिल्ली

१६८

(बिड़ला भवन
नअी दिल्ली)
११-९-४७

१७०

(बिड़ला भवन
नअी दिल्ली)
११-१-'४८

चि. मणि

आज सरदारके साथ बात हुअी। अिसलिये अब और नहीं। मुझे बहावलपुरके[1] लोगोंसे मिलना है। फिर बुलाअूंगा। मुझे गलतफहमी कैसे हुअी यह समझमें नहीं आता। अुसे ठीक करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
नअी दिल्ली

[1] बहावलपुर राज्यके जो पाकिस्तानमें चला गया है, सरकारी
नौ

मणिबहनका पत्र अभी भिन्न दिनोंमें तो नहीं आया। महादेवका काम पत्रोंके बिना बन्द हो गया है। अिसलिअे जल्दी भेज देना।

बाबा मजेमें होगा। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

आज बापूने डॉ. अन्सारीको तुम्हारे पते पर अेक पत्र लिखा है। वह तुम्हें पहुँचा आना। वे ११ तारीखको बम्बअीसे रवाना होनेवाले हैं अिसलिअे तो उस तारीखको तो बम्बअीमें ही होंगे।

मुख्तार सोबानीके यहाँ ठहरे होंगे। नहीं तो कहाँ ठहरे हों वहाँका पता मुख्तारके यहाँसे मिलेगा। तलाश करके पत्र पहुँचा आना।

बापूके आशीर्वाद

चि. डाह्याभाअी पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बअी-४

२

य. मं.
२६-१-३२

चि. डाह्याभाअी

मणिबहनका पत्र भी अब तो तुम्हें नियमित मिलना संभव है। अिसलिअे तुम्हारे पढ़ने या सुननेकी सामग्री बढ़ गयी। परन्तु साहित्य पढ़नेके साथ अब तुम्हारे बिस्तर छोड़नेका समय भी नजदीक आता जा रहा है न? फिर भी बिस्तर छोड़नेकी अधीरता न होनी चाहिये। यह तो जानते हो न कि बिस्तरमें भी सेवा हो सकती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बअी-४

---

१ बम्बअीके अेक मिल-मालिक

३

य. मं.
१९-११-३२

चि. डाह्याभाई

तुम्हारे स्वास्थ्यके समाचार रोज मिलते रहते हैं। औसी व्याधियां भी हमारी परीक्षाके लिये आती हैं। तुम खूब धीरजसे सहन कर रहे हो औसा भाअी करमचन्द लिखते हैं। तुमसे यही आशा रखी जा सकती है। मणिबहनकी चिन्ता न करना।

प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बई–४

४

य. मं.
२२-११-३२

चि. डाह्याभाई

देवदास तुम्हारे कुशल-समाचार देता है और कहता है कि हमारे खत तुम्हें रोज मिलें तो तुम्हें प्रसन्नता होगी। हम तो जान-बूझकर तुम्हें नहीं लिखते यद्यपि रोज आशीर्वाद तो जाते ही हैं। रोज तुम्हारा स्मरण होता है। अब खत भी लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई – ४

यरवडा जेल
२५-११-३२

चि शारदाभाभी

मि मगनराजन लिखते हैं

I have every hope and pray that Dahyabhai will pull through the remaining few days without compli-cat on His age and active habits and his naturally strc g constitution are most potent assets. He is a f vourit at our home having been with us nearly all th t n wh n he was living with his uncle. He calls K i k t Akka lik her brothers and sister and h l [illegible] lc n untor w thout any ceremony

बाद मैंने पत्र लिखा था। अुसके मतलबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा था

जो ईश्वर मस्त है वह तो बीमारीका भी सदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारता नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि. डाह्याभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
सेन्डहर्स्ट रोड
बम्बई – ४

७

म. मं.
१७–१२–४२

चि. डाह्याभाई

तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ परन्तु तुम हिम्मत नहीं हार सकते। रोगका मिटना रोगी पर आधार रखता है यह जानते होंगे। रोगी कभी निराश होता ही नहीं और अधीर भी नहीं होता। जब तक दुःख भुगतना हो तब तक भोगे परन्तु उसके साथ जूझता रहे। सभी दवाओं और सारी खुराकोंसे रामनाममें अधिक शक्ति है, यह अनुभव न किया हो तो कर देखना। जिसकी शक्ति विद्युत-शक्तिसे अधिक है। वह तुम्हें शान्ति और उत्साह देगा। तुम पत्र लिखानेका लोभ रखते दिखाई देते हो। यह लोभ छोड़ना चाहिये। तुम्हारा कर्तव्य इस समय पूरा आराम लेना है। बिछौनेमें दो वाक्य मित्रोंको या हमारे जैसे बुजुर्गोंको लिखाये जा सकते हैं, परन्तु दफ्तरके कामका विचार नहीं किया जा सकता। जितना मान लेना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण ही करेगा।

यह पत्र मैंने बायें हाथसे लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाई व. पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बई – ४

१०

पर्णकुटी
पूना,
२६-८-३३

चि॰ डाह्याभाई

तुम्हारी ओरसे कोअी भी पत्र नहीं यह आश्चर्यकी बात है। नासिक अन्तिम बार कब गये थे? वहांके जो समाचार हों वे देना। मणिबहनकी क्या खबर है? अुनके साथ कौन है? अुनका स्वास्थ्य कैसा रहता है? अुनसे कोअी मुलाकात करता है? तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? बाबाका क्या हाल है? मुझमें रोज रोज शक्ति आती जा रही है। चिन्ताका बिलकुल कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

चांदा
१४-११-३३

चि॰ डाह्याभाई

कहना तुम्हारा धर्म है। मत न भूलना। वा और मणिके पत्र तुम्हें पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बई – ४

हो तो जहां मेरा काम समझमें न आये वहां मुझे पूछना चाहिये। मेरे न आनेमें विट्ठलभाईके साथ मेरे मतभेदोंका जरा भी स्थान नहीं था। मेरे न आनेका कारण मेरी आजकी परिस्थिति ही थी मैं केवल हरिजन कार्यके लिये ही जेलसे बाहर रहा हूं। यह कार्यक्रम बनाया जा चुका था। सरकारी हुकुम जो सहन करने योग्य न हो उसे सहन करनेको मैं तैयार नहीं होता। दूसरी तरह भी मुझे वहां आनेका कोई उपयोग नहीं जान पड़ता था। मृत्यु-सम्बन्धी उत्तर क्रियाके बारेमें मेरे विचार भी मुझे अनुपस्थित बना देते। जिस प्रकार जिस दृष्टिसे देखो उसी दृष्टिसे यह दिखता कि मेरा वहां आना जरूरी नहीं था। इतना ही नहीं बल्कि अनुचित था। कुछ बातें जो तुम्हें सूझीं मैं तो होने भी न देता। तुम्हें तो इतना ही बता देना काफी होना चाहिये कि विट्ठलभाईके साथके मतभेद अब किसी तरह भी कारणभूत नहीं थे। तुम नहीं जानते होंगे कि उनका बीमारीका समाचार आने पर मैंने उन्हें तार किया था। और

११

(य मं
नवम्बर, १९३३)

चि० डाह्याभाई

तुम्हारा पत्र मिला था। परन्तु कामके कारण समय पर उत्तर नहीं दे सका। मणिबहनसे अभी तो दूर बार मिल आना ही ठीक है। जाओ तब उससे कहना कि अेक दिन भी अैसा नहीं जाता जब मैं उसका विचार न करता होऊं। परन्तु चिन्ता तो रत्तीभर नहीं करता क्योंकि उसकी सहन-शक्ति और दृढ़ता पर मेरा पूरा भरोसा है।

बापूके पास जाओ तब कहना कि मैंने पत्र लिखे बिना अेक भी मंगल नहीं छोड़ा।

काका[1]का वसीयतनामा पढ़ लिया। उसे बम्बअीमें स्वीकार करानेमें कठिनाअी तो होगी ही। परन्तु मेरी राय यह है कि जिसके बारेमें हमें कुछ भी नहीं करना है। जो जाना हो वह भले ही सुभाष बाबूके हाथमें जाय। मैं मानता हूं कि वे जो कुछ करेंगे वह सार्वजनिक उपयोगकी दृष्टिसे ही करेंगे।

दादाके समाचार देना। मैं ठीक हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई वल्लभभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बअी – ४

१ स्व० विट्ठलभाअी।

(कालीकट)
११-१-३४

चि० काकासाहब

तुम्हारा पत्र मिला। तीन पत्र लगभग अेक साथ मिले यह टेलीपैथीका नमूना कहा जा सकता है।

महादेवकी कड़ी परीक्षा हो रही है। संभव है अुनका स्वास्थ्य कुछ गिर जाय। परन्तु और बात नहीं आयेगी। जीवणजीके नाम पत्र आया था अुसके जवाबमें मैंने लम्बा संदेसा भेजा है। परन्तु जब तुम्हें लिखनेका अवसर आये तब अिस प्रकार लिखना

Whilst I need not receive Mahadev's letters, he must not think that I cannot have time to read them. The Gita portion was technical and I felt that there was no immediate need for me to give my opinion. And the fact is that I have so little regard for my own technical meaning of the verses. Where the meaning does not fit in with my interpretation as a whole, I should naturally have to examine it but speaking in general terms one meaning would be to me as good as any other and therefore I should readily accept Mahadev's considered interpretation in preference to my own which after all must have been an adoption of some single thor version He should therefore prosecute his se rches nd his work of transl tion without waiting

१ यह पत्र काकासाहबको सम्बोधन करके लिखा गया है। ... ने लिखे था जो अुस समय नासिक जेलमें थे। महादेव-... अुस समय ... थे और अुन्हें भी जीवणजी देसाईके ... पत्र आया था।

for my opinion. When it is all completed, of course I shall have ample time, God willing to go through it.

I take it that Mahadev has read B Shaw's Adventures of the Black Girl in her search for God I am sending him today Adventures of the White Girl in her search for God by Cff. Maxwell If he gets it safely he will acknowledge it in his next letter[1]

मैं बेलगांव पहुंचूंगा तो मणि और महादेवसे मिलनेका प्रयत्न जरूर करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई – ४

---

१ महादेवके पत्र मेरे नाम आते ही चाहिये जैसा जवाब तो मैं नहीं भेजता परन्तु अिससे अुन्हें यह नहीं समझना चाहिये कि अुनके पत्र पढ़नेका मेरे पास समय नहीं है। गीतावाला भाग प्रारम्भिक था। और मुझे लगा कि अुस पर मुझे राय देनेकी तत्काल जरूरत नहीं थी। असल बात तो यह है कि श्लोकोंका मैं स्वयं जो अर्थ करूं अुनके बारेमें मुझे बहुत कम आदर है। कुल मिलाकर मेरी अपनी व्याख्याके साथ जहां किसी श्लोकके अर्थका मेल न बैठे वहां जैसा कि स्वाभाविक है मैं अुस अर्थकी जांच करूंगा परन्तु आम तौर पर कहूं तो मेरे लिये तो अुसका अेक अर्थ दूसरे अर्थके बराबर ही स्वीकार्य होगा। अिसलिये मैं तो अपने अर्थकी अपेक्षा महादेवके बहुत अध्ययनपूर्ण अर्थको तुरन्त स्वीकार कर लूंगा। कारण मेरा अर्थ तो मेरा स्वीकार किया हुआ किसी अेक ही भाष्यकारका अर्थ होगा। अिसलिये महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये बिना अपना संशोधन और अनुवादका काम जारी रखना चाहिये। वह पूरा हो जायगा तब ओश्वरेच्छा होगी तो यह सब पढ़ लेनेका मुझे काफी अवकाश मिलेगा।

मैं छोड़ नहीं सकता। तुम्हारे यहां रहना तो मुझे पसन्द ही होगा। मैंने तुम्हारा घर कभी देखा ही नहीं। परन्तु मुझे तो जो कर्तव्य लगे भूमिका पालन करना चाहिये।

मैं शनिवारको वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। संभव है रवि-वारको वापस आ सकूं।

सबको आशिष।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१९

सेवाग्राम
१९-१०-'४४

चि. डाह्याभाई

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा खयाल है कि हम तलाशीकी शर्त [illegible] नहीं मान सकते। तलाशीकी शर्त पर ही आना हो तो आनेका लोभ छोड़ दिया जाय। मेरा खयाल है कि तुम लोगोंने यह शर्त न रखी हो तो हो आना और तलाशी लेना चाहें तो इनकार कर देना।

मणिबहनको ब्योरेवार समझानेवाला हूं।

यह बड़ी जल्दीमें लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१ यरवदा जेलमें अधिकारी राजनीतिक कैदियोंसे मिलने आनेवालोंकी पहले तलाशी लेना चाहते थे। मुलाकात मुल्तवी रही।

गांधीजीकी कुछ नयी पुस्तकें

अीसा — मेरी नजरमें

लेखक गांधीजी; संपा० आर० के० प्रभु

अीसाअी धर्मसे तथा बािबिलसे गांधीजीका पहला परिचय कब हुआ, बािबिलके कौनसे भागोंका अुनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, अुनकी दृष्टिमें अीसाके जीवन-कार्य और सन्देशका मूल्य, धर्म-परिवर्तनकारी प्रवृत्ति पर अुनके विचार, पश्चिमके वर्तमान अीसाअी धर्मके बारेमें अुनका मत आदि विषयोंका समावेश अिस संग्रहमें किया गया है। अन्तमें गिरि-प्रवचन का सार भी दिया गया है।

कीमत १५ डाकखर्च ११

गांवोंकी मददमें

लेखक गांधीजी; अनु० सोमेश्वर पुरोहित

अिस पुस्तिकामें दी गयी गांधीजीकी सूचनाओं पर अगर भारतके गांव और अुनके सेवक पूरा ध्यान दें तथा अिन सूचनाओंको अमलमें अुतारें, तो सारे गांव साफ-सुथरे, स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी बन सकते हैं। सबसे बड़ा जोर गांधीजीने अिस बात पर दिया है कि अगर गांवके लोग आलस्य छोड़कर आपसी सहयोगसे परिश्रम करें, तो वे अपने गांवोंको किसी बाहरी मददके बिना भी सुख और आनन्दके धाम बना सकते हैं।

कीमत ४ डाकखर्च ११

गीताका संदेश

लेखक गांधीजी; संपा० आर० के० प्रभु

अिस पुस्तिकामें गीता और अहिंसा, गीता और अुसकी व्याख्या, हिन्दू धर्ममें गीताका स्थान, गीताके कृष्ण, हिन्दू विद्यार्थी और गीताका शिक्षण तथा गीताकी केन्द्रीय शिक्षा जैसे विषयों [illegible] रूपमें स्पष्ट चर्चा की गयी है। अिसमें गीताके अमर सन्देश—

कीमत १

विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग

लेखक गांधीजी; संपा० भार० के० प्रभु

आज विश्वमें शांतिकी स्थापना करनेके लिये दुनियाके समस्त राष्ट्र और अुनके नेता प्रयत्न कर रहे हैं। अिस ध्येयकी सिद्धिका गांधीजीने अेकमात्र सच्चा और अहिंसक मार्ग यह बताया है: दुनियाके सारे राष्ट्र अेक-दूसरेका शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी नीतिको छोड़ें परस्पर प्रेम और सहिष्णुताकी भावना बढ़ायें और युद्धके संहारक शस्त्रोंका त्याग करें, तो ही स्थायी शांति कायम हो सकती है। यही अिस पुस्तकका केन्द्रीय विचार है।

कीमत ४ डाकखर्च ११

शरीर-श्रम

लेखक गांधीजी; संपा० रवीन्द्र केळेकर

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके रोटी कमानेवालोंको हलकी नजरसे देखा जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेका प्रयत्न किया। यहां अिस विषयमें गांधीजीके जो विचार पेश किये गये हैं अुनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अुसके महत्त्वका, अुसकी आवश्यकताका और समाजको अुससे होनेवाले लाभोंका पता चलता है।

कीमत डाकखर्च ११

सन्तति-नियमन

सही मार्ग और गलत मार्ग

लेखक गांधीजी संपा० भार० के० प्रभु

अिस पुस्तिकामें सन्तति-नियमनके सही अुपायों और गलत अुपायोंका विचार किया गया है। गांधीजी कृत्रिम साधनोंकी मददसे संतति-नियमन करनेके सख्त विरोधी थे। अिसका अुत्तम मार्ग वे आत्मसंयमको ही मानते थे, जो मानव जातिको अूंचा अुठानेवाला और अुसका कल्याण करनेवाला है।

कीमत डाकखर्च ११

नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद-१४